मूल्य - 20

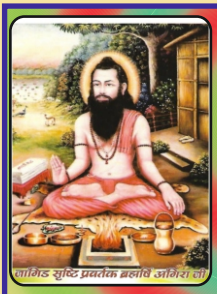

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMIN

अंगिराऽसि जंगिडः

वर्षः 119, अंकः 05, मई -2026 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2024-26 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

चार धाम यात्रा

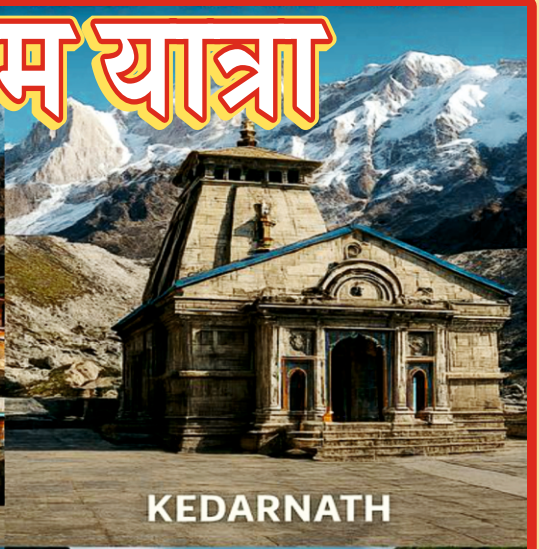

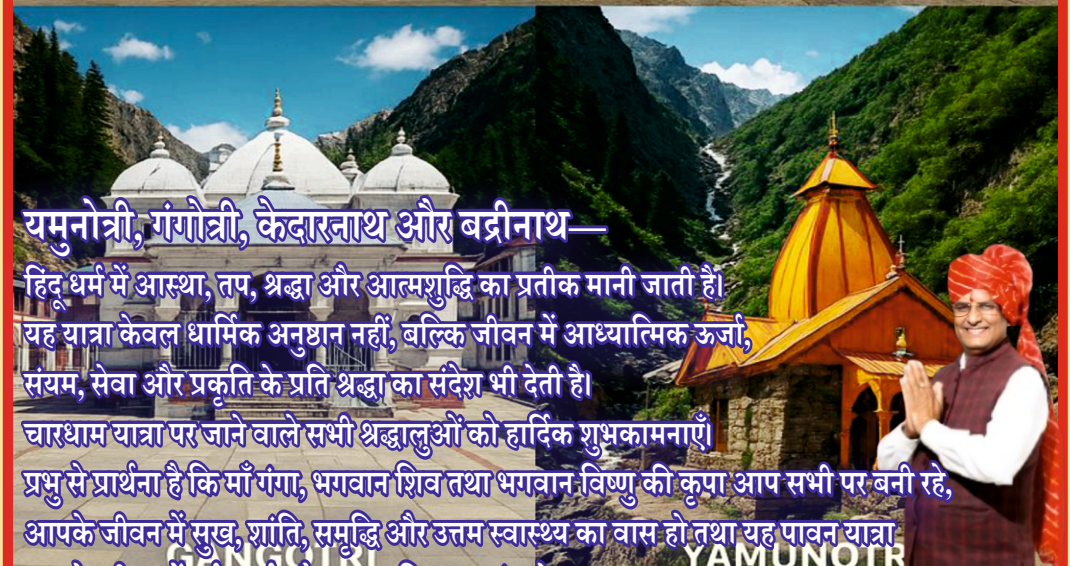

यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ—

हिंदू धर्म में आस्था, तप, श्रद्धा और आत्मशुद्धि का प्रतीक मानी जाती है।
यह यात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन में आध्यात्मिक ऊर्जा,
संयम, सेवा और प्रकृति के प्रति श्रद्धा का संदेश भी देती है।
चारधाम यात्रा पर जाने वाले सभी श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामनाएँ।
प्रभु से प्रार्थना है कि माँ गंगा, भगवान शिव तथा भगवान विष्णु की कृपा आप सभी पर बनी रहे,
आपके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य का वास हो तथा यह पावन यात्रा
आपके जीवन में नई ऊर्जा और आध्यात्मिक आनंद लेकर आए।

प्रधान- श्री रामपाल शर्मा

प्रधान- श्री रामपाल शर्मा

सम्पादक- रामभगत शर्मा

शुभलाभ
GREEN VALLEY
2&3 BHK LUXURIOUS FLAT & SHOPS

शुभलाभ
VINTAGE
VILLA
6 BHK Luxurious Villas

THE
VINTAGE
शुभलाभ
3 BHK Premium Living

शुभलाभ
HERITAGE
3 | 4 BHK Heritage Living & Penthouse

शुभलाभ
SQUARE
Showrooms | Corporate Entertainment

शुभलाभ
GROUP

AHMEDABAD

THE VINTAGE
Naroda- Dehgam Road
Opp. Shyam Valencia Bungalow
New Naroda, A'bad-382230

Nilesh Sharma 96388 00449
Anurag Sharma 83201 68811

शुभलाभ
HEIGHTS
2 | 3 BHK Premium Living

SENTOSA
ROYAL BUNGALOW
4 BHK Royal Living Homes

PALATE
RESTAURANT & BANQUET

GRAND
Neelkanth
banquet & restaurant
100-1000 Capacity Banquet

FITNESS FUEL
365 Days Open, Luxurious Gym

मन्दसौर में आयोजित प्रदेशसभा कार्यकारिणी की त्रैमासिक मीटिंग एवं जिला सभा कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह की चित्रावली

INTERIO CRAFT

MERGER OF **ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

With its existence over three and half decades,we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.

Our Management Team

Rampal Sharma

Deepak Sharma

Jagmohan Sharma

Amith Sharma

OUR STRENGTHS
- QUALITY OF WORK
- SERVICE COMMITMENT
- ON TIME COMPLETION
- PRICING

Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

Our Franchise Stores

- N R Retails, Uspolo Store, Kammanahalli, BANGALORE
- Uspolo Store, Vega City Mall, BANGALORE
- Krishna Retails, Uspolo Store, USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM-Forum, Sujana Mall, HYDERABAD
- Uspolo Kids, USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- Uspolo Denim, USPA Denim - Sarat City Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- Krishna Ventures, Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- Third Wave Coffee, Bel Road, BANGALORE
- Wrogn Store, L&T Mall, HYDERABAD
- Swish Salon, BANGALORE

OUR SERVICES

ON SITE
- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

OFF SITE
- Production of Furniture
- Metal Works

WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS

WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL

Reach us:

Corporate Office: No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

Some of our Valuable Clients

Flying Machine, U.S. Polo Assn., Aeropostale, Arrow, LP Louis Philippe, Peter England, Nautica, GAP, trueblue, Gant, Allen Solly, Van Heusen, lifestyle, max, homecentre, ZOYA, Tanishq, Taneira, Titan, Helios, fastrack, Titan eyeplus, Mia, Melorra, Centro, Birkenstock, Third Wave Coffee, Swayamvar, Shoppers Stop, Bluestone, SS Beauty, Swish, Tasva, Manyavar

''जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका'' के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित | पंजीकृत सं. एस.-27/1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाषः- 011-45516719 , 9990070023

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा ''जांगिड''	09844026161
महामंत्री-पं.सांवरमल ''जांगिड''	09414003411
सम्पादक-पं.रामभगत शर्मा ''जांगिड''	09814681741
सह सम्पादक-पं.प्रहलाद राय शर्मा ''जांगिड''	08140229679

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

(01-10-2018 से)

सदस्यता	रुपये
प्लैटिनम सदस्य	1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	51,000/-
रजत सदस्य	25,000/-
विशेष सम्पोषक	21,000/-
सम्पोषक सदस्य	11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	240/-
मासिक पत्रिका शुल्क	20/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 201/-

महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182** , **(IFSC Code: SBIN0006814)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, मुण्डका, नई दिल्ली-41) में 25000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्त्ता से अनुरोध है कि जमापर्ची की काउण्टर फाईल मय सम्पूर्ण विवरण (पाने वाले का नाम **''अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा''** अवश्य लिखें) सहित महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें। महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है। दानदाता अपनी आयकर विवरणी में दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

अरूण कुमार (अनिल जांगिड)
कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810988553

॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अनुक्रमणिका

03. मन्दसौर में आयोजित प्रदेशसभा कार्यकारिणी की त्रैमासिक मीटिंग एवं जिला सभा कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह की चित्रावली .....
07. संपादकीय...
09. प्रधान की कलम से...
11. फरीदाबाद में आयोजित त्रैमासिक मीटिंग का कार्यवृत.
18. राजस्थान प्रदेश सभा की त्रैमासिक मीटिंग काले हिरणों..
20. चेन्नई मे विश्वकर्मा भवन निर्माण के लिए भूमि पूजन...
21. शिक्षा के क्षेत्र में एक अद्वितीय आयोजन.....
24. अनुराधा जांगिड जिला हांसी की पहली,जिला खाद्य एवं.
25. जांगिड समाज के उदीयमान नेता सत्यनारायण जांगिड..
26. कभी नहीं उलझें, अंको की होड़ में....
27. भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानीजैल सिंह की 5 मई को जन्मजयंती.
29. राष्ट्र चेतना, ...गायक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जयंती पर...
31. महाराणा प्रताप : स्वाभिमान, राष्ट्रभक्ति और वीरता के..
33. उत्तराखंड की चारधाम यात्रा आस्था, संस्कृति और मोक्ष..
35. अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस : श्रम, संघर्ष और सम्मान का..
37. आयुष्मान भारत वय वंदना योजना वरिष्ठ नागरिकों के..
39. 15 मई को अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस पर , लेख.....
41. सीता नवमी के दिन माँ सीता के द्वारा स्थापित उदात्त..
43. संघर्ष..सफ़लता..का सफर:-बाड़मेर जिले के सुरेश जांगिड
45. मानेसर नगरनिगम गुड़गांव के संयुक्तआयुक्त,पुनीत जांगिड
46. सीकर की बेटी दिव्या जांगिड ने चार्टर्ड अकाउंटेन्ट...
47. IISc से पेटेंट..और विश्वस्तरीय कं0 में चयन-भूमिका शर्मा
48. निकिता जांगिड ने विज्ञान संकाय में कक्षा 12वीं मे पूरे..
49. अदिति जांगिड ने उत्तराखंड संस्कृत शिक्षा परिषद,12वीं.
50. जिलासभा सीकर ने समाज में जनजागृति के प्रयासों में...
51. चुनाव अधिसूचना -जिलाध्यक्ष पद मेरठ ..
52. महासभा के ऐक लाख रुपये के प्लैटिनम ..
58. शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रुपये के..
60. वैवाहिक विज्ञापन....
61. मन्दसौर में आयोजित प्रदेशसभा कार्यकारिणी की त्रैमासिक मीटिंग एवं जिला सभा कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह की चित्रावली.....

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)
शुभ लाभ ग्रुप
कृष्णा इंटीरियर
भारत व्हील
शर्मा एंड कंपनी
भागीरथ मोटर्स

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही है। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ है तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते है कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती है।

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्वानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें! बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे है। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है - तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6) अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

- सम्पादक

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

सम्पादकीय-------

प्रहलाद राय शर्मा (जांगिड) – सह संपादक

वैश्विक संकट के दौर में प्रधानमंत्री की मितव्ययिता की अपील और उसकी मुख्य बातें

आज पूरा विश्व अनेक प्रकार के अंतरराष्ट्रीय संकटों से घिरा हुआ है। **रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव, ऊर्जा संकट, महंगाई, आर्थिक मंदी और जलवायु परिवर्तन** जैसी समस्याओं ने वैश्विक व्यवस्था को प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों का प्रभाव भारत पर भी पड़ रहा है। **पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतें, खाद्यान्न और आवश्यक वस्तुओं की महंगाई तथा ऊर्जा संसाधनों पर बढ़ता दबाव आम जनजीवन को प्रभावित कर रहा है।** ऐसे समय में हमारे **माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से मितव्ययिता और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की अपील की है।** यह अपील केवल आर्थिक बचत का संदेश नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता की भावना को मजबूत करने का प्रयास है।

प्रधानमंत्री ने हाल ही में देश को संबोधित करते हुए कठिन अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों और आर्थिक चुनौतियों के बीच देशवासियों से अपने सम्बोधन में जो अपील की, उसकी मुख्य बातें इस प्रकार थी:-

ईंधन बचाने की अपील:- प्रधानमंत्री ने पेट्रोल और डीज़ल की खपत कम करने पर जोर दिया। उन्होंने सार्वजनिक परिवहन, कार-पूलिंग, मेट्रो, रेल, ई- वाहन और साइकिल जैसे विकल्प अपनाने का आग्रह किया।

अनावश्यक खर्चों से बचने का संदेश:- उन्होंने कहा कि वर्तमान वैश्विक संकट के समय गैर-जरूरी खरीदारी और दिखावटी खर्च कम करना देशहित में आवश्यक है।

सोना खरीदने से परहेज की अपील:- प्रधानमंत्री ने कुछ समय तक सोने की खरीद कम करने की बात कही ताकि विदेशी मुद्रा पर दबाव कम हो सके। विवाह शादियों मे सोने की जगह नकद राशि दी जा सकती है।

वर्क फ्रॉम होम को बढ़ावा:- जहां संभव हो, वहां कार्यालयों और निजी संस्थानों को **"वर्क फ्रॉम होम"** अपनाने की सलाह दी गई ताकि ईंधन की बचत और ट्रैफिक कम हो सके।

विदेश यात्राओं में संयम:- प्रधानमंत्री ने अनावश्यक विदेशी यात्राओं को टालने का आग्रह किया, जिससे विदेशी मुद्रा की बचत हो सके।

आत्मनिर्भरता और स्वदेशी पर बल:- उन्होंने देशवासियों से भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता देने और **"आत्मनिर्भर भारत"** की भावना को मजबूत करने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय एकता और धैर्य का संदेश:- प्रधानमंत्री ने कहा कि संकट के समय भारत ने हमेशा एकजुट होकर चुनौतियों का सामना किया है और इस बार भी देश सामूहिक प्रयासों से सफल होगा।

ऊर्जा और संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग पर जोर:- बिजली, पानी और अन्य संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की अपील करते हुए उन्होंने इसे **"राष्ट्र सेवा"** बताया।

जनभागीदारी को सबसे बड़ी शक्ति बताया:- उन्होंने कहा कि सरकार के साथ-साथ जनता का सहयोग ही देश को कठिन परिस्थितियों से बाहर निकाल सकता है।

भविष्य के प्रति विश्वास व्यक्त किया:- अपने संबोधन के अंत में प्रधानमंत्री ने विश्वास जताया कि भारत आर्थिक और वैश्विक चुनौतियों से मजबूत होकर उभरेगा।

प्रधानमंत्री की अपील की एक महत्वपूर्ण बात **"वोकल फॉर लोकल"** और स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा देना भी रही। उन्होंने कहा कि यदि देशवासी स्थानीय उत्पाद खरीदेंगे तो छोटे उद्योग, कुटीर उद्योग और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। इससे देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी और विदेशी निर्भरता कम होगी। वैश्विक संकट के समय आत्मनिर्भरता ही किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत बनती है।

उन्होंने कई बार कहा कि **"जल है तो कल है"** देश में बढ़ते जल संकट को देखते हुए उन्होंने नागरिकों से पानी की एक-एक बूंद बचाने की भी अपील की।

उनकी अपील में पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी छिपा हुआ है। कम ईंधन उपयोग, अधिक वृक्षारोपण, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग और प्रदूषण कम करना उनकी सोच का हिस्सा है। उनका मानना है कि यदि आज पर्यावरण की रक्षा नहीं की गई तो आने वाले समय में संकट और गहरा जाएगा।

उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे धैर्य, अनुशासन और सहयोग की भावना बनाए रखें। कोरोना महामारी के दौरान भारत ने सामूहिक सहयोग की शक्ति देखी थी। उसी प्रकार वर्तमान वैश्विक संकटों का सामना भी केवल सरकार नहीं, बल्कि पूरे समाज के सहयोग से ही संभव है।

उनकी अपील का एक महत्वपूर्ण पक्ष युवा पीढ़ी से जुड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री चाहते हैं कि युवा वर्ग संसाधन संरक्षण, बचत और आत्मनिर्भरता को अपने जीवन का हिस्सा बनाए। **मितव्ययिता का अर्थ केवल पैसे बचाना नहीं, बल्कि संतुलित और जिम्मेदार जीवन जीना है। भारतीय संस्कृति सदैव सादगी और संयम की समर्थक रही है।**

अंततः कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री की मितव्ययिता संबंधी अपील वर्तमान अंतरराष्ट्रीय संकटों के समय अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरदर्शी है। उनकी अपील की मुख्य बातें - **ऊर्जा बचत, जल संरक्षण, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग, फिजूलखर्ची पर रोक, पर्यावरण संरक्षण और आत्मनिर्भरता - केवल व्यक्तिगत जीवन को नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र को मजबूत बनाने का मार्ग दिखाती हैं।**

यदि प्रत्येक नागरिक इन बातों को अपने जीवन में अपनाएं, तो भारत न केवल वर्तमान संकटों का सफलतापूर्वक सामना करेगा, बल्कि विश्व के सामने एक सशक्त, अनुशासित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में उभरेगा।

****

प्रधान की कलम से.....

महासभा प्रधान- रामपाल शर्मा

भारत विविधताओं, संस्कारों और महान परम्पराओं का देश है। यहाँ प्रत्येक माह अपने साथ सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय चेतना का संदेश लेकर आता है। इस महीने के शुरू में दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र मे कई राज्यों मे हुए चुनावों के परिणाम घोषित किए गए, कई महापुरुषों की जयंती मनाई गई।

प्रधान,रामपाल शर्मा

मैं समस्त समाजबंधुओं को तथा राष्ट्रनिर्माण में योगदान देने वाले महापुरुषों, स्वतंत्रता सेनानियों और वीर योद्धाओं को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

1 मई माह की शुरुआत अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस से होती है। इस उपलक्ष में श्रमिकों के सम्मान में देशभर में कार्यक्रम आयोजित किए गए। राष्ट्र निर्माण में श्रमिक वर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति उनके श्रम और समर्पण का ऋणी है।

इसी माह भगवान जयंती श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाई गई। भगवान परशुराम ज्ञान, तप, धर्मरक्षा और शौर्य के प्रतीक हैं। विशेष रूप से ब्राह्मण समाज के लिए यह पर्व आत्मगौरव और सांस्कृतिक चेतना का संदेश देता है। देशभर में धार्मिक आयोजन, शोभायात्राएँ और यज्ञ-हवन सम्पन्न हुए।

इसी माह में बुद्ध पूर्णिमा का पर्व भी अत्यंत श्रद्धा के साथ मनाया गया। भगवान गौतम बुद्ध ने मानवता को सत्य, करुणा और अहिंसा का संदेश दिया। वर्तमान समय में जब विश्व अनेक तनावों और संघर्षों से गुजर रहा है, तब बुद्ध के विचार पूरी मानवता के लिए मार्गदर्शक बन सकते है।

देश ने अमर शहीदों भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू के बलिदान को स्मरण किया। इन महान क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा का अमर स्रोत है।

हमने इसी माह वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की जयंती भी मनाई। महाराणा प्रताप भारतीय स्वाभिमान, त्याग और मातृभूमि के प्रति समर्पण के अमर प्रतीक है। उनका जीवन हमें संघर्षों में भी आत्मसम्मान बनाए रखने की प्रेरणा देता है। समाज और राष्ट्र के युवाओं को उनके जीवन से राष्ट्रभक्ति और साहस का संदेश लेना चाहिए।

महान साहित्यकार और नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जयंती भी इस माह मनाई गई। गुरुदेव टैगोर ने भारतीय संस्कृति, शिक्षा और मानवता को नई दिशा दी। **"जन गण मन"** जैसे राष्ट्रगान की रचना कर उन्होंने भारत की आत्मा को शब्द दिए।

इसी माह में मातृ दिवस भी मनाया गया। भारतीय संस्कृति में माता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। माँ परिवार की शक्ति, संस्कार और प्रेम का आधार होती है। इस अवसर पर महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा पर भी समाज में चर्चा हुई।

विश्व राजनीति में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ते तनाव और संघर्ष की चर्चाएँ भी प्रमुख रहीं।

मध्य-पूर्व क्षेत्र विश्व की ऊर्जा व्यवस्था का महत्वपूर्ण केंद्र है। यदि अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध जैसी स्थिति गहराती है, तो उसका प्रभाव केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि भारत सहित पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी।

भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए बड़ी मात्रा में कच्चे तेल का आयात करता है। मध्य-पूर्व में अस्थिरता बढ़ने से कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि हो सकती है। इसका सीधा प्रभाव भारत में पेट्रोल, डीजल, गैस और परिवहन लागत पर पड़ेगा। महंगाई बढ़ने से आम जनता, किसान, व्यापारी और मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होंगे।

यदि युद्ध लंबा चलता है तो भारत के निर्यात-आयात व्यापार पर भी प्रभाव पड़ सकता है। समुद्री मार्गों में बाधा आने से व्यापारिक लागत बढ़ेगी। इससे उद्योगों और छोटे व्यापारियों पर आर्थिक दबाव बढ़ सकता है।

भारत में पहले से ही बेरोजगारी और महंगाई जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय युद्ध की स्थिति अर्थव्यवस्था को और कठिन बना सकती है। खाद्य वस्तुओं, निर्माण सामग्री और दैनिक उपयोग की वस्तुओं के दाम बढ़ने की आशंका बनी रहती है।

भविष्य की दृष्टि से देखें तो यदि विश्व में लंबे समय तक अस्थिरता रहती है, तो वैश्विक निवेश और आर्थिक विकास की गति धीमी हो सकती है। इसका असर भारत के युवाओं के रोजगार, उद्योगों की वृद्धि तथा व्यापारिक अवसरों पर पड़ेगा। हालांकि हमारा देश आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है, जिससे भविष्य में ऐसी चुनौतियों का सामना करने की क्षमता मजबूत हो सकती है।

भारत की विदेश नीति सदैव शांति, संतुलन और कूटनीति पर आधारित रही है। भारत विश्व में शांति और सहयोग का पक्षधर रहा है। हमें आशा करनी चाहिए कि विश्व के राष्ट्र युद्ध के स्थान पर संवाद और कूटनीतिक समाधान को प्राथमिकता देंगे, क्योंकि युद्ध किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं होता।

हाल ही में देश ने तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति के क्षेत्र में भी अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। डिजिटल सेवाओं का विस्तार हुआ, युवाओं को स्टार्टअप और स्वरोजगार के अवसर मिले तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान को नई गति मिली।

इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण, जल संकट और बढ़ती गर्मी जैसे विषयों पर भी समाज में जागरूकता बढ़ी। जल संरक्षण और वृक्षारोपण के लिए विभिन्न सामाजिक संगठनों और युवाओं ने अभियान चलाए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने महापुरुषों के आदर्शों को केवल स्मरण न करें, बल्कि उन्हें जीवन में अपनाएँ। भगवान परशुराम का शौर्य, महाराणा प्रताप का स्वाभिमान, बुद्ध का शांति संदेश और स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान हमें राष्ट्रहित में कार्य करने की प्रेरणा देता है। ******

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2959/2026 दिनांक 16/04/2026

*** फरीदाबाद में आयोजित त्रैमासिक मीटिंग का कार्यवृत ***

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली कार्यकारिणी की पांचवीं त्रैमासिक मीटिंग एवं प्रदेश सभा हरियाणा की नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन, हरियाणा राज्य के ऐतिहासिक एवं औद्योगिक शहर फरीदाबाद में किया गया। मीटिंग हरियाणा प्रदेश सभा के तत्वाधान में दिनांक 05 अप्रैल, 2026 रविवार को रोजिला बाई एस.के. रिसॉर्ट , सेक्टर 27, मथुरा रोड मेट्रो स्टेशन के पास, फरीदाबाद में अनेक सामाजिक निर्णयों के साथ संपन्न हुई। त्रैमासिक मीटिंग महासभा के मुख्य संरक्षक भंवर लाल कुलरिया, महासभा के पूर्व प्रधान एवं उच्च स्तरीय कमेटी के अध्यक्ष कैलाश चंद बरनेला एवं महासभा के पूर्व प्रधान रवि शंकर शर्मा के मुख्य आतिथ्य तथा महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

सर्व प्रथम महासभा प्रधान, पूर्व प्रधान एवं अनेक विशिष्ट अतिथियों तथा प्रदेश अध्यक्षों द्वारा रोजिला बाई एस.के. रिसोर्ट, फरीदाबाद के परिसर में महासभा का झण्डारोहण एवं राष्ट्रगान किया गया, तत्पश्चात समस्त अतिथियों एवं पदाधिकारियों को मंचासीन करवाने के बाद, भगवान विश्वकर्मा जी के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन तथा श्रद्धाभाव से पूजा - अर्चना एवं आरती के साथ समारोह का श्रीगणेश हुआ।

इसके बाद पिछली त्रैमासिक मीटिंग के बाद की अवधि मे देवलोक को प्राप्त हुये समाज के विभिन्न भामाशाहों, पदाधिकारियों एवं महासभा सदस्यों के लिए दो मिनट का सामूहिक मौन रखते हुए, परमपिता परमेश्वर से उनकी पुण्यात्मा को चिर शांति, मोक्ष प्रदान करने एवं अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई, तत्पश्चात मीटिंग की विधिवत शुरुआत की गई।

सबसे पहले प्रदेश अध्यक्ष हरियाणा एवं उनकी कार्यकारिणी के अनेक पदाधिकारियों द्वारा महासभा प्रधान, मुख्य संरक्षक, दोनों पूर्व प्रधान, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ट, मुख्य चुनाव अधिकारी, पी. एल. शास्त्री गुडगाँव, मूल चंद शर्मा वरिष्ठ विधायक, चन्द्र प्रकाश जांगड़ा विधायक, आदमपुर का स्वागत सम्मान करने के साथ ही समस्त मंचासीन अतिथियों एवं मिडिया प्रभारियों का माला एवं मोमेंटो के साथ सम्मान किया गया। इसके साथ ही महासभा के प्रधान एवं पूर्व प्रधानों द्वारा फरीदाबाद के जाने माने भामाशाह एवं समाज सेवी तथा जे.बी. ग्रुप के डायरेक्टर, राजेश जांगिड का माला, शाफा एवं मोमेंटो से स्वागत किया गया।

महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड ने मीटिंग की शुरुआत करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित समस्त मंचासीन मुख्य अतिथियों, समस्त प्रदेश अध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों, महासभा के प्लैटिनम सदस्यों, कोर कमेटी सदस्यों, चुनाव अधिकारियों एवं सभागार में उपस्थित कार्यकारिणी के पदाधिकारियों, उच्च स्तरीय कमेटी, अनुशासन समिति एवं मातृशक्ति एवं युवा शक्ति, मिडिया प्रभारियों, समाज के भामाशाहों एवं प्रबुद्ध समाज बन्धुओं, मातृ शक्ति, प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारियों एवं पधारे हुए सभी अतिथियों का फरीदाबाद की पावन धरा को नमन करते हुए अपनी वाणी द्वारा शब्दों के माध्यम से हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया।

तत्पश्चात महामंत्री द्वारा महासभा प्रधान की अनुमति से पिछले चार माह में महासभा द्वारा किये गये कार्यों की प्रगति रिपोर्ट सदन के समक्ष प्रस्तुत की गई, साथ ही महासभा के कोषाध्यक्ष अनिल जांगिड द्वारा भी महासभा के पिछले चार माह का आय - व्यय विवरण प्रस्तुत किया गया, जिसका सदन में उपस्थित पदाधिकारियों ने करतल ध्वनि के साथ अनुमोदन किया। तदुपरांत महासभा

महामंत्री ने कार्यकारिणी की पांचवी त्रैमासिक बैठक के निर्धारित एजेंडे पर सकारात्मक विचार विमर्श करने के लिए सदन के सामने बिन्दु वार एजेंडा प्रस्तुत किया जो इस प्रकार है :-

एजेण्डा:1- नडियाद त्रैमासिक मीटिंग दिनांक 07/12/2025 को लिए गये निर्णयों का अनुमोदन:-

महामंत्री ने बताया कि नडियाद में दिनांक 07 दिसम्बर, 2025 को कार्यकारिणी की चतुर्थ त्रैमासिक मीटिंग आयोजित की गई थी, उस मीटिंग में लिए गये निर्णयों का बिन्दुवार कार्यवृत, महासभा के पत्रांक ABJBM-2856/2025 दिनांक 22/12/2025 के तहत जारी करने के साथ ही महासभा की मासिक पत्रिका, माह दिसम्बर-2025 के पेज संख्या 13 से 16 पर प्रकाशित किया जा चुका हैं, अत: उनका पुनः वाचन न करते हुए, महासभा पत्रिका में प्रकाशित कार्यवृत को पढ़ा हुआ मानकर, महामंत्री द्वारा सदन में उपस्थित कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारीयों एवं प्रदेशाध्यक्षों तथा प्रदेश प्रभारियों से नडियाद मीटिंग में लिए गये निर्णयों का अनुमोदन करने हेतु निवेदन किया गया, जिस पर सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों द्वारा करतल ध्वनि के साथ उक्त निर्णयों का अनुमोदन किया।

एजेण्डा: 2- महासभा कोर कमेटी मीटिंग दिनांक 10/02/2026 को लिए गये निर्णयों का अनुमोदन:-

महामंत्री ने बताया कि महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पिछली मीटिंग दिनांक 07 दिसम्बर, 2025 को नडियाद में आयोजित की गई थी, उसके उपरांत महासभा कोर कमेटी की सिर्फ एक ऑन लाइन ऑडियो कांफ्रेंस मीटिंग का आयोजन किया गया, जो कि एक अत्यावश्यक मुद्दे पर निर्णय करने हेतु बुलाई गई थी। यह मीटिंग दिनांक 10/02/2026 को आयोजित की गई, जिसका कार्यवृत महासभा के पत्रांक ABJBM-224/2026 दिनांक 10/02/226 के तहत जारी किये जा चुका है। फिर भी आपकी सूचना के लिए मैं एक बार पुनः उक्त मीटिंग का कार्यवृत आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ :-

जैसा कि आप सभी को ज्ञात होगा कि महासभा के मिडिया प्रभारी, नरेश शर्मा जयपुर ने भारत के विभिन्न राज्यों में स्थापित, समाज की एक एक सामाजिक सम्पत्तियों का विस्तृत वीडियो डाक्यूमेंट्री रिकार्ड तैयार किया है तथा हमारे प्रधानजी चाहते है, कि समाज की उक्त समस्त समाजिक संपत्तियों / धरोहरों जैसे (मंदिर, धर्मशाला, छात्रावास एवं समितियां आदि) की वीडियो डाक्यूमेंट्री मय फोटो, लोकेशन, सम्पर्क नम्बर एवं विस्तृत विवरण के साथ एक न्यूनतम राशि पर क्रय की जाए और समाज हित में प्रचार - प्रसार हेतु एवं समाज बन्धुओं की जानकारी में लाने के लिए महासभा की वेबसाइट पर अपलोड कर दी जाये।

इस बाबत समाज की ऐतिहासिक सम्पत्तियों / धरोहरों का विस्तृत विवरण मय स्थान / लोकेशन की फोटो, पूर्ण डाक पता एवं वीडियो डाक्यूमेंट्री के साथ समाज हित में क्रय करने हेतु विश्वकर्मा टुडे पत्रिका के सम्पादक, नरेश कुमार शर्मा जयपुर से चर्चा की गई तो उन्होंने रुपये 3100/- प्रति स्थान के समस्त डाटा देने के लिए मांगे परन्तु उक्त प्रस्तावित दरें ज्यादा होने के कारण प्रधान जी ने स्वयं उनसे विचार विमर्श करके रूपये 2500/- प्रति स्थान के समस्त डाटा देने के लिए सहमत कर लिया।

इस पर कोर कमेटी के समस्त सदस्यों ने मोबाइल ऑडियो कॉल पर प्रधानजी के उक्त प्रस्ताव का स्वागत एवं समर्थन करते हुए सर्वसम्मति के साथ अनुमोदन करते हुए कहा कि विश्वकर्मा टुडे पत्रिका के सम्पादक नरेश शर्मा जयपुर से समाज की समस्त ऐतिहासिक सम्पत्तियों / धरोहरों जैसे (मंदिर, धर्मशाला, छात्रावास एवं समितियां आदि) का विस्तृत विवरण मय स्थान / लोकेशन की फोटो, पूर्ण डाक पता एवं वीडियो डाक्यूमेंट्री रूपये 2500/- प्रति स्थान की दर पर अविलम्ब क्रय किया जाए और समाज हित में प्रचार - प्रसार हेतु तथा समाज बन्धुओं की जानकारी में लाने के लिए महासभा की वेबसाइट पर अपलोड करने का सर्व सम्मति से निर्णय किया गया।

सदन में उपस्थित कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारीयों एवं प्रदेशाध्यक्षों तथा प्रदेश प्रभारियों से महासभा कोर कमेटी द्वारा लिए गये निर्णय का अनुमोदन करने हेतु महासभा महामंत्री द्वारा निवेदन किया गया। जिस पर सदन में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों हाथ उठाकर उक्त निर्णय का अनुमोदन किया।

एजेण्डा: 3- महासभा के विगत कार्यकाल में चुनाव कार्य में उत्कृष्ट सेवा देने वाले पदाधिकारियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान करना :-

महामंत्री ने कहा कि आप सभी को ज्ञात होगा कि महासभा कार्यकारिणी की नडियाद मीटिंग के एजेंडा बिंदु संख्या 9 के तहत यह निर्णय लिया गया था कि महासभा के विगत कार्यकाल में प्रदेश अध्यक्षों एवं महासभा प्रधान के चुनावों को महासभा संविधान का पालन करते हुए चुनाव प्रभारियों ने नियमानुसार, शांति पूर्वक एवं पारदर्शिता के साथ सम्पन्न करवाये एवं महासभा के ऐसे वरिष्ठ पदाधिकारी जिनका विगत कार्यकाल में विशेष योगदान रहा उनका महासभा द्वारा दुपट्टा, साफा एवं अभिनंदन पत्र देकर उचित सम्मान

किया जाए ताकि महासभा के पदाधिकारी गण अन्य अनुभवी सदस्य भी जागरूक और प्रोत्साहित होकर समाज सेवा की भावना से आगे आये जिससे महासभा द्वारा किए जाने वाले कार्यों में कार्यकर्ताओं की संख्या मे और अधिक बढ़ोतरी हो सके। उक्त लिए गये निर्णय के तहत निम्न पदाधिकारियों का सम्मान किया जाना प्रस्तावित है:-

क्रमांक	नाम	स्थान	पद	भूमिका	सन
1	श्री प्रवीण कुमार शर्मा	नीमच	मुख्य चुनाव अधिकारी	प्रधान चुनाव-समस्त राज्य	2023-2024
2	श्री देवमणि शर्मा	दिल्ली	मुख्य चुनाव अधिकारी	छत्तीसगढ़, गुजरात, कर्णाटक	2022
3	श्री कैलाश शर्मा यालीवाले	जयपुर	चुनाव अधिकारी	दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, एव प्रधान चुनाव	2022,23,24
4	श्री मनोहर लाल शर्मा	जयपुर	चुनाव अधिकारी	दिल्ली, हरियाणा प्रदेश चुनाव	2022
5	श्री यशपाल एस जागिड	मेरठ	चुनाव अधिकारी	उत्तराखड	2022
6	श्री मक्खन लाल जागिड	नागपुर	चुनाव अधिकारी	छत्तीसगढ़	2022
7	श्री देवी प्रसाद जागिड	नागपुर	चुनाव अधिकारी	छत्तीसगढ़	2022
8	श्री शिव कुमार शर्मा	मदसौर	चुनाव अधिकारी	गुजरात, मध्यप्रदेश,	2022
9	श्री विद्यासागर जागिड	गुरुग्राम	चुनाव अधिकारी	कर्णाटक-तमिलनाडु-उत्तरप्रदेश	2022
10	श्री बसत कुमार जागिड	ब्यावर	चुनाव अधिकारी	हरियाणा, प्रधान चुनाव	2022
11	श्री ब्रह्मदेव शर्मा	ब्यावर	चुनाव अधिकारी	पजाब, दिल्ली	2022
12	श्री नरेश चद शर्मा	बैंगलुरु	चुनाव अधिकारी	गोवा	2022
13	श्री. रवि जागिड	बैंगलुरु	चुनाव अधिकारी	गोवा	2022
14	श्री मुकेश शर्मा	बैंगलुरु	चुनाव अधिकारी	तेलगाना	2022

15	श्री शेर सिह जागिड	गुरुग्राम	चुनाव अधिकारी	तेलगाना	2022
16	श्री ईश्वर सिह शर्मा	गुरुग्राम	चुनाव अधिकारी	तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश	2022
17	श्री राजेंद्र कुमार शर्मा	जयपुर	चुनाव अधिकारी	मध्यप्रदेश,	2023
18	श्री बजरंग लाल शर्मा	दुर्ग	चुनाव अधिकारी	महाराष्ट्र	2023
19	श्री धर्मचंद शर्मा	जगदलपुर	चुनाव अधिकारी	महाराष्ट्र	2023
20	श्री सुरेश शर्मा	नीमच	चुनाव अधिकारी	राजस्थान	2023
21	श्री राकेश शर्मा	नीमच	चुनाव अधिकारी	राजस्थान	2023
22	श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स	दिल्ली	चुनाव अधिकारी	प्रधान चुनाव	2024
23	श्री राधेश्याम माँडण	सीकर	चुनाव अधिकारी	प्रधान चुनाव	2024
24	श्री सावरमल जागिड	सीकर	नोडल अधिकारी-महामंत्री	प्रधान चुनाव एवं समस्त प्रदेश अध्यक्ष चुनाव	2022 – 24

महामंत्री ने उक्त विषय पर त्रैमासिक मीटिंग में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों को अवगत कराया कि उक्त वर्णित 24 चुनाव प्रभारियों का जिनका विगत कार्यकाल में उतकृष्ट योगदान रहा उनका महासभा द्वारा माला, दुपट्टा, साफा एवं अभिनंदन पत्र देकर उचित सम्मान कर किया जाए, जिस पर सदन में उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने उक्त प्रस्ताव का स्वागत करते हुए पुरजोर समर्थन किया। तथा महासभा प्रधान जी के आदेशनुसार उसी समय सदन में उस्थित पदाधिकारियों को जिनमें मुख्य रूप से प्रवीण कुमार शर्मा, राकेश शर्मा, सुरेश शर्मा नीमच, देवमणी शर्मा दिल्ली, सुरेद्र वत्स दिल्ली, कैलाश शर्मा सालीवाले जयपुर, राधेश्याम माँडन सीकर, विद्या सागर जांगिड गुडगाँव, ब्रह्मदेव शर्मा ब्यावर तथा सांवर मल जांगिड महामंत्री महासभा को मंच पर आमंत्रित करके महासभा प्रधान द्वारा माला, पट्टा पहनाकर एवं अभिनंदन पत्र देकर सम्मान किया गया

एजेण्डा: 4 - महासभा में पिछले चार माह के दौरान बनने वाले के प्लैटिनम सदस्यों को प्रमाण पत्र एवं महासभा का PTM मेम्बर कार्ड देकर सम्मान करने बाबत चर्चा:-

महामंत्री ने उक्त एजेंडा बिंदु के सम्बन्ध में बताया कि महासभा प्रधान के आदेशानुसार एवं सीकर त्रैमासिक मीटिंग में लिए गये निर्णयानुसार, महासभा के विगत कार्यकाल से महासभा का एक लाख रूपये का प्लैटिनम सदस्य बनकर महासभा को विशेष आर्थिक सहयोग देने वाले पदाधिकारियों / सदस्यों का महासभा द्वारा साफा, माला एवं अभिनंदन पत्र तथा महासभा का PTM मेम्बर

कार्ड देकर मीटिंग के दौरान सम्मान किया जाता है ताकि महासभा के अन्य पदाधिकारी / सदस्य भी महासभा की उच्चतम सदस्य अर्थात प्लैटिनम सदस्य बनने के लिए जागरूक एवं प्रोत्साहित हो सकें और महासभा में प्लैटिनम सदस्यों की संख्या को और अधिक बढ़ाया जा सकें। आज की मीटिंग में पिछले चार माह में बने निम्न 13 प्लैटिनम सदस्यों को सम्मानित किया जाना प्रस्तावित है।

1. **PTM-175 श्री प्रहलादराय जांगिड - सीकर - सह सम्पादक महासभा**
2. **PTM-176 श्री भोलाराम शर्मा - रायपुर, - प्रदेश अध्यक्ष छतीसगढ़**
3. **PTM-177 श्री रमेश शर्मा रायपुर - अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ छतीसगढ़**
4. **PTM-178 श्री सुरेन्द्र शर्मा अहमदाबाद – गुजरात, संरक्षक महासभा**
5. **PTM-179 श्री निलेश जांगिड – अहमदाबाद - अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ गुजरात**
6. **PTM-180 श्री अनुराग निलेश शर्मा - अहमदाबाद**
7. **PTM-181 श्री ओम प्रकाश जांगिड - वापी, वलसाड – उपप्रधान महासभा**
8. **PTM-182 श्री शिवपाल शर्मा - बेटमा इन्दोर - उपप्रधान महासभा**
9. **PTM-183 श्री उमेदराम जांगिड - जायल (नागौर), हाल निवास - वापी (वलसाड)**
10. **PTM-184 श्री द्वारका प्रसाद शर्मा - वापी, वलसाड - पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गुजरात**
11. **PTM-185 श्री अरुणकुमार जांगिड - आया नगर दिल्ली - कोषाध्यक्ष महासभा**
12. **PTM-186 श्री सुरेश जांगिड टाइगर - दिल्ली - पूर्व अध्यक्ष विश्वकर्मा एजुकेशन ट्रस्ट**
13. **PTM-187 श्री श्रीराम जांगिड - बाजवा-बडोदा (गुजरात) - संरक्षक महासभा**

मीटिंग में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने आज की मीटिंग में सम्मान किये जाने वाले उक्त 13 प्लैटिनम सदस्यों को अग्रिम बधाई देते हुए महासभा प्रधान जी के उक्त प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करते हुए स्वागत किया।

परन्तु उक्त प्लैटिनम सदस्यों को फरीदाबाद मीटिंग में विशेष रूप से आमंत्रित करने के बावजूद भी मीटिंग में समयाभाव के कारण महासभा द्वारा उनको अभिनंदन पत्र तथा महासभा का PTM मेम्बर कार्ड देकर सम्मान नही किया जा सका, जिसका मुझे बहुत खेद है। सम्बन्धित प्रदेश अध्यक्षों को उक्त प्लैटिनम सदस्यों के अभिनंदन पत्र एवं कार्ड देकर निर्देशित किया गया है कि प्रदेश सभा त्रैमासिक मीटिंग में PTM सदस्यों को बुलाकर अभिनंदन पत्र एवं महासभा का PTM मेम्बर कार्ड देकर उचित सम्मान किया जाये।

एजेंडा: 5 - महासभा के पिछले वित्तीय लेखों का ऑडिट करवाने बाबत चर्चा:-

उक्त एजेंडा बिंदु पर महामंत्री ने बताया कि पिछले काफी समय से महासभा के कई सदस्यों द्वारा बार - बार यह मुद्दा उठाया जाता रहा है कि महासभा द्वारा खर्च की जाने वाली राशि की उचित ऑडिट नही होती है। इस पर संज्ञान लेते हुए महासभा प्रधान ने यह निर्णय लिया है कि महासभा के पिछले तीन साल के सम्पूर्ण वित्तीय लेखों की मान्यता प्राप्त चार्टेड अकाउंटेंट से ऑडिट करवायी जाय। इसके लिए **मैसर्स एस.जी.ए.ए. एंड कंपनी, रघु मार्ग, नई दिल्ली के पार्टनर, अभिषेक अग्रवाल, (C.A.) चार्टर्ड अकाउंटेंट को अधिकृत किया गया है।** इसके साथ ही महासभा दिल्ली एवं अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर के लेखा-जोखा एवं कर संबंधी कार्य करने वाली पूर्व फर्म संजय विक्रम एंड कंपनी, निर्माण विहार, नई दिल्ली को हटा दिया गया है।

मीटिंग में उपस्थित समस्त पदाधिकारियों ने वित्तीय लेखों की पारदर्शिता एवं सदस्यों की संतुष्टि के लिए प्रधान जी द्वारा लिए गये उक्त निर्णय का तालियों की गड़गड़ाहट के साथ पुरजोर समर्थन करते हुए स्वागत किया एवं प्रधान जी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद भी दिया।

महासभा के अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ट अध्यक्ष, अमरा राम जांगिड, ने अपने उद्बोधन में राजस्थान प्रवासी फाउंडेशन के बारे में विस्तार से बताया और कहा कि हमारे उद्योगपतियों को आगे आकर दुबई एवं गल्फ में इंडस्ट्री या अपने उत्पादों की प्रदर्शनी लगानी चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज की राजनीतिक भागीदारी के लिए राज्य सभा में हमारे समाज की एक सीट के लिए महासभा द्वारा प्रधान मंत्री जी से विशेष निवेदन भी करना चाहिए।

महासभा के पूर्व प्रधान रवि शंकर जांगिड जयपुर ने भी हरियाणा प्रदेश कार्यकारिणी को शुभकामनाएं देते हुए प्रदेश सभा का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा समाज को इसी तरह संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए समाज में एकता बनाये रखते हुए महासभा को सहयोग करना चाहिए तथा जितना भी सम्भव हो सके समाज उत्थान एवं विकास के लिए आर्थिक सहयोग करते रहना चाहिए।

हरियाणा सरकार मे पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ विधायक, मूल चंद शर्मा ने समारोह में आने वाले सभी अतिथियों का स्वागत एवं आभार करने के बाद अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसा सामाजिक सम्मेलन कभी कभार ही देखने को मिलता है। उन्होंने कहा कि मैंने जांगिड समाज को कभी भी लड़ते झगड़ते नही देखा साथ ही यह भी कहा कि आने वाली पीढ़ियों को सही दिशा एवं मार्ग दर्शन देने के साथ ही शिक्षा को जरूर बढ़ावा देवें तथा शिक्षा पर भरोसा करें। उन्होंने कहा कि जो समाज अपने संस्कारों को भूल जाता है वह समाज पतन की ओर चला जाता है इसलिए संस्कारों को संभालकर रखना चाहिये। इसके साथ ही उन्होंने फरीदाबाद में सामाजिक भवन बनाने के लिए जमीन का आवंटन करवाने हेतु पूरा सहयोग करने का भी आश्वासन दिया।

आदमपुर से विधायक, चन्द्र प्रकाश जांगिड ने समारोह में पधारे हुए सभी समाज बन्धुओं का स्वागत एवं आभार करने के उपरांत मूल चंद शर्मा पूर्व मंत्री हरियाणा सरका से पुरजोर निवेदन किया कि वह समाजहित के लिए भवन बनाने हेतु भूमि आवंटन करवाने मे पूर्ण सहयोग करें। इसके साथ ही हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष का निर्विरोध निर्वाचन करने पर समस्त समाज बन्धुओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि राजनीति में प्रबल भागीदारी से ही भविष्य में समाज उत्थान सम्भव है। महिला शक्ति एवं युवा शक्ति को आगे आकर सकारात्मक सोच के साथ समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों / प्रबुद्ध जनों एवं भामाशाहों के सानिध्य में निरंतर कार्य करते रहना चाहिए।

महासभा के मुख्य संरक्षक भंवर लाल कुलरिया ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सभी समाज बन्धुओं को संगठित होकर साथ चलते हुए महासभा के मार्ग दर्शन में समाज उत्थान के लिए आगे बढना चाहिए। साथ ही महिलाओं एवं युवाओं से भी शिक्षा के साथ-साथ राजनीति में भी आगे बढने की अपील के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में अव्वल आने वाली लडकियों को बधाई एवं शुभ कामनाएं देते हुए कहा कि हमारा समाज शांति प्रिय होने से ही प्रशंसनीय है।

राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम पंवार ने हरियाणा प्रदेश की नवगठित कार्यकारिणी को बधाई एवं अति सुंदर आतिथ्य के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि महासभा त्रैमासिक मीटिंग में लिए गये निर्णयों के आधार पर ही समय समय पर समाज की दशा एवं दिशा तय होती है। उन्होंने समाज में व्याप्त बहुत सी सामाजिक कुरूतियों पर चर्चा करने के साथ ही भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में स्थान प्राप्त करने वाली उतरप्रदेश से समाज की एक बेटी का उदाहरण देते हुए, समाज के भामाशाहों से निवेदन करते हुए शिक्षा के मामले में समाज के बच्चों को और अधिक साधन एवं सुविधाएं प्रदान करने हेतु सार्थक कदम उठाने पर बल दिया ताकि हमारी भावी पीढ़ी प्रशासनिक सेवा की परीक्षाओं में और अधिक तैयारी करके विजेताओं का परचम लहराते हुए आगे बढ़ सके। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही प्रगति एवं उन्नति का मार्ग है जिससे सभी कुरुतियाँ अपने आप समाप्त हो जाती हैं।

महासभा के राष्ट्रीय प्रधान रामपाल शर्मा ने भगवान श्री विश्वकर्मा जी के जयकारे के साथ अपने उद्बोधन की शुरुआत की। सर्व प्रथम समस्त मंचासीन अतिथियों एवं सभागार में उपस्थित समाज बन्धुओं, मातृ शक्ति और युवा शक्ति का हार्दिक स्वागत करते हुए हरियाणा प्रदेश के समस्त समाज बन्धुओं को प्रदेश अध्यक्ष का निर्विरोध चुनाव सम्पन्न करवाने में पूर्ण सहयोग करने के लिए कोटि-कोटि आभार ज्ञापित किया। महासभा प्रधान ने प्रदेश अध्यक्ष हरियाणा एवं उनकी समस्त कार्यकारिणी को बधाई देते हुए उनके यशस्वी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की। साथ ही गुडगाँव के समाज बन्धुओं को भी हरियाणा सरकार से राजीव चौक के पास बहुमूल्य जमीन का आवंटन करवाने के लिए बधाई प्रेषित की।

उन्होंने ने समाज की समस्त माता - बहनों से अपील करते हुए कहा कि प्रत्येक बच्चे की माता ही उसकी प्रथम गुरु होती है अत: बच्चों पर पूर्ण निगरानी रखते हुए जितना भी सम्भव हो सके, बच्चों को मोबाइल से दूर रखते हुए उन्हे मानव सेवा एवं अच्छे संस्कार के साथ अच्छी शिक्षा ग्रहण करने के गुण विकसित करने चाहिये। उन्होंने पहाड़ गंज मंदिर के अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी को भी आगाह करते हुए कहा कि जब तक रेलवे प्रशासन से मंदिर भवन का अधिग्रहण करने के सम्बन्ध में कोई पत्र नही आये तब तक उनको कोई भी अग्रिम कार्यवाही नही करनी चाहिए।

उन्होंने ने मध्यप्रदेश महिला प्रकोष्ट की अध्यक्ष, माया शर्मा की प्रशंसा करते हुए अन्य प्रदेश की महिला अध्यक्षों को भी उनका अनुसरण करने की सलाह दी। दिल्ली के पदाधिकारियों को मुंडका भवन को किराये पर देने के लिए अपने परिचित मित्रों के जरिये महासभा को सहयोग करने का निवेदन किया। साथ ही संगठन को मजबूत करने के लिए महासभा के पदाधिकारियों को सकारत्मक सोच के साथ पूर्ण निष्ठां एवं रूचि के साथ महासभा द्वारा निर्धारित लक्ष्यों का कड़ाई से पालन करते हुए सदस्य बनाने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने महासभा सदस्यता मिशन डेढ़ लाख के लिये ब्रह्मदेव शर्मा ब्यावर को सह प्रभारी नियुक्त करने के साथ ही महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की अगली त्रैमासिक मीटिंग 5 जुलाई 2026 को बेंगुलुरु में आयोजित करने की भी घोषणा की।

महामंत्री सांवरमल जागिड ने राजनीतिक व्यस्तता के बावजूद, अपने शानदार संबोधन से मार्गदर्शन एवं आशीर्वचन देने पर, मुख्य अतिथियों आदमपुर विधायक चन्द्रप्रकाश जांगडा, वल्लभगढ विधायक एवम पूर्व मंत्री मूलचंद शर्मा तथा फरीदाबाद के जे. बी. जे.ग्रुप के एम.डी. एवं भामाशाह राजेश जांगिड का महासभा त्रैमासिक मीटिंग एवं प्रादेशिक सभा के शपथ ग्रहण समारोह में पधारने पर कोटिशः आभार व्यक्त किया। देश के विभिन्न राज्यों से पधारे हुए विशिष्ट अतिथियों एवं इस त्रैमासिक बैठक की शोभा को चार चांद लगाने वालों में विशेष रूप से महासभा के पूर्व प्रधान कैलाशचंद बरनेला, रविशंकर शर्मा जयपुर, अंतर्राष्ट्रीय प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अमरा राम जांगिड जोधपुर, महासभा के मुख्य संरक्षक सम्माननीय भंवरलाल कुलरिया, प्रसिद्ध उद्योगपति पी.एल.शास्त्री गुडगाँव, प्रवीण शर्मा मुख्य चुनाव अधिकारी, लीलूराम जांगिड चेयरमैन सिरोमणी सभा, अनिलकुमार जांगिड कोषाध्यक्ष महासभा, आधात्मिक प्रकोष्ठ अध्यक्ष सत्यपाल वत्स, जांगिड रत्न शंकरलाल लदोया सीकर, रामजीलाल जांगिड प्रभारी सदस्यता मिशन डेढ़ लाख, भोला राम शर्मा प्रदेशाध्यक्ष छतीसगढ़, घनश्याम शर्मा प्रदेशाध्यक्ष राजस्थान, प्रभु दयाल बरनेला प्रदेशाध्यक्ष मध्य प्रदेश, बाबूलाल शर्मा प्रदेश अध्यक्ष कर्नाटक, नरेन्द्र शर्मा प्रदेश अध्यक्ष उतराखंड, धर्म पाल शर्मा प्रदेश अध्यक्ष दिल्ली, राजेंद्रकुमार शर्मा प्रदेश अध्यक्ष गुजरात, जगदीश खंडेलवाल कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष दिल्ली, अशोक शर्मा प्रदेश अध्यक्ष उत्तरप्रदेश, पंजाब प्रदेश अध्यक्ष सीताराम बरवाड़िया , सतीश जांगिड पूर्व प्रदेश अध्यक्ष छतीसगढ़, मदन लाल जांगिड प्रदेश प्रभारी दिल्ली, मुकेश शर्मा प्रदेश प्रभारी उत्तरप्रदेश, संतलाल जांगिड वरिष्ठ उपप्रधान, ओम प्रकाश शर्मा दिल्ली, द्वारका प्रसाद शर्मा वापी, ऋषि प्रकाश जांगिड कार्यालय प्रभारी महासभा, सुरेन्द्र वत्स दिल्ली क़ानूनी सलाहकार, जांगिड ब्राह्मण पत्रिका के सह सम्पादक प्रहलादराय शर्मा, उच्च स्तरीय समिति के सदस्य पुखराज जांगिड जोधपुर रहे। महामन्त्री ने कहा कि पुखराज जांगिड के मार्गदर्शन में जोधपुर से पधारे 10 सदस्यीय दल के पदाधिकारी एवं मेरे गृह जिले सीकर से 25 पदाधिकारियों का विशाल ग्रुप लाने के लिए राधेश्याम माँडण, जिलाध्यक्ष बनवारी लाल खंडेलसर का बहुत - बहुत अभार एवम धन्यवाद। साथ ही हरियाणा के हिसार, नारनौल, गुडगाँव, सिरसा तथा फरीदाबाद के समस्त समाज बंधुओं, मातृ शक्ति, युवा शक्ति के भी आभारी हैं जिन्होंने उपस्थित होकर आयोजन को न केवल भव्यता और गरिमा प्रदान की अपितु इसे ऐतिहासिक भी बनाया। समाज के मिडिया प्रभारी, हरीराम जांगिड जयपुर, नरेश शर्मा, राजेश जांगिड बेंगलुरु, धीरज जांगिड रेवाड़ी तथा स्थानीय मीडिया बधुओं का भी धन्यवाद व आभार व्यक्त किया जिन्होंने समारोह को अच्छे से कवर करते हुए प्रचारित व प्रसारित कर बेमिसाल सहयोग किया। महामंत्री देश के कोने - कोने से आए महासभा के समस्त पदाधिकारियों, भामाशाहों, प्लेटिनम सदस्यों, महासभा की समस्त कमेटियों के सदस्यों एवं बड़ी संख्या में उपस्थित मातृ शक्ति, युवा शक्ति एवं सभा कक्ष में उपस्थित आदरणीय प्रबुद्ध समाज बंधुओं का समारोह को सफल बनाने के लिए दिल की असीम गहराइयों से धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया।

अंत मे महामंत्री ने हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद किन्जा, प्रदेश मंत्री टेक चंद जांगिड, कार्यकारी अध्यक्ष जीतेन्द्र नम्बरदार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्येन्द्र जांगिड, पीताम्बर कुमार, राजेंद्र कुमार एवं उनकी पूरी टीम, जिला सभा फरीदाबाद के अध्यक्ष चरणपाल जांगिड एवं उनकी टीम तथा प्रदेश के समस्त उत्साही कार्यकर्ताओं के समर्पण एवं सेवा भाव के लिये ह्रदय से अभार व्यक्त करते हुये स्वादिष्ट भोजन प्रसादी तथा ठहरने की उत्तम व्यवस्था के लिये सभी का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

पहाड़ गंज विश्वकर्मा मन्दिर के अध्यक्ष गंगादीन जांगिड, महासचिव देश राज जांगिड एवं कोषाध्यक्ष रामकिशन जांगिड द्वारा महासभा पदाधिकारियों को मन्दिर में ठहराने, चाय-नाश्ता एवं भोजन व्यवस्था तथा मन्दिर से मीटिंग स्थल तक लाने - ले जाने की सुंदर व्यवस्था के साथ साथ ज्र कदम पर भरपूर सहयोग और समर्थन देने की अनूठी मिशाल कायम करने लिए महामंत्री ने महासभा दिल्ली की ओर से उनका ह्रदय से कोटि-कोटि आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होने भगवान श्री विश्वकर्मा से समाज के सामाजिक उत्थान एवं विकास तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगल कामना के साथ ही प्रधानजी की आज्ञा से त्रैमासिक मीटिंग के समापन की घोषणा करते हुये एक बार पुन: सभी मेहमानों और प्रदेश सभा हरियाणा का हार्दिक आभार और कृतज्ञता सहित, विपुल धन्यवाद दिया।

महासभा की त्रैमासिक मीटिंग का मंच संचालन, महासभा के मुख्य चुनाव अधिकारी, प्रवीण शर्मा नीमच एवं राजस्थान के प्रदेश मंत्री, कैलाशचंद सालीवाले ने बहुत ही कुशलतापूर्वक और बेहतरीन तरीके से किया। महामंत्री ने कहा कि त्रैमासिक मीटिंग एजेंडे के सभी प्रस्तावों पर समुचित निर्णय करवाने में आप दोनो ने मेरा सक्रिय साथ दिया एवं समारोह की गरिमा एवं क्रमबद्धता को बनाए रखा जिसके लिये मैं महासभा की ओर से आपका कोटि- कोटि आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

प्रतिलिपि :-समस्त प्रदेशाध्यक्षों, प्रदेश प्रभारियों एवं महासभा पदाधिकारीगणों को सूचनार्थ।

सांवरमल जांगिड महामंत्री – महासभा

राजस्थान प्रदेश सभा की त्रैमासिक मीटिंग काले हिरणों के लिए प्रसिद्ध चुरू जिले के ताल छापर कस्बे मे आयोजित की गई

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, प्रदेश सभा-राजस्थान की त्रैमासिक मीटिंग चुरू जिले की सुजानगढ़ तहसील के **"ताल छापर"** कस्बे में रविवार दिनांक 12 अप्रैल 2026 को आयोजित की गयी, ताल छापर क़स्बा काले हिरणों के विश्व प्रसिद्ध अभयारण्य के तौर पर जाना जाता है। चुरू जिला अध्यक्ष नीरज रोलीवाल के आग्रह पर यह मीटिंग ताल छापर में रखी गयी । इसी कार्यक्रम के साथ चुरू जिले के राजनैतिक प्रकोष्ठ का शपथ ग्रहण और सामाजिक सम्मेलन का भी कार्यक्रम रखा गया था।

मीटिंग की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथियों में विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री रामगोपाल सुथार, महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड, महासभा के राजनैतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष राकेश जांगिड - तारानगर, चुरू जिले के भाजपा अध्यक्ष बसंतकुमार जांगिड, श्री विश्वकर्मा भवन - छापर के अध्यक्ष रामरतन धामू और कार्यक्रम के संयोजक गोपाल चन्द्र मायल-छापर उपस्थित रहे।

ध्वजारोहण एवं भगवान श्री विश्वकर्मा की पूजा के पश्चात कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। चुरू जिला अध्यक्ष नीरज रोलीवाल की तरफ से सभी सम्माननीय अतिथियों का स्वागत किया गया। यह कार्यक्रम चुरू जिला सभा की तरफ से प्रायोजित था, इसलिए पहले सामाजिक सम्मेलन प्रारंभ किया गया, जिसमें आये हुए अतिथियों ने सभा को संबोधित करते हुए सामाजिक संगठन सुदृढ़ करने, महिलाओं और युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने, शिक्षा के साथ स्वरोजगार को बढ़ावा देने, समाज में राजनैतिक भागीदारी बढ़ाने के लिए समुचित प्रयास करने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी बात रखी। सभी वक्ताओं ने ताल छापर के समाज बंधुओं को इस भव्य कार्यक्रम के लिए बधाई दी। इस अवसर पर चुरू जिले के राजनैतिक प्रकोष्ठ के सदस्यों को शपथ भी दिलवाई गयी।

इस कार्यक्रम के पश्चात प्रदेश सभा की त्रैमासिक मीटिंग शुरू हुई। महासभा के महामंत्री सांवरमल जांगिड का मुख्य अतिथि के तौर पर सम्मान किया गया। प्रदेश के विभिन्न जिलों से पधारे जिला अध्यक्षों और प्रदेश कार्यकारिणी के प्रमुख पदाधिकारियों को मंचासीन करवाया गया । प्रदेश महामंत्री कैलाश शर्मा सालीवाले ने सर्वप्रथम मीटिंग का एजेंडा बताया । एजेंडे के प्रथम बिंदु के अनुसार पूर्व की मीटिंग की कार्यवाही का पठन और अनुमोदन किया गया। उन्होंने प्रदेश के पूर्व कोषाध्यक्ष रमेश कुमार शर्मा के असामयिक निधन पर श्रद्धांजलि व्यक्त की।

प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार ने प्रदेश सभा के भावी कार्यक्रमों पर विस्तार से बताया। उन्होंने पूर्व में जयपुर के बिरला ऑडिटोरियम में आयोजित किए गए **"युवा प्रेरणा सम्मेलन"** जैसा प्रदेश स्तर पर दुबारा एक सामाजिक सम्मेलन करने का विचार समाज के सामने रखा जिसमें प्रदेश कार्यकारिणी के अलावा अन्य सामाजिक संस्थाओं और समाज बंधुओं को सम्मिलित करके समाज सुधार के मुद्दों पर विस्तृत चर्चा किए जाना, समाज के विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने जैसे कार्यक्रम करने की योजना बताई। उन्होंने सभी जिला अध्यक्षों से आह्वान किया कि सभी अपने जिलों में शिक्षा को बढ़ावा देने और समाज कल्याण के कार्य करें।

प्रदेश कोषाध्यक्ष मुकेश कुमार शर्मा ने पिछली तिमाही मीटिंग के बाद का वित्तीय लेखा जोखा प्रस्तुत कर उसे सदन से अनुमोदित करवाया।

इसके पश्चात विभिन्न जिला अध्यक्षों ने अपने जिलों में किए जा रहे सामाजिक विकास के कार्यों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। जिसमें अजमेर से रामप्रसाद जांगिड, बारां से राजेंद्र कुमार, बीकानेर से भंवर लाल, बूंदी से रमेशकुमार, हनुमानगढ़ से चंपालाल, जयपुर से मुकेशकुमार, जैसलमेर से सिद्धार्थ कुमार, जालौर से जबराराम, कोटा से रितेश कुमार, फलौदी से जयकृष्ण, सीकर से बनवारीलाल, श्री गंगानगर से परमेश्वर लाल और चुरू से नीरज कुमार थे। इस दौरान कार्यक्रम को कवरेज कर रहे समाज के पत्रकार नरेशकुमार-विश्वकर्मा टुडे और हरी राम जांगिड- दीप विश्वकर्मा का भी सम्मान किया गया

प्रदेश महामंत्री कैलाश शर्मा सालीवाले ने महासभा महामंत्री, सांवरमल जांगिड से विभिन्न अध्यक्षों के चुनाव शुल्क में नकद राशि के बजाय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा ही जमा करवाने पर ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली असुविधाओं के बारे पुनः विचार करने की मांग की।

महासभा महामंत्री ने जिला अध्यक्षों की शिकायत पर, तहसील स्तर तक रियायत देने पर विचार करने का आश्वाशन दिया। उन्होंने सभी जिलों में धन संग्रह के लिए महासभा की ही रसीद बुक काम में लेने और सभी को महासभा में समय सीमा के अंदर अपनी संस्था का पंजीयन करवाने का आह्वान किया। उन्होंने सभी जिला अध्यक्षों को शीघ्र ही अपनी संस्थाओं के बैंक खाते की जानकारी महासभा को देने की भी अपील की।

कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रदेश महामंत्री कैलाश शर्मा सालीवाले ने किया। सभी ने कार्यक्रम के संयोजक चुरू जिला अध्यक्ष नीरजकुमार रोलीवाल और ताल छापर के अध्यक्ष रामरतन धामूं और गोपाल मायल को इस भव्य और सफल आयोजन की बधाई दी। अंत में सभी ने स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया।

जयपुर से घनश्याम शर्मा पंवार प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में लगभग 50 प्रदेश सभा के सदस्यों ने जयपुर लौटते हुए रास्ते में सालासर बालाजी का दर्शन लाभ भी लिया, जिससे इस सफ़र का आनंद कई गुना हो गया।

कैलाश शर्मा सालीवाले- प्रदेश महामंत्री

चेन्नई मे विश्वकर्मा भवन निर्माण के लिए भूमि पूजन समारोह श्रद्धाभाव और वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ

श्री जांगिड ब्राह्मण समाज चेन्नई के तत्वाधान मे दिनांक 8 मई, 2026 शुक्रवार को विश्वकर्मा मंदिर के पीछे पड़ी जमीन पर प्रस्तावित विश्वकर्मा भवन निर्माण के लिए भूमि पूजन समारोह वैदिक मंत्रोंच्चार एवं भक्तिमय वातावरण के बीच विधि विधान के साथ संपन्न हुआ। प्रस्तावित भवन समाज हित, धार्मिक गतिविधियों एवं सामाजिक आयोजनों का प्रमुख केंद्र बनेगा।

कार्यक्रम का नेतृत्व समाज के अध्यक्ष श्यामलाल लदोया ने किया। भूमि पूजन का कार्य पंडित भूपेन्द्र श्रीमाली एवं उनके सहयोगी पंडित सुरेन्द्र गौड़ द्वारा संपन्न कराया गया।

इस कार्यक्रम के दौरान भवन के निर्माण कार्य से जुड़े इंजीनियर ललित शर्मा भी उपस्थित रहे। समाज के कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश आसलिया, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, प्रदेश सभा तमिलनाडु के प्रदेश मंत्री कन्हैयालाल मांकड़, तमिलनाडु प्रदेश सभा के कोषाध्यक्ष हीरालाल जोहड़, उपाध्यक्ष हमीरा राम कुलरिया, राजेन्द्र मांकड़, राजेश छड़िया, वागेश छड़िया, रूपाराम धामु और पुजारी ऋषि महाराज उपस्थित रहे।

कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश आसलिया

****

"सपने वो नहीं जो हम सोते हुए देखते हैं, सपने वो हैं जो हमें सोने नहीं देते।

""जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

""इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।

""आपका खुश रहना ही आपके दुश्मनों के लिए सबसे बड़ी सजा है।

""मुश्किल वक्त हमारे लिए एक आईना होता है, जो हमारी छिपी हुई क्षमताओं को बाहर लाता है।"

****

शिक्षा के क्षेत्र में एक अद्वितीय आयोजन.....

प्रथम अखिल राजस्थान विश्वकर्मा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

परिकल्पना :

डॉ. दिनेश कुमार जांगिड 'सारंग'

हमारे समाज में शिक्षा के क्षेत्र में और बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये तैयार करने की दिशा में **"प्रथम अखिल राजस्थान विश्वकर्मा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता"** के रूप में एक अद्भुत, अभूतपूर्व एवं क्रांतिकारी प्रयोग हुआ है। पूरे राज्य में एक साथ 70 परीक्षा केन्द्रों पर, लगभग 13000 बच्चों के नामांकन के साथ आयोजित यह प्रतियोगिता, शिक्षा के क्षेत्र में अब तक का सबसे बड़ा एवं व्यवस्थित, अनुशासित आयोजन रहा।

परिकल्पना:-

इस पूरे आयोजन की परिकल्पना एवं पटकथा के सूत्रधार, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, डॉ. दिनेश जांगिड 'सारंग' रहे। यह परीक्षा इनके ही दिमाग की उपज है। इन्होंने युवाओं के संगठन, विश्वकर्मा युवा मित्र मंडल के बैनर तले इस परीक्षा का आयोजन पूरे राज्य में करने का बीड़ा उठाया। इसके लिये इन्होंने अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, प्रदेश सभा जयपुर के अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार से संपर्क कर, प्रदेश सभा को भी इस मुहिम से जुड़ने का आग्रह किया ताकि महासभा की जानकारी बच्चे बच्चे तक पहुंचे। इसी क्रम में श्री विश्वकर्मा जांगिड कर्मचारी समिति एवं अन्य संस्थाओं से भी सहयोग लेकर इस कार्य को सबके साथ मिलकर अंजाम देने का निश्चय किया गया।

परीक्षा के उद्देश्य:-

1. हमारे समाज के बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये शुरूआती स्तर पर ही तैयार करना।
2. समाज के होनहार बच्चों को पुरस्कार राशि देकर प्रोत्साहित करना।
3. परीक्षा के माध्यम से होनहार बच्चों की छंटनी कर, उन्हें आगे बढ़ने में मार्गदर्शन देने के लिये एक टीम तैयार करना और बच्चों को उनके करियर के लिये स्नात्तक स्तर तक मार्गदर्शन देते रहना।
4. छोटे बच्चों को प्रतियोगी परीक्षा में बैठना, ओएमआर शीट से परिचय करवाना, उनको प्रतियोगिता जैसा ही माहोल देना, बच्चों को यूपीएसी एवं आरपीएससी के पैटर्न की जानकारी देना।
5. समाज की भावी पीढी को इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से समाज एवं सामाजिक संस्थाओं से जोड़ना।

प्रक्रिया:-

परीक्षा के लिये विश्वकर्मा युवा मित्र मंडल की वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन की व्यवस्था की गई। परीक्षा में आवेदन के लिये दो ग्रुप बनाये गये। एक जुनियर ग्रुप जिसमें कक्षा 6 से लेकर 8 तक के बच्चे रहे, वही दूसरा सीनियर ग्रुप, जिसमें कक्षा 9 से 12 तक के बच्चों को शामिल किया गया। दोनों ग्रुप के लिये अलग अलग प्रश्न-पत्र तैयार किये गये। बच्चों को पहले से ही पाठ्यक्रम बता दिया गया। यह पाठ्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए बनाया गया। साथ ही इसमें समाज और सामाजिक संस्थाओं से संबंधित प्रश्न भी पूछे गये, जिससे बच्चे अपने समाज के बारे में भी जान सके।

क्रियान्वयन एवं टीम:-

इस प्रतियोगिता के लिये फरवरी महिने से ही आवेदन का कार्य शुरू हो गया। प्रदेश स्तर पर, घनश्याम जी शर्मा ने सभी जिलाध्यक्षों से बात कर, जिला स्तर पर जिला प्रभारी निर्धारित किये। कई जिला प्रभारी डॉ. दिनेश सारंग द्वारा चयनित किये गये। इस तरह पूरे राज्य के सभी 41 जिलों में लगभग 120 जिला प्रभारी बनाये गये, जिन्होंने अपने - अपने जिलों में बच्चों को इस प्रतियोगिता में

भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया। कई जिला प्रभारी ती दिन रात घूम घूम कर, घर घर जाकर बच्चों से आवेदन करवाते रहे। इस तरह सभी के प्रयास से ऑफलाइन एवं ऑनलाइन मिलाकर लगभग 13000 नामांकन प्राप्त हुए। इस दौरान संयोजक डॉ. दिनेश 'सारंग' के साथ कई बार जिला प्रभारियों की ऑनलाइन बैठकें आयोजित गई और परीक्षा के लिये अधिक से अधिक नामांकन तथा अनुशासन के साथ, इसे आयोजित करने की रणनीति बनाई गयी। सभी प्रभारी अपने अपने हिसाब से इस प्रतियोगिता में मजबूती से जुड़े रहे।

दिनांक 12 अप्रैल 2026 को नामांकन की अंतिम तिथि थी। इसके बाद परीक्षा का दूसरा चरण आरंभ हुआ । जिला प्रभारियों एवं समाज बंधुओं के आग्रह पर, अब प्रत्येक जिला मुख्यालय के बजाय पूरे राज्य में कुल 70 परीक्षा केन्द्र बनाये गये। डीडवाना-कुचामन एवं चित्तौड़गढ जिले में कुल 7-7 परीक्षा केन्द्र बने। बाड़मेर में 5, जैसलमेर, नागौर और जालौर में 3-3, सीकर, दौसा, सवाई माधोपुर, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, कोटपुतली-बहरोड़ में 2-2 परीक्षा केन्द्र एवं इनके अलावा प्रत्येक जिला मुख्यालय पर एक एक परीक्षा केन्द्र रखा गया। चित्तौड़ जिला नामांकन में प्रथम रहा वही डीडवाना-कुचामन दूसरे स्थान पर रहा।

बच्चों के लिए प्रोत्साहन:-

इस परीक्षा में दोनों समूहों, सीनियर एवं जुनियर में राज्य में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को नकद 31000, 21000 एवं 11000 रु. के पुरस्कार दिये जायेंगे। संभाग स्तर एवं केन्द्र स्तर पर भी 5100 से 1100 रु. तक के विभिन्न पुरस्कार घोषित किये गये हैं। साथ ही जो टॉपर बच्चे हैं उनकी मेंटरशिप का भी एक विस्तृत प्लान तैयार किया जा रहा है।

मुख्य आयोजन:-

परीक्षा 3 मई 2026 को प्रातः11.00 बजे आयोजित की गई। इसके लिये व्यापक स्तर पर तैयारी की गई थी। 70 परीक्षा केन्द्रों के 70 परीक्षा प्रभारी बनाये गये। साथ ही प्रत्येक केन्द्र पर एक एक केन्द्राधीक्षक भी नियुक्त किया गया। 70 परीक्षा केन्द्रों पर जयपुर से 70 ऑबजर्वर भी भेजे गये जो परीक्षा का प्रश्न-पत्र सीलबंद करके जयपुर से लेकर गये और शांतिपूर्ण, पारदर्शिता एवं निष्पक्षता के साथ परीक्षा करवा कर वापस ओएमआर शीट जयपुर लेकर आये। यह ध्यान रखा गया कि किसी भी जिले में उस जिले का कोई भी व्यक्ति ऑबजर्वर बनके नहीं जाये। कई परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षा केन्द्र सहप्रभारी एवं सह-केन्द्राधीक्षक भी मनोनीत किये गये। इस प्रकार लगभग 300 व्यक्तियों की एक अनुभवी टीम तैयार की गयी जिसके जिम्मे इस परीक्षा का आयोजन होना था।

परीक्षा को बदला सामाजिक उत्सव में:-

कई केन्द्रों पर भामाशाहों के सहयोग से स्थानीय संगठनों ने परीक्षा केन्द्र पर उत्सव का माहौल बना दिया। प्रत्येक केन्द्र पर बच्चों का भव्य स्वागत हुआ। कई जगह बैंड-बाजे तक मंगवाये गये। कई केंद्रों पर बच्चों और अभिभावकों के लिये खाना बनाया गया तो कही उनके लिये नाश्ते की व्यवस्था की गई। कई स्थानों पर जिलाध्यक्षों ने बच्चों के लिये बहुत ही शानदार व्यवस्था की। समाज ने इस परीक्षा को एक उत्सव का रूप दे दिया।

इस परीक्षा में बच्चों एवं अभिभावकों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। भीषण गर्मी, नीट की परीक्षा एवं अन्य कई कारणों के उपरांत भी लगभग 75 प्रतिशत उपस्थिति रही, जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। परीक्षा केन्द्रों पर समाज एवं देश-प्रदेश की जानी मानी हस्तियों ने शिरकत की। खैरथल तिजारा केन्द्र पर अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के प्रधान, रामपाल शर्मा पूरे समय अन्य समाजों के प्रतिष्ठित नेताओं के साथ उपस्थित रहे ,वहीं जयपुर केन्द्र पर प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार ने अपनी उपस्थिति दी। श्रीडूंगरगढ परीक्षा केन्द्र पर विश्वकर्मा कौशल विकास बोर्ड के चैयरमेन, रामगोपाल सुधार ने अपना समय दिया। पोकरण केन्द्र पर

वर्तमान विधायक प्रताप पुरी महाराज, न केवल उपस्थित रहे बल्कि उन्होंने बच्चों को भी संबोधित किया। जैसलमेर केन्द्र पर विधायक छोटूसिंह उपस्थित रहे। अधिकतर जिलों के जिलाध्यक्ष एवं अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी भी अपने अपने परीक्षा केन्द्रों पर उपस्थित रहे।

परीक्षा समापन:-

परीक्षा 3 मई को ठीक 11.00 बजे आरंभ हुई और दोपहर 12.40 बजे पर इसका समापन हुआ। तुरंत विडियोग्राफी करते हुए ओएमआर शीट वापस बंद की गई। विडियोग्राफी करते हुए ही प्रश्न-पत्रों के सीलबंद लिफाफे खोले गये थे। पूरे राज्य में बिना किसी भी चूक या पक्षपात के पारदर्शी तरीके से परीक्षा संपन्न हुई। सभी ऑबजर्वर, ओएमआर शीट को सीलबंद करके दोपहर 1.00 बजे बाद वापस जयपुर के लिये निकल पड़े।

आयोजन से सीख एवं फायदे:-

यह पूरा आयोजन योजनाबद्ध तरीके से इस प्रकार आयोजित हुआ, मानो कोई बहुत बड़ा सरकारी आयोजन हो। पूरे आयोजन के लिये जो योजना बनाई गई वो काबिले तारीफ है। वेबसाइट पर एडमिन पोर्टल बनाकर हरेक जिला प्रभारी को उसका एक्सेस दिया गया जिससे वो अपने जिले की प्रगति देख सके। इस आयोजन से बच्चों को तो फायदा हुआ ही, समाज को भी कई चीजें सीखने को मिली, जैसे -

1. अगर सभी लोग नि:स्वार्थ भाव से किसी कार्य में लगे तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है।
2. पूरे राज्य में, प्रत्येक जिले में एक ऐसी टीम तैयार हो गयी है, जो भविष्य में समाज हित के लिए एकदम प्रतिबद्ध, सावचेत, सदैव सक्रिय रहने वाली एवं जुझारू टीम के रूप मे काम करेगी।
3. समाज के सभी लोगों की यह एकमत राय है कि भले ही अन्य कोई आयोजन हो या ना हो, लेकिन इस तरह के शैक्षिक आयोजन हर वर्ष होने चाहिये। इसी भावना के अनुरूप इस प्रतियोगिता की भी प्रत्येक वर्ष जारी रखने का संकल्प लिया गया है।
4. समाज में कई लोग ऐसे हैं जिनकी समाज के लिये कार्य करने की बड़ी इच्छा है। उन्हें पद की नहीं बल्कि एक उचित प्लेटफार्म की जरूरत है। इस आयोजन से कई ऐसे हीरे निकल कर सामने आये है जो धरातल पर काम करने में माहिर है। अब किसी भी शैक्षणिक आयोजन में यह टीम और भी बेहतर प्रदर्शन कर सकेगी।

श्री कॉन्वेंट एजुकेशन, पिपराली रोड़, सीकर

5. इस परीक्षा से यह भी समझ में आया कि एक ग्रुप कक्षा 12 के बाद भी होना चाहिये ताकि जो विद्यार्थी अभी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं, उन्हें भी फायदा हो।
6. अनेक अभिभावकों का यह सुझाव आया कि इस परीक्षा की तैयारी के लिये एक पुस्तक भी तैयार होनी चाहिये और परीक्षा में तर्क-शक्ति, गणित, अंग्रेजी के आधारभूत प्रश्न भी जोड़े जाने चाहिये।

41 जिले, 70 परीक्षा केन्द्र, 70 परीक्षा केन्द्र प्रभारी, 70 केन्द्राधीक्षक, 70 ऑबजर्वर, 120 से अधिक जिला प्रभारी, सैंकडों तहसील प्रभारी, ग्राम प्रभारी, जिला सभाओं के जिलाध्यक्ष, विभिन्न संस्थाएं, 13000 से अधिक परीक्षार्थी, उनके हजारों अभिभावक एवं हजारों कार्यकर्ताओं सहित 100000 से अधिक समाज बंधुओं को समायोजित करने वाला यह कार्यक्रम अपने आप में अनूठा एवं बेहद सफल आयोजन है जिसने बच्चों के बेहतर भविष्य की एक शानदार नीव रखी है।

विशेष लेख: आर. एस. चोयल

अनुराधा जांगिड जिला हांसी की पहली, जिला खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति नियंत्रक बनी

अनुराधा जांगिड, समाज सेवी तथा मृदु स्वभाव के द्योतक रहे पंडित इन्द्रजीत शर्मा की दोहती है। पं इंद्रजीत शर्मा पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल और पूर्व राज्यसभा सांसद पंडित रामजी लाल के सहयोगी रहे है। अनुराधा जांगिड हिसार की रहने वाली है। अनुराधा जांगिड ने खाद्य एवं आपूर्ति विभाग में एक इन्स्पेक्टर के पद से अपनी नौकरी की शुरूआत की और अब इस पद तक पहुंच कर समाज का नाम गौरवान्वित किया है। अनुराधा जांगिड को हाल ही मे घोषित ने जिले हांसी का जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक का पदभार सौंपा गया है। उन्होंने 14 मई को जिला हांसी में जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक के पद पर अपना पद भार ग्रहण कर एक नए अध्याय की शुरूआत की है।

उल्लेखनीय है कि हरियाणा के मुख्य मंत्री नायब सिंह सैनी ने 17 दिसम्बर, 2025 को हांसी को हरियाणा प्रदेश का 23 वां जिला बनाने की घोषणा की थी और अब हांसी को नया जिला बनाया गया है। इस नए जिले में अधिकारियों की नियुक्ति शुरू हो गई है और अनुराधा जांगिड भी इसी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अनुराधा जांगिड ने कहा कि नियुक्ति के साथ ही हांसी जिले के राशन कार्ड धारकों, डिपो धारकों और खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की सभी समस्याओं के निपटारे के लिए अब कर्मचारियों और आमजन को, हिसार जिला मुख्यालय जाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। पहले लोगों को अपनी छोटी-छोटी समस्याओं के समाधान के लिए भी, यहां से 30 किलोमीटर दूर हिसार जाना पड़ता था लेकिन अब हरियाणा सरकार ने लोगों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, हांसी को हरियाणा का 23 वां नया जिला बनाया है। अब यहां के लोगों को विभाग से संबंधित सभी मूलभूत सुविधाएं उनके घर द्वार पर ही उपलब्ध हो सकेगीं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि हरियाणा सरकार ने मुझ पर जो भरोसा और विश्वास व्यक्त किया है उस विश्वास पर मैं हमेशा ही खरा उतरने के साथ-साथ लोगों की सभी समस्याओं का सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए हल करने का हर संभव प्रयास करुंगी। जहां तक संभव हो सकेगा, हर लाभार्थी को, सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं का लाभ उपलब्ध करवाया जाएगा।

अनुराधा जांगिड, माँ श्रीमती संतोष जांगिड और पिता रामप्रसाद जांगिड के घर पैदा हुई। उनके जीवन साथी, हंसमुख और सौम्य प्रवृत्ति के धनी तथा विनम्रता की प्रतिमूर्ति डॉ. सुभाष शर्मा हरियाणा पशुपालन विभाग में उपनिदेशक के पद पर कार्यरत रहे हैं। आजकल वह आर पी एस वैटनरी कालेज महेंद्रगढ़ में सर्जरी विभाग में एक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। उनको भारतीय गुणवत्ता परिषद के विशेषज्ञ भी मनोनीत किए गए है।

अनुराधा जांगिड ने कहा कि मैं यह बात बड़े ही आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति और गर्व के साथ नि:संदेह रुप से कह सकती हूँ कि जो भी अधिकारी अपने दायित्व का निर्वहन ईमानदारी और सच्चाई के साथ करता है, उसके भविष्य के लिए, रास्ते अपने आप ही खुल जाते हैं और मुझे सबसे बड़ी खुशी इस बात की है कि एक नए बनाए गए जिले का दायित्व मुझे सौंपा गया है। मुझे इस जिले में काम करने के लिए बहुत ही बेहतरीन अवसर मिलेगा और उसमें चाहे समाज के गरीब लोगों के राशन से सम्बंधित समस्या हो या किसानों की फसल खरीदने या जिला में चल रहे पट्रोल और डीजल पम्पों पर आ रही समस्याओं का निवारण करना हो, इन सभी समस्याओं का सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर ही निवारण किया जाएगा।

हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व सदस्य तेलूराम जांगिड ने जांगिड समाज के एक प्रतिनिधि मंडल के साथ अनुराधा जांगिड से मुलाकात की और भावभीना स्वागत करते हुए कहा कि यह जांगिड समाज के लिए एक गर्व की बात है। इसके साथ ही हांसी के विधायक विनोद भयाना और विभिन्न समाजों के प्रतिनिधि और हांसी शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने भी अनुराधा जांगिड के कार्यालय पहुंच कर, बधाई और शुभकामनाएं देने के साथ ही, मंगलमय कार्यकाल के लिए भी बधाई दी है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने अनुराधा जांगिड की हरियाणा के नए बनाए गए जिला हांसी में जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक के पद पर, पहली नियुक्ति होने पर बधाई देते हुए कहा है कि हरियाणा सरकार ने उनकी कार्यशैली और कार्यक्षमता पर विश्वास रखते हुए ही उन्हें यह दायित्व सौंपा है। मुझे विश्वास है कि उस दायित्व पर वह हमेशा ही खरा उतरते हुए लोगों के जीवन में आने वाली सभी मूलभूत समस्याओं का सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए, तत्परता से समाधान करते हुए उनको न्याय दिलाने का हर सम्भव प्रयास करेंगी। मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

डॉ सुभाष जांगिड, हिसार

जांगिड समाज के उदीयमान नेता सत्यनारायण जांगिड उर्फ अजय जांगड़ा धारुहेड़ा नगर पालिका के अध्यक्ष बने

आज के समय मे किसी भी समाज की प्रगति और विकास का मूल मंत्र, उस समाज का मजबूत संगठन, आपसी एकता तथा राजनैतिक चेतना होती है। हरियाणा में जांगिड समाज में राजनैतिक चेतना आई है। हरियाणा में 60 साल में जांगिड समाज से चन्द्र प्रकाश जांगिड पहली बार आदमपुर से विधायक बनें। समाज का एक और होनहार युवा सतबीर भाणा, पुण्डरी विधानसभा चुनाव क्षेत्र चुनाव लड़ा लेकिन सिर्फ 2000 मतों से अपने प्रतिद्वंद्वी से चुनाव हार गए। यह कठोर सत्य है कि राजनैतिक हिस्सेदारी ही किसी समाज को मजबूत स्तम्भ दे सकती है। जिला रेवाड़ी में जांगिड समाज से पहली बार रेवाड़ी नगर परिषद मे दो सदस्य जीते और धारुहेड़ा से एक सदस्य जीतकर धारूहेड़ा पहली बार नगर पालिका का अध्यक्ष बना है।

हरियाणा में नगर निगमों और नगर परिषद तथा नगर पालिका के 10 मई को घोषित किए गए। हरियाणा निकाय के चुनाव में धारूहेड़ा नगर पालिका में, सत्यनारायण जांगिड उर्फ अजय जांगड़ा पुत्र देवी दयाल ने भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा और अपने प्रतिद्वंद्वी पर 6200 वोटो से जीत दर्ज की है। इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए , महासभा के मीडिया प्रभारी धीरज शर्मा ने बताया कि रेवाड़ी जिले के धारूहेड़ा कस्बे में जनरल सीट पर रिकॉर्ड मतों से विजयी होने का अब तक का एक नया रिकार्ड बना है। इसके पिछले चुनाव मे सत्यनारायण जांगिड उर्फ अजय जांगड़ा ने पहली बार धारूहेड़ा नगर पालिका में पार्षद का चुनाव लड़ा था और जीत करके नगर पालिका धारूहेड़ा के उपाध्यक्ष बने थे। पेशे से अजय जांगड़ा एक सफल ट्रांसपोर्टर के रूप में अपना व्यवसाय कर रहे हैं और साथ ही वह समाज सेवा की प्रतिमूर्ति होने के साथ ही सामाजिक कार्यों में भी हमेशा बढ़-चढ़कर भाग लेते रहे हैं।

हरियाणा प्रदेश सभा के अध्यक्ष हनुमान जांगिड और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष खुशी राम जांगिड तथा फरीदाबाद जिला सभा के पदाधिकारियों ने भी सत्यनारायण जांगिड के धारूहेड़ा नगर पालिका अध्यक्ष पद पर विजयी होने के बाद धारूहेड़ा उनके निवास स्थान पर व्यक्तिगत रूप से जाकर बधाई देते हुए कहा कि उनकी जनसेवा की भावना और समाज के प्रति समर्पण भावना ने ही उनको जनसेवा करने का सुअवसर प्रदान किया है। उन्हे आशा है कि वह लोगों की आशा और आकांक्षाओं पर खरा उतरते हुए भविष्य में राजनीति के क्षेत्र में समाज का नाम गौरवान्वित करेंगे। हम सभी आपके मंगलमय और उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते हैं।

इस बार रेवाड़ी नगर परिषद के चुनाव में भी जांगिड समाज के दो नगर पार्षद भी विजयी हुए हैं। जिनमें वार्ड नंबर 13 से निर्दलीय प्रत्याशी के तौर पर श्रीमती संतोष जांगिड धर्मपत्नी दीपक जांगिड, नयागांव दौलतपुर निवासी ने 124 वोटो से जीत दर्ज करके समाज एवं अपने परिवार का नाम रोशन किया है। श्रीमती संतोष जांगिड एक सफल ग्रहणी के साथ-साथ अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व भी करती हुई दिखाई देगी। इसी कड़ी में वार्ड न. 22 से भाजपा नगर पार्षद के तौर पर एडवोकेट देविंदर कुमार शर्मा सपुत्र सुरेश कुमार शर्मा ने 225 वोटो से जीत दर्ज की है। देवेन्द्र शर्मा वर्तमान में जिला न्यायालय रेवाड़ी में एक अधिवक्ता के तौर पर अपनी प्रैक्टिस कर रहे हैं। इससे पहले देवेंद्र कुमार शर्मा अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण प्रादेशिक सभा हरियाणा के सह-सचिव भी रहे हैं। भविष्य में भी जांगिड समाज की अधिक से अधिक राजनैतिक हिस्सेदारी-भागीदारी रहे और इसके लिए समाज को भी आगे आने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त पंचकूला के वार्ड नं 19 रामगढ़ से भी पहली बार मनीषा जांगिड ने भी नगर निगम पंचकूला की पार्षद बन कर एक इतिहास रच दिया है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, धारुहेड़ा नगर पालिका के अध्यक्ष को बधाई देते हुए कहा कि संयोगवश मैं 25 अप्रैल को गुरुग्राम गया था तब मुझे गुरुग्राम जिला अध्यक्ष सत्यनारायण शर्मा ने बताया था कि धारुहेड़ा से समाज के एक होनहार और समाज के प्रति समर्पित और उदीयमान युवा नेता और समाज सेवक अजय जांगड़ा नगर पालिका अध्यक्ष का चुनाव लड़ रहें हैं। मैंने तो वास्तव में उसी दिन उनको जीत की अग्रिम बधाई दे दी थी। मुझे बताया गया कि उनके समर्थन में प्रचार करने के लिए हरियाणा के मुख्य मंत्री नायब सिंह सैनी भी आए थे।

मैं आशा करता हूँ कि अजय जांगड़ा ने धारुहेड़ा के लोगों से जो भी वायदा किया है उसको पूरा करने के साथ ही वह जांगिड समाज का नाम भी गौरवान्वित करेंगे। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

प्रधान रामपाल शर्मा ने रेवाड़ी नगर के पार्षद, एडवोकेट देवेन्द्र कुमार शर्मा, संतोष जांगिड और मनीषा जांगिड को बधाई देते हुए कहा कि संपूर्ण जांगिड समाज आपके मंगलमय भविष्य की मनस्कामना करता है। मैं आशा करता हूँ कि आपका यह राजनैतिक सफर, एक इतिहास बनकर स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो और हमेशा ही समाज और अपने वार्ड की उन्नति और प्रगति के लिए सभी के सहयोग से स्तुत्य कार्य करें। मैं आपके सफलतम कार्यकाल की बधाई देता हूँ। **महासभा के मीडिया प्रभारी, धीरज शर्मा, रेवाड़ी**

कभी नहीं उलझें, अंको की होड़ में

जीवन में अंको का बहुत अधिक महत्व है। आम तौर पर सबकुछ या पूरा जीवन ही अंको के इर्द गिर्द घूमता है। नौ माह का गर्भकाल.... सोलह संस्कार, उम्र.... वेतन..., बंगले..., गाडियां..., शेयर बाजार..., वोट, सब कुछ तो अंको के मोहताज है। तो क्या अंक जीवन से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। कभी नही.... कतई नही....., बिल्कुल भी नहीं....। ये सवाल इस वक्त जरूरी इसलिए है क्योकि इन दिनों परीक्षाओं और नतीजों के जानलेवा दिन चल रहे हैं। बच्चे तनाव में है। उनसे ज्यादा तनाव में है, उनके माता पिता। दोनो का तनाव में होना लाजमी भी है। कम अंको का सबसे सीधा और तुरन्त असर ये होता है कि बच्चों का किसी भी बड़े और नामी संस्थान में प्रवेश के नाकाबिल मान लिया जाता है। जबकि मेरीट लिस्ट में आगे आने वाले बच्चे से थोड़े से नंबरों से पिछड़ जाने का मतलब ये कतई नहीं होता है कि कम नंबर वाला बच्चा वाकई प्रतिभाशाली नहीं है। कभी स्कूल, कॉलेज में अपने साथियों से थोड़े से अंकों से पिछड़े बच्चे जब दुनिया की असल दौड़ में उतरते हैं तो बाजी उनके हाथ भी लगती है। इस तथ्य को साबित करने के लिए हजारों किस्से हैं।

आज कल धारणा यह हो चली है कि अच्छा संस्थान नही, तो अच्छी नौकरी नहीं और अच्छी नौकरी नहीं तो अच्छा पैकेज नही। यानी बात खत्म होती है, अच्छे यानी भारी भरकम पैकेज पर। लेकिन क्या यह भारी भरकम पैकेज वाकई इतने भारी होते है कि उसके सामने जिन्दगी बहुत हल्की साबित हो जाये और बच्चे थोड़े से कम अंको की वजह से इतने अवसाद में आ जाए कि मौत को ही गले लगा लें। हर साल नतीजों के दिनों में बच्चो की खुदखुशी की खबरें सैलाब की तरह आती है अंदर तक झकझोरती भी है लेकिन भावनाओं का जो सैलाब आता है, वो झाग ही साबित होता है। वैसे भी आज के दौर के बच्चे आमतौर पर पढ़ाई को खूब तवज्जो देते हैं। वो जानते हैं कि कम अंको का उन्हे क्या खामियाजा उठाना पड़ सकता है। वे अपनी तरफ से हर संभव कोशिश भी करते हैं कि परिवार वालों की अपेक्षाओं पर खरा उतर सकें। फिर भी कई बार कम अंक भारी साबित होते हैं। दूसरी तरफ ये बात भी सही है कि कोई भी माता पिता बच्चों से ज्यादा उनके अंको को प्यार नही करते। हर हाल में माता पिता की पहली और अंतिम प्राथमिकता बच्चे ही होते हैं।

तो फिर वह गलती कहाँ हो रही है, जहाँ बेवक्त जिन्दगी की डोर कट जाती है। क्या हम ये तय कर सकते हैं कि इस साल एक भी बच्चा कमतर नतीजों की वजह से खुदकुशी नही करेगा। हर माता पिता तथा परिवार जन को यह बात समझनी होगी और मुहिम चलानी होगी कि कोई भी बच्चा असमय काल के गाल में न समाए। खुदकुशी की दुखद खबरों का हम इंतजार नहीं करेंगे बल्कि उन्हें रोकने की पूरी कोशिश करेंगे। यह सौ फीसदी मुमकिन हैं। इसके लिए सिर्फ हमें वातावरण बनाना होगा। माता पिता को भी बच्चों से निरंतर संवाद बनाये रखकर उन्हें बताना होगा कि उनके लिए बच्चे के चेहरे की खुशी ज्यादा जरूरी है, अंक नहीं। बच्चों के लिए भौतिक सुख सुविधाएं जुटाने के साथ साथ माता पिता को बच्चों के मन में क्या चल रहा है, ये भी समझना होगा और उसके समाधान भी करने होंगे। बच्चों को भी चाहिए कि जब परीक्षा होती है और नतीजों का समय होता है तब बजाय घबराने और अवसाद में आने के अपने मन की बात अपने माता पिता, भाई - बहिन या उस व्यक्ति को बताए जिससे आप अपने मन की बात कह सकते हैं।

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। मेहनत से किए गए प्रयास आत्म संतुष्टि देते हैं। एक रास्ता जब बंद होता है तो अनेक रास्ते खुल जाते हैं। इसलिये हमें जीवन को अवसर देना चाहिए। हम केवल अपना सर्वश्रेष्ठ और नतीजों की चिंता छोड़ दें और अंको की होड़ में कभी नहीं उलझे। सपनों के पीछे न भागे वरन सपनों को बुनने में विश्वास रखें। कभी भी अंको से व्यक्तित्व का आंकलन नहीं होता, क्योंकि अंक हमारी जिन्दगी का फैसला नहीं कर सकते। जरूरी नहीं कि हर बार हम श्रेष्ठ हो। अपनी दृष्टि को सदैव सकारात्मक रखो। **सफलता की परिभाषा अपनी क्षमताओं को परिष्कृत करनें से निर्मित होती है, ना कि हताशा और निराशाओं से विचलित होने की इबारत लिखखने से। अपनी ताकत पर विश्वास रखें और संकल्प शक्ति से नये आयाम स्थापित करनें के प्रयास करें।**

माता पिता को भी चाहिए कि यदि बच्चों ने कम अंक प्राप्त किये है तो इसका मतलब यह नहीं कि वह दुसरे बच्चों से कमतर है। बच्चों को खुश रहना सिखाएं और जीवन की हर परिस्थितियों में मुस्कराना सिखाएं। उन्हें बताएं कि यह केवल एक परीक्षा है और यदि उन्होंने सर्वश्रेष्ठ किया तो परिणाम को लेकर निराश होने की जरूरत नहीं है। अपनी योग्यता पर भरोसा रखों और मनोबल बढ़ाएं तथा अपनी प्रतिभा के बल पर सफलता अर्जित करें। जीवन में कई ऐसे उदाहरण है जब लोगों ने कम पढ़े लिखे होने के बाद भी अपनी प्रतिभा के दम पर दुनिया में अपना नाम स्थापित किया है।

इसलिये कम अंक आना बच्चे की प्रतिभा या बुद्धिमता का अंतिम पैमाना नहीं है। अंक केवल यह बताते हैं कि उसने एक विशेष परीक्षा में कैसा प्रदर्शन किया है, ना कि उसकी पूरी जिन्दगी का भविष्य। इसलिये हमें बच्चे की क्षमता पर भरोसा बनाये रखना है और उसकी रूचि के अनुसार उसका मार्गदर्शन करना सबसे महत्वपूर्ण है। कम अंक आने पर बच्चों को डांटने या उसकी आलोचना करनें के स्थान पर उसे भावनात्मक सहारा दें और उसे यह विश्वास दिलायें कि आप हमेंशा उसके साथ हैं। अपने बच्चों की तुलना किसी अन्य बच्चे से न करें। हर बच्चा अपनी गति और विशेषताओं के साथ अद्वितीय होता है। बच्चे को समझायें कि अभी नंबर कम आये तो क्या हुआ अवसर अभी बहुत है। अतः दोगुनी गति से प्रयास करें।

सभी अभिभावकों से मेरा अनुरोध है कि अपने बच्चों की क्षमता एवं हुनर को पहचाने और उन्हें उसके अनुरूप आगे बढ़ने में हर संभव सहायता दें क्योंकि हर बच्चा माता पिता के लिये एक कोहिनूर की भांति होता है। ये सभी बाते लिखने एवं कहने का मतलब हतोत्साहित करना बिल्कुल भी नहीं है और यह मतलब भी कतई नहीं है कि बच्चे पढ़े ही नहीं और कम अंक प्राप्त करने पर संतुष्ट हो जायें। बच्चे हमेशा सर्वोच्च अंक प्राप्त करें, भावना यही है परन्तु सर्वोच्च के लिए जीवन को ही दाव पर लगा देना उचित नहीं है।

आशा है कि पाठक इस लेख को सकारात्मकता से देखेंगे।

प्रवीण शर्मा, नीमच मो. 9300905141

भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह
की 5 मई को जन्म जयंती पर शत शत नमन

पी एल शास्त्री, गुरुग्राम

इस संसार में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो अपने परिश्रम, साधना और पारंगतता के बल पर अपना रास्ता स्वयं ही बनाते हैं, ऐसी ही एक महान विभूति हुई है, देश के 7 वें राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, जिन्होंने एक गरीब घर में पैदा होकर, अपने लिए राजनैतिक पृष्टभूमि तैयार की बल्कि देश के लगभग 12 करोड़ विश्वकर्मा वंश के लोगों को भी रास्ता दिखाया।

हम मे से बहुत से लोग यह नहीं जानते कि ज्ञानीजी हमारे जांगिड समाज से ही थे। पंजाब मे कई जगह तरखाण कहकर भी संबोधित किया जाता है। आज उन्हीं के दिखलाए गए रास्ते पर चलते हुए, पहली बार पंजाब में रामगढ़िया समाज के चार विधायक बने हैं, इनमे से एक सरदार कुलतार सिंह संधवा रामगढ़िया आजकल पंजाब विधानसभा के अध्यक्ष हैं जो कि ज्ञानी जैलसिंह के पोते है। एक विधायक ने तो नवजोत सिंह सिद्धू और विक्रम जीत सिंह मजीठिया जैसे धुरंधरों को सन् 2022 में हुए पंजाब विधानसभा के चुनाव में हराया था।

वैसे भी एक कहावत है कि परमात्मा जिस पर मेहरबानी करता है, उसके रास्ते में आने वाली सभी बाधाएं समाप्त होने के साथ ही, सफलता उसका वंदन और स्वागत करती है। क्या कोई व्यक्ति एक गरीब और साधारण परिवार में पैदा होकर, अपने राजनैतिक कौशल और दक्षता के बल पर देश के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति के पद पर पहुंच सकता है, यह कई बार सिर्फ एक कल्पना लगती है। लेकिन अपने जज्बे और राजनैतिक प्रतिबद्धता के प्रति समर्पण और समर्पित भाव रखते हुए, देश के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचकर, विश्वकर्मा समाज का नाम गौरवान्वित किया।

गरीबों के मसीहा और उनके प्रति संवेदना रखने वाले, विनम्रता, सादगी, सदाशयता और शालीनता की प्रतिमूर्ति और रामगढ़िया समाज के शिरोमणी , पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह एक ऐसी ही महान शख्सियत और विभूति थे। जिन्होंने देश के सर्वोच्च पद, राष्ट्रपति के पद को सुशोभित करके विश्वकर्मा समाज, रामगढ़िया समाज और जांगिड समाज का नाम गौरवान्वित किया।

उल्लेखनीय है कि हम सभी भगवान विश्वकर्मा की सन्तान हैं और अलग- अलग राज्यों मे हमे अनेक नामों से जाना जाता है जैसे पंजाब में रामगढ़िया और तरखान, राजस्थान में जांगिड और सुथार, हरियाणा में जांगड़ा तथा कई दूसरे राज्यों मे बढ़ई, विश्वकर्मा आदि नामों से जाना जाता है।

देश के 7 वें राष्ट्रपति बने ज्ञानी जैल सिंह जी ने, विश्वकर्मा समाज को एकता के सूत्र में बांधने का स्तुत्य प्रयास किया था। उन्होंने विश्वकर्मा समाज को, एक मूल मंत्र भी दिया कि, जब तक समाज संगठित नहीं होगा तब तक हमारी राजनैतिक पहचान नगण्य ही रहेगी। ज्ञानी जैल सिंह का जन्म 5 मई 1916 को गांव संधवा जिला फरीदकोट में पिता किशन सिंह के घर और माता प्रधान कौर की कोख से हुआ और अपनी योग्यता, कार्यक्षमता और दक्षता के बल पर राजनीति के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। ज्ञानीजी रामगढ़िया और जांगिड समाज के लिए एक जीवन्त मिसाल है, जिन्होंने एक साधारण परिवार में जन्म लेकर राजनीति के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाते हुए देश के प्रथम नागरिक बनकर राष्ट्रपति का पद भी सुशोभित किया।

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के राजनैतिक जीवन की शुरुआत एक विधायक के रूप में हुई और वह पहली बार सन् 1962 में संयुक्त पंजाब में, फरीदकोट से विधायक बने। उसके पश्चात वह संयुक्त पंजाब में मंत्री भी रहे तथा नवंबर, 1966 में पंजाब और हरियाणा अलग - अलग राज्य बनने के बाद, वह सन् 1966 से 1972 तक पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। इतना ही सन् 1972 में आनंदपुर साहिब से चुनाव जीतकर फिर से विधायक बने और सन् 1972 से लेकर 1977 तक पंजाब के मुख्यमंत्री के प्रतिष्ठित पद को सुशोभिगत किया।

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी सन् 1980 से सन् 1982 तक, देश के गृह मंत्री भी रहे, उनकी राजनैतिक परिपक्वता और कुशलता तथा दक्षता को देखते हुए ही , उन्हें वर्ष 1982 में देश के सर्वोच्च पद पर आसीन किया गया और उनको देश का सातवां राष्ट्रपति बनाया गया। वह देश के इस गरिमामय और प्रतिष्ठित पद पर सन् 1987 तक राष्ट्रपति रहे। वह रामगढ़िया और जांगिड समाज से देश के सर्वोच्च पद पर आसीन होने वाले पहले व्यक्ति बने।

5 मई को उनका 111 वां जन्म दिवस मनाया गया और पंजाब विधानसभा के अध्यक्ष श्री कुलतार सिंह संधवा, जो कि पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के पोत्र है, ने बताया कि, मैंने राजनीति का क ख ग, अपने दादा ज्ञानी जैल सिंह जी से ही सीखा था और उन्होंने मुझे केवल एक ही शिक्षा दी कि , राजनीति में धैर्य , संयम और सहनशीलता की सर्वाधिक जरूरत है। इसलिए जो भी राजनीति के क्षेत्र में आना चाहता है उसको सबसे पहले लोगों की आलोचनाओं को सुनना पड़ेगा और इसके साथ - साथ लोगों से जुड़ाव बनाए रखने के लिए उनके बीच में रहना भी बहुत ही जरूरी है। राजनीति का पहला अध्याय यही है कि लोगों के दुःख - दर्द को अपना दुख - दर्द समझ कर उसे बांटना पड़ता है और तभी उस नेता को जनता स्वीकार करती है।

विधानसभा अध्यक्ष ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं, हर सम्भव प्रयास कर रहा हूँ कि अपने दादा ज्ञानी जैल सिंह के पदचिह्नों पर चलते हुए, विश्वकर्मा समाज में एकविशेष जागृति पैदा करके, उसमें चेतना का शंखनाद कर सकूं और इस प्रयास में हम सभी की भागीदारी सुनिश्चित होगी तभी हमारा समाज आगे बढ़ सकेगा। मैं पंजाब के रामगढ़िया समाज को भी बधाई देना चाहता हूँ कि सन् 2022 में, पंजाब विधानसभा के चुनाव मे पहली बार 4 विधायक, रामगढ़िया समाज से चुन कर आए हैं। इससे पहले इस समाज से, एक या अधिकतम दो विधायक ही पंजाब विधानसभा के सदस्य के रूप में पहुंचने में सफल हो पाते थे।

उन्होंने कहा कि मैंने यह संकल्प लिया है कि मेरे दादा ज्ञानी जैल सिंह जी ने, जो मुहिम विश्वकर्मा समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए शुरू की थी उसको आगे बढ़ाने का हर सम्भव प्रयास किया जायेगा। मुझे पता है कि सारे देश में लगभग 12 करोड़ लोग भगवान विश्वकर्मा के वंशज हैं जो विभिन्न नामों से जाने जाते हैं। इनको एकता के सूत्र में बांध पाना यद्यपि बड़ा ही दुष्कर कार्य है लेकिन चुनौतियों से डर कर कोई भी व्यक्ति सफल नहीं हो सकता है। अगर प्रयास किए जाएं तो कोई भी लक्ष्य कठिन भी नहीं होता है। मैं हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली के जांगिड भाइयों को, एक माँ की ही सन्तान मानता हूँ, यद्यपि हमारे जातिगत नाम अलग - अलग हैं, लेकिन पेशा एक है और हमारा सभी के आराध्य देव एक ही, भगवान विश्वकर्मा जी है।

पंजाब के अबोहर - फाजिल्का, लुधियाना, मोहाली और पटियाला जैसे शहरों में काफी संख्या में जांगिड समाज के लोग रहते हैं। रामगढ़िया और जांगिड समाज में रोटी - बेटी का रिश्ता है और अनेक ऐसे परिवारों को मैं जानता हूँ, जहां आपस में एक दूसरे से आपसी सम्बन्ध जुड़े हुए हैं और आज इन सम्बन्धों को और अधिक मजबूत करने की जरूरत है। दोनों में आपसी सम्बन्ध सुदृढ़ होंगे तो यह समाज निर्बाध गति से आगे बढ़ेगा और इस दिशा में मिलकर, सार्थक प्रयास करने की महत्ती आवश्यकता है। हम सभी मिलकर पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी के सपनों को साकार कर सकते हैं और उनके प्रति हमारी सबसे बड़ी यही श्रद्धांजलि होगी। क्योंकि पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह दृष्टिकोण बड़ा ही व्यपाक था और समाज हितेषी सोच के कारण ही उन्होंने राजनीति के क्षितिज पर ऐसा स्थान हासिल किया जिसका सौभाग्य जीवन में बहुत कम लोगों को मिलता है।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने, पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को, उनकी जन्म जयंती पर अपने भावभीने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वह एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी होने के साथ ही, एक संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी भी थे, जिन्होंने जीवन पर्यन्त संघर्ष किया और जीवन में आने वाली विषम परिस्थितियों से कभी भी हार नहीं मानी और न ही कभी अपने गौरव और प्रतिष्ठा पर कोई आंच आने दी, ऐसे महान राष्ट्र नायक और विश्वकर्मा समाज के कोहिनूर और जाज्वल्यमान सितारे की तरह चमकने वाले पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को हृदय की गहराइयों से मैं, शत - शत नमन करता हूँ।

ज्ञानी जैल सिंह जब राष्ट्रपति थे तब उनसे मिलने का मुझे भी सुअवसर प्राप्त हुआ था। मैं उनकी सादगी और सरलता तथा ईमानदारी का बड़ा कायल हूँ। उनकी समाज के प्रति जो सकारात्मक सोच और व्यापक दृष्टिकोण था, वह आज की पीढ़ी के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। भगवान विश्वकर्मा के वंशज और रामगढ़िया सिख परिवार में पैदा होने के बावजूद भी, वह जांगिड, जांगड़ा और धीमान तथा पांचाल सभी से प्यार करते थे। उनका यह स्पष्ट मानना था कि एक और एक ग्यारह होते हैं और जब तक एकता की यह प्रवृत्ति विश्वकर्मा समाज में प्रबल नहीं होगी, तब तक आशातीत सफलता और परिणाम हासिल नहीं हो सकतें हैं। मैं उस महान विभूति को 5 मई को, उनकी जन्म जयंती के अवसर पर हृदय के अन्तःकरण से भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

विपुल धन्यवाद।

****

राष्ट्र चेतना, मानवता और साहित्य के अमर गायक, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की जयंती पर शत शत नमन एवम भाव भीनी श्रद्धांजलि

प्रवीण शर्मा, नीमच मो. 9300905141

भारत की सांस्कृतिक और साहित्यिक परम्परा में कुछ ऐसे महान व्यक्तित्व हुए हैं जिन्होंने केवल अपने समय को ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी दिशा दी। ऐसे ही युगदृष्टा, साहित्य सम्राट, दार्शनिक, संगीतकार और शिक्षाविद थे **रवीन्द्रनाथ ठाकुर।** जिन्हें विश्वभर में **"गुरुदेव"** के नाम से सम्मान प्राप्त है। उनकी जयंती केवल एक महान कवि के जन्मदिवस का उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्यों और विश्व बंधुत्व की भावना का पर्व है।

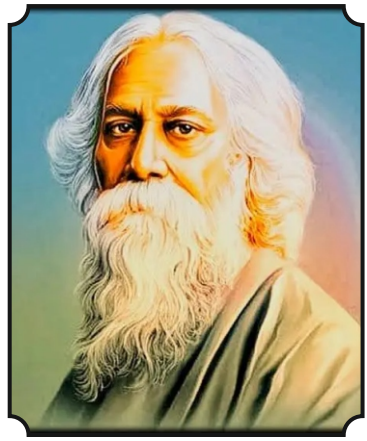

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासांको ठाकुर परिवार में हुआ। **बंगाली और मूल उच्चारण मे उनका उपनाम ठाकुर ही था। ठाकुर का "टैगोर" मे बदलाव ब्रिटिश काल मे उच्चारण की आसानी के लिए हुआ था।** उनका परिवार साहित्य, संगीत, कला और समाज सुधार के क्षेत्र में अत्यंत प्रतिष्ठित था। उनके पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर प्रसिद्ध समाज सुधारक और ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता थे। माता शारदा देवी धार्मिक और संस्कारी महिला थीं। बचपन से ही रवीन्द्रनाथ की रुचि साहित्य, संगीत और प्रकृति में थी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। पारंपरिक विद्यालयी शिक्षा उन्हें पसंद नहीं थी। वे प्रकृति की गोद में सीखना अधिक अच्छा मानते थे। बचपन से ही उनकी प्रतिभा असाधारण थी। मात्र आठ वर्ष की आयु में उन्होंने कविता लिखनी शुरू कर दी थी। किशोरावस्था तक आते-आते उनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं।

1878 में वे उच्च शिक्षा के लिए लंदन गए, लेकिन वहाँ की औपचारिक शिक्षा उन्हें अधिक आकर्षित नहीं कर सकी। वे भारत लौट आए और साहित्य सृजन में पूरी तरह लग गए। उनकी दृष्टि केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे जीवन को ही सबसे बड़ा विद्यालय मानते थे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, गीत और दर्शन जैसे अनेक क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया। उनकी रचनाओं में प्रकृति प्रेम, मानवता, राष्ट्र चेतना, आध्यात्मिकता और संवेदनशीलता का अद्भुत संगम दिखाई देता है।

उनकी प्रमुख कृतियों में **गीतांजलि, गोरा, घरे-बाइरे, चोखेर बाली** तथा अनेक नाटक और गीत शामिल हैं। उनकी लेखनी में भारतीय संस्कृति की आत्मा बसती थी। उनकी कविताएँ केवल शब्दों का संयोजन नहीं थीं, बल्कि मानव आत्मा की गहराइयों से निकली अनुभूतियाँ थीं। **वे मनुष्य को जाति, धर्म और सीमाओं से ऊपर उठाकर विश्व मानव बनने की प्रेरणा देते थे।**

1913 में उनकी महान कृति गीतांजलि के लिए उन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे यह सम्मान पाने वाले प्रथम भारतीय और प्रथम एशियाई साहित्यकार बने। इस उपलब्धि ने भारत का गौरव विश्व मंच पर बढ़ाया।

गीतांजलि की कविताओं में ईश्वर के प्रति समर्पण, मानवता और जीवन दर्शन की अद्भुत अभिव्यक्ति है। पश्चिमी देशों ने भी उनकी प्रतिभा को खुलकर स्वीकार किया। उनकी रचनाओं का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ।

यद्यपि **रवीन्द्रनाथ ठाकुर सक्रिय राजनीति से दूर रहे,** फिर भी उनके भीतर गहरी राष्ट्रभक्ति थी। वे भारत की स्वतंत्रता और सांस्कृतिक जागरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने लोगों में आत्मसम्मान और स्वदेश प्रेम की भावना जगाई।

भारत का राष्ट्रगान जन गण मन उनकी ही रचना है। इसके अतिरिक्त **बांग्लादेश का राष्ट्रगान आमार सोनार बांग्ला भी उन्होंने ही लिखा। यह विश्व इतिहास की अद्वितीय घटना है कि एक ही कवि द्वारा लिखे गए गीत दो देशों के**

राष्ट्रगान बने।

1919 में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड से वे अत्यंत दुखी हुए। अंग्रेज सरकार ने उन्हें **"नाइटहुड"** की उपाधि दी थी, लेकिन इस अमानवीय घटना के विरोध में उन्होंने वह सम्मान लौटा दिया। यह उनके स्वाभिमान और राष्ट्र प्रेम का महान उदाहरण है।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर केवल साहित्यकार ही नहीं, बल्कि महान शिक्षाविद भी थे। वे ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहते थे जिसमें विद्यार्थी **प्रकृति के बीच स्वतंत्र वातावरण** में सीख सकें। इसी उद्देश्य से **उन्होंने 1901 में विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की।**

शांतिनिकेतन शिक्षा, कला और संस्कृति का अद्भुत केन्द्र बना। यहाँ भारतीय और पाश्चात्य शिक्षा का सुंदर समन्वय देखने को मिलता था। **गुरुदेव मानते थे कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि अच्छे और संवेदनशील मनुष्य का निर्माण करना है।**

आज भी विश्वभारती विश्वविद्यालय उनकी दूरदर्शी सोच और शिक्षा दर्शन का जीवंत प्रतीक है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रकृति के अनन्य उपासक थे। उनकी कविताओं और गीतों में नदी, पेड़, फूल, पक्षी और ऋतुओं का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। वे प्रकृति को ईश्वर का स्वरूप मानते थे।

उनकी रचनाएँ मानवता, प्रेम और विश्व बंधुत्व का संदेश देती हैं। वे मानते थे कि संकीर्णता, जातिवाद और कट्टरता मानव समाज के सबसे बड़े शत्रु हैं। उन्होंने मनुष्य को स्वतंत्र विचार और प्रेम का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी।

उनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ .. **"जहाँ मन भय से मुक्त हो और मस्तक ऊँचा हो..."** आज भी लोगों को स्वतंत्र और जागरूक समाज बनाने की प्रेरणा देती हैं।

*****

-:बधाई संदेश:-

श्री चंद्रप्रकाश जांगिड को कांग्रेस पार्टी द्वारा हरियाणा प्रदेश के ओबीसी विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

आपकी यह महत्वपूर्ण नियुक्ति आपके सामाजिक समर्पण, संगठनात्मक क्षमता एवं समाज सेवा के प्रति आपकी निष्ठा का प्रमाण है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके नेतृत्व में समाज के पिछड़े वर्गों खास कर जांगिड समाज की आवाज़ को नई मजबूती मिलेगी तथा आप जनहित एवं समाजहित में उत्कृष्ट कार्य करेंगे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं निरंतर सफलता प्रदान करें, ताकि आप समाज और राष्ट्र की सेवा में निरंतर अग्रसर रहें।

पुनः हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु मंगलकामनाएँ।

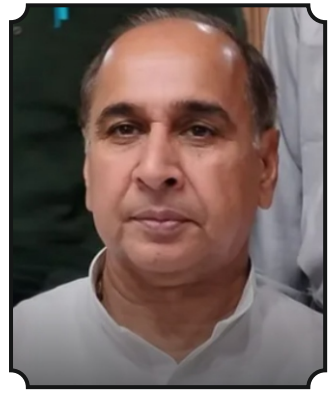

चंद्रप्रकाश जांगिड, हरियाणा प्रदेश के ओबीसी विभाग के अध्यक्ष

प्रधान, रामपाल शर्मा
अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

महाराणा प्रताप :
स्वाभिमान, राष्ट्रभक्ति और वीरता के अमर प्रतीक

महाराणा प्रताप जयंती पर विशेष लेख- प्रहलाद राय शर्मा

भारत की पवित्र भूमि सदैव वीरों, त्यागियों और राष्ट्रभक्तों की जन्मस्थली रही है। इस धरती ने अनेक ऐसे महापुरुषों को जन्म दिया जिन्होंने अपने साहस, पराक्रम और स्वाभिमान से इतिहास के पन्नों को गौरवशाली बनाया। ऐसे ही महान वीरों में महाराणा प्रताप का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वे केवल मेवाड़ के शासक ही नहीं थे, बल्कि स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और मातृभूमि के प्रति समर्पण के जीवंत प्रतीक थे। उनका जीवन संघर्ष, त्याग और अदम्य साहस की ऐसी प्रेरणादायक गाथा है, जो सदियों बाद भी हर भारतीय के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित करती है। महाराणा प्रताप जयंती हमें उनके महान व्यक्तित्व, आदर्शों और राष्ट्रप्रेम को स्मरण करने का अवसर प्रदान करती है।

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई 1540 को राजस्थान के कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ था। उनके पिता महाराणा उदयसिंह द्वितीय मेवाड़ के शासक थे और माता जयवंता बाई थीं। बचपन से ही प्रताप अत्यंत साहसी, स्वाभिमानी और पराक्रमी थे। राजपूत परंपराओं और युद्धकला का प्रशिक्षण उन्हें प्रारंभ से ही मिला। तलवारबाजी, घुड़सवारी और युद्धनीति में वे निपुण थे। उनका व्यक्तित्व तेजस्वी और प्रभावशाली था। बचपन में ही उन्होंने यह निश्चय कर लिया था कि वे कभी भी अन्याय और पराधीनता को स्वीकार नहीं करेंगे।

उस समय भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन तेजी से फैल रहा था। अकबर अनेक राजपूत राजाओं को अपने अधीन कर चुका था। कई राजाओं ने अपनी सत्ता और सुख-सुविधाओं के लिए मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली थी, लेकिन महाराणा प्रताप ने अपने स्वाभिमान और स्वतंत्रता के साथ कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे, परंतु मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं करेंगे।

महाराणा प्रताप के जीवन का सबसे प्रसिद्ध और ऐतिहासिक प्रसंग हल्दीघाटी का युद्ध है। यह युद्ध 18 जून 1576 को मेवाड़ और मुगल सेना के बीच लड़ा गया। मुगल सेना का नेतृत्व राजा मानसिंह कर रहे थे। मुगलों की सेना संख्या और संसाधनों में बहुत अधिक शक्तिशाली थी, जबकि महाराणा प्रताप के पास सीमित सेना और साधन थे। इसके बावजूद उन्होंने अद्भुत साहस और वीरता का परिचय दिया।

हल्दीघाटी का युद्ध भारतीय इतिहास में वीरता और स्वाभिमान का अनुपम उदाहरण माना जाता है। महाराणा प्रताप अपने प्रिय घोड़े चेतक पर सवार होकर रणभूमि में उतरे। चेतक भी अत्यंत वीर और स्वामीभक्त था। युद्ध के दौरान चेतक ने घायल होने के बावजूद महाराणा प्रताप को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया और बाद में अपने प्राण त्याग दिए। चेतक की स्वामिभक्ति और वीरता आज भी लोककथाओं और गीतों में अमर है।

यद्यपि हल्दीघाटी के युद्ध में निर्णायक विजय किसी पक्ष को प्राप्त नहीं हुई, लेकिन महाराणा प्रताप का साहस और संघर्ष पूरे भारत में प्रसिद्ध हो गया। उन्होंने कभी हार नहीं मानी। जंगलों, पहाड़ों और कठिन परिस्थितियों में रहकर भी वे निरंतर मुगलों के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। उन्होंने अपने परिवार और प्रजा के साथ अनेक कष्ट सहे। कई बार उन्हें घास की रोटियाँ खाकर जीवन बिताना पड़ा, लेकिन उन्होंने आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया।

महाराणा प्रताप का जीवन हमें यह शिक्षा देता है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि मनुष्य के भीतर आत्मबल और देशप्रेम हो तो वह हर चुनौती का सामना कर सकता है। उन्होंने कभी व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं को महत्व नहीं दिया। उनका एकमात्र लक्ष्य मेवाड़ की स्वतंत्रता की रक्षा करना था। यही कारण है कि वे आज भी भारतीय जनमानस में वीरता

और त्याग के प्रतीक माने जाते हैं।

महाराणा प्रताप केवल महान योद्धा ही नहीं, बल्कि आदर्श शासक भी थे। वे अपनी प्रजा से अत्यंत प्रेम करते थे और उनकी भलाई के लिए सदैव चिंतित रहते थे। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने जनता का मनोबल बनाए रखा। वे सभी जातियों और वर्गों का सम्मान करते थे। उनके साथ भील समुदाय के लोगों ने भी कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। यह उनके उदार और समावेशी नेतृत्व का प्रमाण है।

उनके सहयोगी भामाशाह का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण था। जब संघर्ष के दिनों में महाराणा प्रताप आर्थिक संकट से गुजर रहे थे, तब भामाशाह ने अपनी संपूर्ण संपत्ति उन्हें समर्पित कर दी। इस सहायता से महाराणा प्रताप ने पुनः अपनी सेना संगठित की और मुगलों के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। भामाशाह का त्याग और राष्ट्रप्रेम भी भारतीय इतिहास में अमर है।

महाराणा प्रताप का जीवन केवल युद्धों तक सीमित नहीं था। वे प्रकृति प्रेमी और संस्कृति रक्षक भी थे। उन्होंने मेवाड़ की परंपराओं, संस्कृति और गौरव की रक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वे मानते थे कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसकी संस्कृति और स्वतंत्रता में निहित होती है। इसलिए उन्होंने कभी विदेशी सत्ता के सामने झुकना स्वीकार नहीं किया।

आज के समय में महाराणा प्रताप का जीवन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। आधुनिक समाज में जब लोग छोटी-छोटी सुविधाओं और स्वार्थों के लिए अपने सिद्धांतों से समझौता कर लेते हैं, तब महाराणा प्रताप का संघर्ष हमें आत्मसम्मान और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देता है। उनका जीवन सिखाता है कि सच्चा मनुष्य वही है जो सत्य, स्वाभिमान और राष्ट्रहित के लिए कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करे।

महाराणा प्रताप जयंती केवल एक ऐतिहासिक दिवस नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति और आत्मगौरव का पर्व है। इस दिन विद्यालयों, सामाजिक संस्थाओं और विभिन्न संगठनों द्वारा अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उनके जीवन पर आधारित भाषण, नाटक, कवि सम्मेलन और रैलियाँ निकाली जाती हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य नई पीढ़ी को उनके आदर्शों से परिचित कराना होता है। युवाओं को यह समझाने की आवश्यकता है कि राष्ट्र की स्वतंत्रता और सम्मान की रक्षा के लिए त्याग और संघर्ष आवश्यक होते हैं।

महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के उन महानायकों में से हैं जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि पराजय परिस्थितियों की हो सकती है, लेकिन आत्मसम्मान और संकल्प की नहीं। उन्होंने जीवनभर संघर्ष किया और अंततः मेवाड़ के अधिकांश क्षेत्रों को पुनः स्वतंत्र कराने में सफल हुए। उनका जीवन हमें निरंतर प्रेरित करता है कि राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा के लिए साहस, धैर्य और त्याग की आवश्यकता होती है।

29 जनवरी 1597 को इस महान वीर ने अंतिम सांस ली, लेकिन उनका नाम अमर हो गया। आज भी राजस्थान की धरती उनके पराक्रम की गाथाएँ गाती है। लोकगीतों, कविताओं और इतिहास के पन्नों में उनका गौरवशाली व्यक्तित्व जीवित है। भारत का प्रत्येक नागरिक उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता है।

अंत में कहा जा सकता है कि **महाराणा प्रताप केवल राजस्थान या राजपूत समाज के ही नहीं, बल्कि पूरे भारत के गौरव हैं। वे स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रप्रेम के ऐसे दीपक हैं जिनकी ज्योति सदैव देशवासियों को प्रेरणा देती रहेगी। महाराणा प्रताप जयंती हमें यह संकल्प लेने का अवसर देती है कि हम भी उनके आदर्शों पर चलकर अपने राष्ट्र, समाज और संस्कृति की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। उनके त्याग, संघर्ष और वीरता को भारतवासी कभी नहीं भूल सकते।** उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों को सदैव यह संदेश देता रहेगा कि स्वाभिमान से बड़ा कोई धन नहीं और मातृभूमि से बढ़कर कोई धर्म नहीं।

*****

उत्तराखंड की चारधाम यात्रा

आस्था, संस्कृति और मोक्ष का पावन मार्ग

भारत की सनातन संस्कृति में तीर्थ यात्राओं का विशेष महत्व रहा है। इन्हीं महान यात्राओं में उत्तराखंड की चारधाम यात्रा को अत्यंत पवित्र और मोक्षदायिनी माना गया है। हिमालय की गोद में स्थित **यमुनोत्री मंदिर, गंगोत्री मंदिर, केदारनाथ मंदिर तथा बद्रीनाथ धाम** करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के प्रमुख केंद्र है। यह यात्रा केवल मंदिरों के दर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मशुद्धि, तप, त्याग और ईश्वर के प्रति समर्पण का आध्यात्मिक मार्ग भी मानी जाती है।

हिंदू मान्यता के अनुसार चारधाम यात्रा करने से मनुष्य के पाप नष्ट होते हैं तथा उसे मानसिक शांति और आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है। हिमालय की शांत वादियाँ, कल-कल बहती नदियाँ और देवस्थलों का दिव्य वातावरण श्रद्धालुओं को एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता है।

चारधाम यात्रा की परंपरा और महत्व

उत्तराखंड को "देवभूमि" कहा जाता है क्योंकि यहाँ **अनेक ऋषियों, तपस्वियों और देवताओं** से जुड़ी पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं। माना जाता है कि आदि शंकराचार्य ने इन धामों की महिमा को पुनः स्थापित कर हिंदू समाज को एक आध्यात्मिक सूत्र में बाँधने का कार्य किया। तभी से चारधाम यात्रा भारतीय धार्मिक परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई।

चारधाम यात्रा सामान्यतः **यमुनोत्री से आरंभ होकर गंगोत्री, केदारनाथ और अंत में बद्रीनाथ तक पूर्ण होती है।** यह क्रम भी प्रतीकात्मक माना जाता है। **यमुनोत्री जीवन और ऊर्जा का प्रतीक है, गंगोत्री आत्मशुद्धि का, केदारनाथ तप और शिवभक्ति का तथा बद्रीनाथ मोक्ष और भक्ति का प्रतीक माना जाता है।**

उत्तराखंड की चारधाम यात्रा सामान्यतः **हर वर्ष अप्रैल–मई में शुरू होती है और अक्टूबर–नवंबर** तक चलती है। यात्रा की शुरुआत **अक्षय तृतीया** के शुभ अवसर पर होती है तथा समापन **दीपावली और भैयादूज** के आसपास होता है।

वर्ष 2026 के लिए चारधाम यात्रा की संभावित तिथियाँ इस प्रकार हैं—

धाम	कपाट खुलने की तिथि	कपाट बंद होने की तिथि
यमुनोत्री	**19 अप्रैल 2026**	**11 नवंबर 2026**
गंगोत्री धाम	**19 अप्रैल 2026**	**10 नवंबर 2026**
केदारनाथ धाम	**22 अप्रैल 2026**	**11 नवंबर 2026**
बद्रीनाथ धाम	**23–24 अप्रैल 2026**	**13 नवंबर 2026**

इस प्रकार 2026 की चारधाम यात्रा का आरम्भ **19 अप्रैल 2026** से माना जा रहा है और अंतिम समापन लगभग **13 नवंबर 2026 को होगा।** परंपरा के अनुसार यात्रा का क्रम इस प्रकार माना जाता है:- **यमुनोत्री, गंगोत्री , केदारनाथ, बद्रीनाथ।**

अधिकांश यात्री **मई, जून और सितंबर** के महीनों में यात्रा करना अधिक सुविधाजनक मानते हैं, क्योंकि **जुलाई–अगस्त में वर्षा और भूस्खलन** की संभावना रहती है। उत्तराखंड की चारधाम यात्रा सामान्यतः **हरिद्वार या ऋषिकेश से शुरू मानी जाती है।** श्रद्धालु पहले यहाँ गंगा स्नान और पूजा करके यात्रा का संकल्प लेते हैं। यह क्रम पश्चिम से पूर्व और फिर उत्तर दिशा की ओर माना जाता है, जिसे धार्मिक दृष्टि से शुभ माना गया है।

यात्रा का मुख्य मार्ग----

हरिद्वार / ऋषिकेश ➪ बड़कोट ➪ यमुनोत्री ➪ उत्तरकाशी ➪ गंगोत्री ➪ गुप्तकाशी / सोनप्रयाग ➪ केदारनाथ ➪ जोशीमठ ➪ बद्रीनाथ

अधिकांश यात्री सड़क मार्ग से यात्रा करते हैं। कुछ श्रद्धालु हेलीकॉप्टर सेवा का भी उपयोग करते हैं, विशेषकर केदारनाथ यात्रा के लिए। धार्मिक मान्यता के अनुसार चारधाम यात्रा की शुरुआत मां यमुना और मां गंगा के दर्शन से होती है तथा अंत में भगवान विष्णु के बद्रीनाथ धाम में दर्शन के साथ पूर्ण मानी जाती है।

यमुनोत्री धाम की महिमा यमुनोत्री मंदिर चारधाम यात्रा का पहला पड़ाव है। यह मंदिर माता यमुना को समर्पित है। **हिंदू धर्म में यमुना नदी को सूर्यदेव की पुत्री और यमराज की बहन माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि जो श्रद्धालु यमुना जी के पवित्र जल में स्नान करता है, उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता।** यमुनोत्री के पास स्थित **"सूर्यकुंड"** नामक गर्म जलस्रोत विशेष आकर्षण का केंद्र है। श्रद्धालु इसमें चावल और आलू पकाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। हिमालय की कठिन चढ़ाई के बीच स्थित यह धाम श्रद्धालुओं को धैर्य और श्रद्धा का संदेश देता है।

गंगोत्री धाम की पवित्रता गंगोत्री मंदिर मां गंगा के पृथ्वी पर अवतरण से जुड़ा हुआ पवित्र स्थल है। **पुराणों के अनुसार राजा भगीरथ ने कठोर तपस्या कर गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी** पर लाया था ताकि उनके पूर्वजों का उद्धार हो सके। गंगा नदी भारतीय संस्कृति और सभ्यता की जीवनरेखा मानी जाती है। हिंदू समाज में गंगा जल को अत्यंत पवित्र माना जाता है और हर शुभ कार्य में इसका उपयोग किया जाता है। गंगोत्री की यात्रा मनुष्य को आत्मशुद्धि, सेवा और करुणा का संदेश देती है। यहाँ पहुँचकर श्रद्धालु प्रकृति और आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम अनुभव करते हैं।

केदारनाथ धाम का महत्व केदारनाथ मंदिर भगवान भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह धाम हिमालय की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित है और अत्यंत कठिन मार्ग से होकर पहुँचना पड़ता है। महाभारत के अनुसार **पांडव युद्ध के पापों से मुक्ति पाने के लिए भगवान शिव की शरण में यहाँ आए थे। शिवजी ने उन्हें दर्शन देकर मोक्ष का आशीर्वाद दिया।** तभी से केदारनाथ को पापों से मुक्ति और तपस्या का महान केंद्र माना जाता है। केदारनाथ यात्रा श्रद्धालुओं को यह शिक्षा देती है कि जीवन में कठिनाइयों का सामना धैर्य और विश्वास के साथ करना चाहिए। बर्फ से ढके पर्वतों के बीच स्थित यह मंदिर आस्था और साहस का अद्भुत प्रतीक है।

बद्रीनाथ धाम की आध्यात्मिक महिमा बद्रीनाथ धाम भगवान भगवान विष्णु को समर्पित है और हिंदू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण वैष्णव तीर्थों में गिना जाता है। **मान्यता है कि भगवान विष्णु ने यहाँ कठोर तपस्या की थी तथा माता लक्ष्मी ने बदरी वृक्ष का रूप धारण कर उनकी रक्षा की थी। इसी कारण यह स्थान "बद्रीनाथ" कहलाया।** अलकनंदा नदी के तट पर स्थित यह धाम श्रद्धालुओं को भक्ति, ज्ञान और मोक्ष का संदेश देता है। यहाँ स्थित **"तप्तकुंड"** में स्नान कर श्रद्धालु मंदिर में दर्शन करते हैं। बद्रीनाथ धाम को चारधाम यात्रा का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है।

चारधाम यात्रा का सांस्कृतिक संदेश

चारधाम यात्रा केवल धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंत परंपरा भी है। यह यात्रा लोगों को प्रकृति के प्रति सम्मान, सेवा, त्याग और मानवता की भावना सिखाती है। कठिन पहाड़ी मार्गों पर चलते हुए श्रद्धालु धैर्य, सहयोग और अनुशासन का महत्व समझते हैं। हिमालय की पवित्रता, मंदिरों की घंटियाँ और वेद मंत्रों की ध्वनि श्रद्धालुओं के मन में नई ऊर्जा और आध्यात्मिक चेतना का संचार करती है। यह यात्रा मनुष्य को अहंकार त्यागकर ईश्वर के प्रति समर्पण का मार्ग दिखाती है।

उत्तराखंड की चारधाम यात्रा भारतीय आस्था और आध्यात्मिकता की अमूल्य धरोहर है। **यमुनोत्री मंदिर से आरंभ होकर गंगोत्री मंदिर, केदारनाथ मंदिर और बद्रीनाथ धाम तक पहुँचने वाली यह यात्रा श्रद्धालुओं को धर्म, संस्कृति और प्रकृति के दिव्य संगम का अनुभव कराती है।** यह यात्रा केवल शरीर की नहीं, बल्कि आत्मा की यात्रा मानी जाती है, जो मनुष्य को शांति, श्रद्धा और मोक्ष के मार्ग की ओर प्रेरित करती है। इस वर्ष की इन चारों धामों की यात्रा अभी चालू है और लाखों की संख्या मे श्रद्धालु इस अलौकिक यात्रा का लाभ ले रहें हैं। उन सभी भक्तों और श्रद्धालुओं को शत शत नमन और प्रणाम जो इस कठिन मार्ग पर केवल अपनी आध्यात्मिक चेतना को और अधिक बढ़ाने के लिए और मानसिक शांति के लिए यह यात्रा करते हैं। ******

प्रहलादराय शर्मा

अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस : श्रम, संघर्ष और सम्मान का पर्व

पूर्व प्रधान महासभा, कैलाश चन्द्र बरनेला

विश्व में मानव सभ्यता के विकास का सबसे बड़ा आधार यदि कोई है, तो वह है — श्रम। किसान खेतों में अन्न उगाता है, मजदूर भवनों का निर्माण करता है, कारखानों में उत्पादन होता है, सड़कें बनती हैं, रेल चलती है, उद्योग आगे बढ़ते हैं — इन सबके पीछे श्रमिकों का अथक परिश्रम छिपा होता है। मजदूर किसी भी राष्ट्र की आर्थिक रीढ़ होते हैं। उनके बिना विकास की कल्पना भी अधूरी है। श्रमिकों के सम्मान, उनके अधिकारों और उनके संघर्षों को स्मरण करने के लिए प्रत्येक वर्ष **1 मई** को **"अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस"** मनाया जाता है। इसे **"मई दिवस"** अथवा **"लेबर डे"** भी कहा जाता है।

मजदूर दिवस का इतिहास:- अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस का इतिहास श्रमिकों के संघर्ष और बलिदान से जुड़ा हुआ है। उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के बाद कारखानों में मजदूरों से अत्यधिक काम लिया जाने लगा। उनसे 12 से 16 घंटे तक काम कराया जाता था, लेकिन वेतन बहुत कम दिया जाता था। काम की परिस्थितियाँ भी अत्यंत खराब थीं। मजदूरों के पास न तो पर्याप्त विश्राम था और न ही किसी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा।

ऐसी परिस्थितियों में अमेरिका के श्रमिकों ने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठानी शुरू की। वर्ष 1886 में अमेरिका के शिकागो शहर में मजदूरों ने **"आठ घंटे काम, आठ घंटे आराम और आठ घंटे अपने लिए"** की मांग को लेकर आंदोलन किया। और 1 मई 1886 को हजारों मजदूर सड़कों पर उतर आए। यह आंदोलन धीरे-धीरे व्यापक रूप लेता गया। 4 मई 1886 को शिकागो के **"हेमार्केट"** क्षेत्र में एक सभा के दौरान हिंसा भड़क उठी और कई मजदूरों तथा पुलिसकर्मियों की मृत्यु हो गई। इस घटना ने पूरी दुनिया का ध्यान श्रमिकों की समस्याओं की ओर आकर्षित किया।

इसके बाद वर्ष 1889 में पेरिस में आयोजित समाजवादी सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष 1 मई को मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाएगा। तब से यह दिवस विश्वभर में श्रमिक एकता और अधिकारों के प्रतीक के रूप में मनाया जाने लगा।

भारत में मजदूर दिवस:- भारत में पहली बार मजदूर दिवस वर्ष 1923 में चेन्नई में मनाया गया था। इसे भारतीय मजदूर किसान पार्टी के नेता सिंगारवेलु चेट्टियार ने आयोजित किया था। उसी समय लाल झंडे का उपयोग श्रमिक एकता के प्रतीक के रूप में किया गया। धीरे-धीरे यह दिवस पूरे देश में लोकप्रिय होता गया। भारत जैसे विशाल और विकासशील देश में करोड़ों लोग मजदूरी और श्रम कार्यों से जुड़े हुए हैं। निर्माण कार्य, कृषि, उद्योग, परिवहन, खनन, वस्त्र उद्योग, घरेलू कार्य, सफाई व्यवस्था और अन्य अनेक क्षेत्रों में मजदूर अपनी मेहनत से देश की प्रगति में योगदान देते हैं। भारतीय संविधान भी श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए अनेक प्रावधान प्रदान करता है।

मजदूरों का समाज में महत्व:- मजदूर समाज की वह शक्ति हैं जिनके बिना विकास की गति रुक जाएगी। कोई भी इमारत, पुल, सड़क, फैक्ट्री, रेल लाइन अथवा आधुनिक शहर मजदूरों के श्रम के बिना नहीं बन सकता। किसान और मजदूर ही राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाते हैं। एक इंजीनियर योजना बना सकता है, लेकिन उसे वास्तविक रूप देने का कार्य मजदूर ही करते हैं। बड़े-बड़े उद्योगपतियों की सफलता के पीछे भी हजारों श्रमिकों की मेहनत होती है। इसलिए मजदूर केवल श्रम करने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का प्रमुख भागीदार है। महात्मा गांधी ने भी श्रम की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा था कि **"श्रम ही पूजा है"** भारतीय संस्कृति में कर्म को सर्वोच्च माना गया है। श्रम करने वाला व्यक्ति समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है।

मजदूरों की समस्याएँ:- यद्यपि मजदूर समाज और राष्ट्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, फिर भी आज भी बड़ी संख्या में श्रमिक अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र के मजदूरों की स्थिति चिंताजनक है।

1. कम वेतन: कई मजदूरों को उनकी मेहनत के अनुसार उचित मजदूरी नहीं मिलती। महंगाई बढ़ने के बावजूद उनका जीवन स्तर निम्न बना रहता है। **2. असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ:** निर्माण स्थलों, फैक्ट्रियों और खदानों में अनेक मजदूर जोखिम भरे वातावरण में काम करते हैं। सुरक्षा उपकरणों की कमी के कारण दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। **3. लंबे कार्य घंटे:** आज भी कई स्थानों पर मजदूरों से

अत्यधिक समय तक काम लिया जाता है। उन्हें पर्याप्त विश्राम नहीं मिलता। **4. सामाजिक सुरक्षा का अभाव:** अनेक मजदूरों के पास स्वास्थ्य बीमा, पेंशन, भविष्य निधि और अन्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं। बीमारी या दुर्घटना होने पर उनका जीवन संकट में पड़ जाता है। **5. बाल श्रम:** गरीबी और अशिक्षा के कारण आज भी कई बच्चे मजदूरी करने को मजबूर हैं। यह समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है। **6. प्रवासी मजदूरों की कठिनाइयाँ:** भारत में बड़ी संख्या में मजदूर रोजगार के लिए एक राज्य से दूसरे राज्य में जाते हैं। उन्हें रहने, भोजन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ता है।

कोरोना काल और मजदूरों की पीड़ा:- कोविड-19 महामारी के दौरान मजदूरों की समस्याएँ पूरे देश ने देखीं। लॉकडाउन के कारण लाखों मजदूर बेरोजगार हो गए। परिवहन बंद होने के कारण अनेक प्रवासी मजदूर पैदल ही अपने गांवों की ओर लौटने को मजबूर हुए। इस कठिन समय ने यह स्पष्ट कर दिया कि श्रमिक वर्ग देश की अर्थव्यवस्था का सबसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण हिस्सा है। महामारी के दौरान मजदूरों ने विपरीत परिस्थितियों में भी देश की आवश्यक सेवाओं को बनाए रखा। सफाई कर्मियों, स्वास्थ्य कर्मचारियों, डिलीवरी कर्मियों और फैक्ट्री मजदूरों ने कठिन समय में अपनी जिम्मेदारी निभाई। इससे समाज को श्रमिकों के वास्तविक महत्व का एहसास हुआ।

मजदूरों के अधिकार:- एक सभ्य और लोकतांत्रिक समाज में मजदूरों को सम्मान और अधिकार मिलना आवश्यक है। श्रमिकों के कुछ प्रमुख अधिकार निम्नलिखित हैं:- **1.उचित वेतन पाने का अधिकार। 2.सुरक्षित कार्यस्थल का अधिकार। 3.निश्चित कार्य समय का अधिकार। 4.स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा का अधिकार। 5.श्रमिक संघ बनाने का अधिकार। 6.महिलाओं और पुरुषों के लिए समान वेतन। 7.बाल श्रम से सुरक्षा।**

सरकार द्वारा श्रमिकों के हित में अनेक कानून बनाए गए हैं, जैसे **न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, श्रम संहिता, कर्मचारी भविष्य निधि योजना और मातृत्व लाभ कानून आदि।** लेकिन इन कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन भी उतना ही आवश्यक है।

तकनीकी युग और बदलता श्रम संसार:- आज दुनिया तेजी से तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। मशीनों, रोबोट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग से श्रम क्षेत्र में भी परिवर्तन आ रहा है। इससे उत्पादन क्षमता तो बढ़ी है, लेकिन कई पारंपरिक रोजगार प्रभावित हुए हैं। नई तकनीकों के कारण श्रमिकों को नए कौशल सीखने की आवश्यकता पड़ रही है। इसलिए सरकार और समाज को श्रमिकों के कौशल विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि वे बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को तैयार कर सकें।

महिला मजदूरो की स्थिति:- महिला श्रमिक समाज और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। खेतों, कारखानों, निर्माण कार्यों और घरेलू उद्योगों में महिलाएँ बड़ी संख्या में कार्यरत हैं। लेकिन उन्हें अक्सर पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है और कई बार भेदभाव का सामना करना पड़ता है। महिला मजदूरों की सुरक्षा, मातृत्व अवकाश, समान वेतन और सम्मानजनक कार्य वातावरण सुनिश्चित करना समाज और सरकार दोनों की जिम्मेदारी है। महिला श्रमिकों के सशक्तिकरण के बिना वास्तविक विकास संभव नहीं है।

मजदूर दिवस मनाने का उद्देश्य:- अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि श्रमिकों के संघर्ष, अधिकार और सम्मान की याद दिलाने वाला दिन है। इसका उद्देश्य समाज को यह संदेश देना है कि श्रमिकों के बिना विकास अधूरा है। इस दिन विभिन्न देशों में रैलियाँ, सभाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम और जागरूकता अभियान आयोजित किए जाते हैं। मजदूर संगठनों द्वारा अपने अधिकारों और समस्याओं को उठाया जाता है। यह दिन श्रमिक एकता और सामाजिक न्याय का प्रतीक माना जाता है।

हमें क्या करना चाहिए:- यदि हम वास्तव में मजदूरों का सम्मान करना चाहते हैं, तो केवल मजदूर दिवस मनाना पर्याप्त नहीं है। हमें अपने व्यवहार में भी श्रमिकों के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता लानी होगी। ***मजदूरों को उचित मजदूरी दी जाए। *उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाए। *बाल श्रम का विरोध किया जाए। *श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दिया जाए। * कार्यस्थलों पर सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। *समाज में श्रम के प्रति सम्मान की भावना विकसित की जाए।**

अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि संसार की हर प्रगति के पीछे किसी न किसी मजदूर का पसीना और परिश्रम छिपा हुआ है। मजदूर केवल आर्थिक विकास के साधन नहीं, बल्कि समाज की आत्मा हैं। उनका सम्मान करना मानवता का सम्मान करना है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम श्रमिकों को केवल **"मजदूर" नहीं,** बल्कि **"राष्ट्र निर्माता"** के रूप में देखें। जब तक श्रमिकों को सम्मान, सुरक्षा और समान अवसर नहीं मिलेंगे, तब तक सच्चे अर्थों में सामाजिक न्याय स्थापित नहीं हो सकेगा।

मजदूर दिवस हमें समानता, श्रम सम्मान और मानव अधिकारों का संदेश देता है। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हम ऐसा समाज बनाएं जहाँ हर श्रमिक को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार प्राप्त हो और उसके श्रम का उचित मूल्य मिले।********

आयुष्मान भारत वय वंदना योजना
वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य सुरक्षा का नया अध्याय

भारत जैसे विशाल देश में स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित करना हमेशा से एक बड़ी चुनौती रही है। विशेष रूप से वृद्धजनों के लिए इलाज का बढ़ता खर्च, गंभीर बीमारियों की चिंता तथा आर्थिक असुरक्षा जीवन को कठिन बना देती है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के माध्यम से **"आयुष्मान भारत वय वंदना योजना"** प्रारम्भ की है। यह योजना देश के वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है।

यह योजना **"आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना"** का विस्तारित स्वरूप है, जिसका उद्देश्य 70 वर्ष या उससे अधिक आयु के बुजुर्गों को गुणवत्तापूर्ण एवं निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। बढ़ती उम्र के साथ स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ती हैं और सामान्य परिवारों के लिए महंगे इलाज का खर्च उठाना कठिन हो जाता है। ऐसे समय में यह योजना लाखों वृद्धजनों के लिए आशा की किरण बनकर सामने आई है।

योजना का उद्देश्य

आयुष्मान भारत वय वंदना योजना का मुख्य उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों को आर्थिक बोझ से मुक्त कर बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है। सरकार चाहती है कि कोई भी बुजुर्ग केवल पैसों की कमी के कारण इलाज से वंचित न रहे। इस योजना के माध्यम से गरीब, मध्यम वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर वृद्धजन अस्पतालों में कैशलेस इलाज प्राप्त कर सकेंगे।

योजना की प्रमुख विशेषताएँ

70 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों को लाभ:- योजना का लाभ देश के उन सभी वरिष्ठ नागरिकों को मिलेगा जिनकी आयु 70 वर्ष या उससे अधिक है।

पाँच लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा:- प्रत्येक पात्र परिवार को प्रतिवर्ष पाँच लाख रुपये तक का कैशलेस स्वास्थ्य बीमा कवर प्रदान किया जाता है।

सरकारी और निजी अस्पतालों में उपचार:- योजना से जुड़े सरकारी तथा निजी अस्पतालों में मरीज निःशुल्क इलाज करा सकते हैं।

कैशलेस और पेपरलेस सुविधा:- मरीज को अस्पताल में इलाज के लिए नकद भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती। पूरी प्रक्रिया डिजिटल माध्यम से संचालित होती है।

गंभीर बीमारियों का इलाज हृदय रोग, कैंसर, किडनी रोग, न्यूरोलॉजी, हड्डी रोग, सर्जरी आदि अनेक गंभीर बीमारियों का उपचार योजना के अंतर्गत किया जाता है।

देशभर में सुविधा:- लाभार्थी भारत के किसी भी सूचीबद्ध अस्पताल में उपचार प्राप्त कर सकता है। इससे दूसरे राज्यों में रहने वाले बुजुर्गों को भी सुविधा मिलती है।

आयुष्मान भारत योजना का परिचय

भारत सरकार ने वर्ष 2018 में **"आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना"** शुरू की थी। इसका उद्देश्य गरीब और वंचित परिवारों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करना था। अब वृद्धजनों की विशेष आवश्यकताओं को देखते हुए **"वय वंदना"** पहल के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों को अतिरिक्त सुरक्षा देने का प्रयास किया जा रहा है।

पात्रता:- योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए निम्न पात्रताएँ आवश्यक हैं—

****आवेदक भारतीय नागरिक हो।**

****आयु 70 वर्ष या उससे अधिक हो।**

****आधार कार्ड तथा पहचान संबंधी दस्तावेज उपलब्ध हों।**

****आयुष्मान भारत योजना के मानकों के अनुसार पात्रता हो।**

****कुछ राज्यों में राज्य सरकारें अतिरिक्त सुविधाएँ भी प्रदान कर रही हैं, जिससे अधिक संख्या में वृद्धजन योजना का लाभ उठा सकें।**

आवेदन प्रक्रिया: योजना में पंजीकरण की प्रक्रिया सरल बनाई गई है। लाभार्थी निम्न प्रकार से आवेदन कर सकते हैं—

****नजदीकी जन सेवा केंद्र पर जाकर आवेदन। **आयुष्मान कार्ड बनवाना। **आधार एवं मोबाइल नंबर सत्यापन। **पात्रता की पुष्टि के बाद कार्ड जारी होना। इसके अतिरिक्त कई राज्यों में विशेष शिविर लगाकर वरिष्ठ नागरिकों का पंजीकरण किया जा रहा है।**

आयुष्मान कार्ड का महत्व:- योजना का लाभ लेने के लिए आयुष्मान कार्ड अत्यंत आवश्यक है। यह कार्ड लाभार्थी की पहचान तथा स्वास्थ्य बीमा सुविधा का प्रमाण होता है। अस्पताल में भर्ती के समय यही कार्ड उपयोग किया जाता है। डिजिटल प्रणाली होने के कारण पूरी प्रक्रिया तेज और पारदर्शी रहती है।

वृद्धजनों के लिए योजना का महत्व:- आज के समय में स्वास्थ्य सेवाएं अत्यंत महंगी हो चुकी है। एक सामान्य सर्जरी या गंभीर बीमारी के इलाज में लाखों रुपये खर्च हो जाते है। सेवानिवृत्त बुजुर्गों के पास सीमित आय होती है, जिससे इलाज कराना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में यह योजना कई प्रकार से सहायक सिद्ध हो रही है—

1. आर्थिक सुरक्षा:- इलाज पर होने वाला भारी खर्च कम होता है और परिवार आर्थिक संकट से बच जाता है।

2. बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ:- वरिष्ठ नागरिक अच्छे अस्पतालों में गुणवत्तापूर्ण इलाज प्राप्त कर सकते हैं।

3. मानसिक संतोष:- बुजुर्गों में यह विश्वास बढ़ता है कि बीमारी की स्थिति में सरकार उनके साथ खड़ी है।

4. परिवारों पर बोझ कम:- महंगे इलाज के कारण परिवारों पर पड़ने वाला आर्थिक दबाव घटता है।

ग्रामीण भारत के लिए वरदान:- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी लंबे समय से एक बड़ी समस्या रही है। गरीब परिवार अक्सर इलाज के लिए कर्ज लेने को मजबूर हो जाते है। आयुष्मान भारत वय वंदना योजना ऐसे परिवारों के लिए राहत लेकर आई है। अब गांवों के बुजुर्ग भी बड़े अस्पतालों में उपचार प्राप्त कर सकते हैं।

महिलाओं को विशेष लाभ:- ग्रामीण एवं गरीब परिवारों की वृद्ध महिलाओं को अक्सर स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिल पातीं। कई महिलाएं आर्थिक निर्भरता के कारण अपने इलाज को टाल देती है। यह योजना वृद्ध महिलाओं के स्वास्थ्य संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

डिजिटल भारत की दिशा में कदम:- यह योजना डिजिटल इंडिया अभियान को भी मजबूत करती है। ऑनलाइन पंजीकरण, डिजिटल कार्ड तथा पेपरलेस प्रक्रिया से भ्रष्टाचार कम होता है और पारदर्शिता बढ़ती है। मरीजों को अनावश्यक दस्तावेजी परेशानियों से भी राहत मिलती है।

योजना से जुड़े प्रमुख लाभ:-

****अस्पताल में भर्ती का खर्च शामिल। **ऑपरेशन और सर्जरी का खर्च। ** जांच और दवाइयों की सुविधा।**

****भर्ती से पहले और बाद का उपचार। **आपातकालीन सेवाएँ। **विभिन्न गंभीर बीमारियों का इलाज।**

चुनौतियाँ:- योजना अत्यंत लाभकारी होने के बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं—

****ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी।**कई लोगों के पास आवश्यक दस्तावेज नहीं होना।**कुछ क्षेत्रों में सूचीबद्ध अस्पतालों की कमी।**डिजिटल प्रक्रिया की जानकारी का अभाव।** इन चुनौतियों को दूर करने के लिए सरकार एवं सामाजिक संगठनों को मिलकर कार्य करना होगा।**

सामाजिक प्रभाव:- आयुष्मान भारत वय वंदना योजना केवल स्वास्थ्य योजना नहीं बल्कि सामाजिक सुरक्षा का मजबूत माध्यम भी है। यह वृद्धजनों के सम्मान और गरिमा की रक्षा करती है। भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों को अनुभव और ज्ञान का स्रोत माना गया है। इसलिए उनका स्वस्थ रहना समाज और परिवार दोनों के लिए आवश्यक है।

भविष्य की संभावनाएँ:- विशेषज्ञों का मानना है कि यदि योजना का प्रभावी क्रियान्वयन किया गया तो आने वाले वर्षों में भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था और मजबूत होगी। ग्रामीण एवं गरीब वर्ग को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिलने से जीवन स्तर में सुधार होगा और आर्थिक असमानता भी कम होगी।

आयुष्मान भारत वय वंदना योजना भारत सरकार की एक दूरदर्शी और जनकल्याणकारी पहल है। यह योजना वृद्धजनों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान कर उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर देती है। बढ़ती चिकित्सा लागत के इस दौर में पाँच लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा लाखों परिवारों के लिए बड़ी राहत है।

आवश्यकता इस बात की है कि योजना की जानकारी प्रत्येक गांव, कस्बे और शहर तक पहुंचे ताकि कोई भी पात्र वरिष्ठ नागरिक इसके लाभ से वंचित न रहे। यदि समाज और सरकार मिलकर जागरूकता बढ़ाएँ, तो यह योजना देश के करोड़ों बुजुर्गों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है।

****

15 मई को अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस पर ,
संयुक्त परिवार की परंपरा को बनाए रखने का संकल्प लें

रमेश शर्मा, आनन्द पर्वत - दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस 15 मई 2026 को मनाया गया। जैसा कि आपको मालूम है, आधुनिक युग में संयुक्त परिवार के विघटन की परंपरा का प्रचलन निरन्तर बढ़ रहा है और यही कारण है कि उपभोक्तावाद के इस आधुनिक युग में, संयुक्त परिवारों की परंपरा का आज निरंतर ह्रास हो रहा है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत बड़ी ही महान रही है और इस विरासत को सतयुग, त्रेता और द्वापर युग में निरंतर बढ़ावा मिलता रहा है लेकिन **इस कलियुग के आते - आते संयुक्त परिवार की यह अवधारणा विलुप्त होती जा रही है। इसका मुख्य कारण आज के युवा का पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की चकाचौंध से प्रभावित होना है जिसकी वजह से वह अपनी संयुक्त परिवार की परंपरा से दूर होता जा रहा है। आज का युवा परिवार से दूर रहना चाहता है और इस अवधारणा का निरंतर विस्तार हो रहा है, यही कारण है कि आज देश में वृद्धाश्रमों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। हमारे जैसे देश मे इसे एक प्रकार से वयोवृद्ध लोगों का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा।**

प्राचीन समय से ही भारतीय समाज की एक विशिष्ट पहचान रही है और यह पहचान **उसकी संयुक्त पारिवारिक संरचना प्रणाली में निहित रही है। एक संयुक्त परिवार केवल एक छतरी के नीचे ही काम करता है और उस छतरी की छाया के नीचे बैठकर ही समस्त परिवार को सुखानुभूति का अनुभव होता है। एक प्रकार से संयुक्त परिवार की यह अवधारणा, एक ऐसी सामाजिक संस्था थी, जिसने पीढ़ियों तक भारतीय सभ्यता और संस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को संरक्षित और संजोकर रखा है।** लेकिन आधुनिकता की चकाचौंध और वैश्वीकरण के बढ़ते दबाव में संयुक्त परिवारों की यह संरचना और अवधारणा निरंतर विघटित होती जा रही है। वर्तमान मे **संयुक्त परिवारों की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि इस विघटन ने भारतीय समाज को उपभोक्तावाद की दिशा में धकेल दिया है, जिसका परिणाम आज स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। आज संयुक्त परिवार की यह अवधारणा विलुप्त होने की कगार पर है और एकल परिवार की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ रही है।** कौटिल्य के अर्थशास्त्र से लेकर, धर्मशास्त्रों तक में, संयुक्त परिवार को, आर्थिक और नैतिक व्यवस्था की मूल इकाई माना गया है। जहां तक ग्रामीण भारत का प्रश्न है, ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी संयुक्त परिवार खेती, उत्पादन, वितरण और उपभोग का संगठित केंद्र है और एक दूसरे की मदद और प्रेम भाव से रह रहे हैं। इस प्रकार से आज संयुक्त परिवार केवल रक्त-संबंध का एक नेटवर्क ही नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भरता और सुरक्षा का एक मूलाधार भी है, लेकिन आज बड़े - बड़े शहरों में संयुक्त परिवार परंपरा का निरन्तर अवमूल्यन हो रहा है।

हमारे **देश में प्राचीन समय से ही संयुक्त परिवार की परंपरा रही है और यह परंपरा ही वास्तविक रूप में सामाजिक सुरक्षा प्रणाली का एक प्रभावशाली कवच था। संयुक्त परिवारों मे बुज़ुर्गों का भरण-पोषण,एक परिवार का दायित्व रहा है,** इसके लिए किसी पेंशन या रिटायरमेंट योजना की कोई भी आवश्यकता नहीं होती थी। इसके अतिरिक्त छोटे बच्चों में संस्कारों को पल्लवित और पोषित करने का दायित्व भी दादा-दादी, नाना-नानी और बड़े-बुज़ुर्गों पर होता था। संयुक्त परिवार की अवधारणा के कारण अपव्यय और फालतू खर्चों में भी कमी होने के साथ ही संसाधनों की भी बचत होती थी। **संयुक्त परिवारों में, बच्चों को शिक्षा और नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने का सौभाग्य सहज रूप से ही प्राप्त होता है।** एक प्रकार से 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक पहुंचते-पहुंचते भारत पर पश्चिमी उपभोक्तावाद का दुष्प्रभाव बढ़ने लगा और इसलिए उपभोक्तावादी रणनीति ने ही इस संयुक्त परिवार की प्रचलित अवधारणा और परम्परा को विघटित करने का कुत्सित प्रयास किया है।

एक संयुक्त परिवार हमें खुश रहने के तरीके सिखलाता है, जिनको आत्मसात करते हुए ही हम **संयुक्त परिवार की परंपरा को और अधिक मजबूत बना सकते हैं। इनमें सामुहिकता, भावनात्मक सुरक्षा, स्पष्ट दृष्टिकोण और विजन, शब्दों का अर्थ, लचीलापन, क्षमाशीलता और नि:स्वार्थ योगदान शामिल है। एक संयुक्त परिवार में, नि:स्वार्थ योगदान और परिवार के एक दूसरे सदस्यों का साथ, जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देने के साथ ही जीवन के हर पड़ाव पर इसकी ताकत हमारे साथ रहती**

है। इसलिए इस जीवन में अगर आप वास्तव में सफल होना चाहते हो, तो संयुक्त परिवार की परंपरा को आत्मसात करते हुए इसे आगे बढाने का प्रयास करना चाहिए तभी हमारा जीवन सार्थक होगा और इससे देश में बढ़ रहे एकल परिवारों की संख्या भी कम होगी। एक रिपोर्ट के अनुसार **पिछले दो दशकों में, देश में एकल परिवारों की संख्या 20 प्रतिशत बढ़ गई है और परिवार का औसत आकार 4.4 रह गया है यानी देश के सिर्फ 23 फीसदी परिवारों में केवल चार ही सदस्य हैं। इसके साथ ही संयुक्त परिवारों में, महिलाओं की कमाई पर नियन्त्रण, एकल परिवार से अधिक है।** इन सभी समस्याओं को समझते हुए ही संयुक्त परिवार की अवधारणा को आगे बढाते कर ही हम, अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। इसीलिए कहा गया है कि एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं और यही एक संयुक्त परिवार की असली ताकत है, जो आने वाले समय में देश के लिए एक अनूठी धरोहर सिद्ध होगा।

आज की युवा पीढ़ी की स्वतंत्रता और **"आधुनिकता"** को **न्यूक्लियर फैमिली** से जोड़ा गया है। संयुक्त परिवार टूटने के परिणाम केवल सांस्कृतिक ही नहीं, बल्कि गहरे सामाजिक और मानसिक रूप से भी परिलक्षित हो रहें हैं। **अगर हम वर्ष 2011 की जनगणना को आधार बनाकर वरिष्ठ नागरिकों का आकलन करें तो इसके अनुसार भारत में 10 करोड़ से अधिक वरिष्ठ नागरिक हैं और अब तो यह संख्या और भी बढ़ गई है। आज देश में वृद्धाश्रमों की संख्या पिछले दो दशकों में कई गुना बढ़ी है।** बच्चों के अकेलेपन को संयुक्त परिवार में, जो भावनात्मक सहारा और प्रेम मिलता था, उसकी जगह अब गैजेट और सोशल मीडिया ने ले ली है और आज एक छोटा बच्चा भी मोबाइल की लत का शिकार हो रहा है।

आधुनिक समाज में सुख और मानसिक शांति हासिल करने के लिए पारिवारिक सदस्य एक सूत्र में बन्धेंगे तभी आपस में प्रेम होगा, क्योंकि प्रेम आपस में एक दूसरे को बांधता है, जबकि द्वेष की भावना एक दूसरे को तोड़ती है। किसी भी परिवार का केन्द्रीय तत्त्व प्रेम भावना ही है। जीवन में दो बातें बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है, एक तो बुद्धि और दूसरी भावना। यह निश्चित है कि जीवन तभी अच्छा चलता है, जब जीवन मे बुद्धि और भावना दोनों का आपसी तादात्म्य और समन्वय होगा। **जैसा कि आपको विदित है, कुछ कार्य तो ऐसे होते है, जो बुद्धि से ही होते है और कुछ कार्य ऐसे होते है, जो भावना से अभिप्रेरित होकर होते है। इसीलिए कहा गया है कि परिवार को चलाना है, तो वहाँ पर भावना को प्रमुखता देनी होगी क्योंकि भावना में त्याग दिखता है और इसके साथ ही भावना हृदय को भी छूती है** साथ ही वह अच्छे-बुरे का विश्लेषण भी करती है।

आज के इस तनाव पूर्ण वातावरण में, मानसिक स्वास्थ्य संकट निरन्तर बढ़ता ही जा रहा है। **विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में हर 7वां व्यक्ति किसी न किसी मानसिक रोग से जूझ रहा है और इसका मुख्य कारण उसका अकेलापन है। इस अकेलेपन की मनोवृत्ति से छुटकारा पाने के लिए, संयुक्त परिवार को एक बोझ नहीं, बल्कि एक संपत्ति मानना होगा। बुज़ुर्गों को अनुभव का मुख्य स्रोत मानकर घर में ली जाने वाली निर्णय-प्रक्रिया में शामिल करना होगा।** इसके साथ ही बच्चों को उपभोक्ता नहीं, अपितु संस्कारी नागरिक बनाने के प्रयास करने होंगे। संयुक्त परिवार का विघटन केवल एक सामाजिक बदलाव ही नहीं है बल्कि भारतीय संस्कृति को तोड़ने के लिये आर्थिक-सांस्कृतिक परियोजना थी, जिसके कारण ही देश को उपभोक्तावाद की दिशा में मोड़ा गया। यह परिवर्तन एक प्रकार से बाज़ार के लिए तो लाभकारी सिद्ध हुआ लेकिन संयुक्त परिवार और समाज के लिए विनाशकारी सिद्ध हुआ है। **प्राचीन समय से ही भारत की असली शक्ति उसका संयुक्त परिवार और उसके द्वारा दिए गए उच्च संस्कार ही रहे हैं। यदि हम अपनी अगली पीढ़ी को इस संयुक्त परिवार की परंपरा और धरोहर से वंचित कर देंगे तो ना, केवल संस्कार, बल्कि सामाजिक ताने-बाने और देश की स्थिरता पर भी एक प्रकार से ग्रहण लग जाएगा।** इसलिए आज समय की यह माँग है कि हम आधुनिकता और उपभोक्तावाद की चकाचौंध में खोने के बजाय, **अपने पारंपरिक और संयुक्त पारिवारिक ताने-बाने को पुनर्जीवित करे और अपने बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल और सुखद बनाने का स्तुत्य प्रयास करें।**

आओ हम सब मिलकर इस अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस पर भारत की इस प्राचीन समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा को और अधिक समृद्ध करने का संकल्प लेवे।

सभी का अंत:करण से हार्दिक धन्यवाद।

****

सीता नवमी के दिन माँ सीता के द्वारा स्थापित उदात्त आचरण को अपने जीवन में आत्मसात करें

अनूसुईया शास्त्री शर्मा, गुरुग्राम

सीता नवमी / जानकी जयंती 25 अप्रैल 2026 को सारे देश में बड़े ही धूमधाम पूर्वक तरीके से मनाई गई

आधुनिक युग में नारी ने अपनी प्रतिभा और दक्षता के बल पर प्रत्येक क्षेत्र में नए - नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वेदों और पुराणों में भी नारी को देवी का दर्जा दिया गया है और पौराणिक शास्त्रों और पुराणों मे भी कहा गया है **"यत्र नारी पूज्यंते रमंते तत्र देवता"** अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता हैं। भगवान शिव ने भी कहा है कि पुरुष और प्रकृति दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। इसलिए भगवान शिव को अर्धनारीश्वर भी कहा जाता है। जिस समय नारी शक्ति वंदन और सम्मान की बात आती है तो महालक्ष्मी, सरस्वती,पार्वती , माँ दुर्गा और अनुसूया सहित अनेक ऐसी देवियां हुई हैं, जिन्होंने अपने बल, ऐश्वर्य और वैभव तथा पराक्रम के माध्यम से मानवता को आध्यात्मिकता की प्रेरणा देने के साथ ही एक नया रास्ता प्रशस्त किया है।

इसी क्रम में भगवान श्री राम ने त्रैता युग में भगवान विष्णु के 7 वां अवतार लेकर मानवता का कल्याण किया और माँ लक्ष्मी ने भी, सीता के रूप में, धरती माँ की गोद से प्रकट होकर, अपने उदात्त आचरण और नैतिक मूल्यों के आधार पर मानवता को सेवा तथा आध्यात्मिकता से परिपूर्ण संदेश दिया है, जो युगों-युगों तक मानवता का पथ आलोकित करता रहेगा। ऐसी मान्यता है कि बैशाख महीने की शुक्ल पक्ष की नवमी को माँ सीता का इस धरा पर अवतरण हुआ था। सीता माता का जन्म एक अद्भुत और चमत्कारिक घटना के रूप में वर्णित किया गया है। यह कथा वाल्मीकि रामायण और अन्य पौराणिक ग्रंथों में मिलती है।

मिथिला के राजा जनक और रानी सुनैना के कोई संतान नहीं थी, जिससे वे बहुत दुखी थे। एक बार, जब मिथिला में सूखा पड़ा और अन्न की कमी हो गई, राजा जनक ने ऋषियों से सलाह ली। ऋषियों ने उन्हें इंद्र देव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ करने का सुझाव दिया।

यज्ञ के बाद, राजा जनक ने खेत में हल चलाने का निर्णय लिया। जब उन्होंने हल चलाया, तो अचानक हल किसी चीज़ से टकराया। जब उन्होंने उस स्थान को खोदा, तो वहाँ एक टोकरी मिली, जिसमें एक सुंदर कन्या थी।

राजा जनक ने उस कन्या को देखकर आश्चर्यचकित होकर उसे गोद लिया और उसका नाम **"सीता"** रखा, क्योंकि वह हल से जोती गई भूमि से प्रकट हुई थी। इस प्रकार, **सीता माता को "भूमिपुत्री" या "भूसुता"** भी कहा जाता है। इस दिन मिथिला के राजा जनक को हल चलाते समय, भूमि से माता सीता एक कलश में मिली थी और इसीलिए माता सीता को **भूमिजा** भी कहा जाता है।

इस दिन को माँ सीता के जन्म दिन के रूप में **सीता नवमी या जानकी जयंती** के नाम से मनाया जाता है। अंग्रेजी महीने के अनुसार सीता नवमी / जानकी जयंती इस साल 25 अप्रैल 2026 को सारे देश में बड़े ही धूमधाम पूर्वक तरीके से मनाई गई।

हिंदू धर्म में, माता सीता को त्याग, प्रेम, धैर्य और मर्यादा की प्रतीक माना जाता है। भगवान श्री राम की अर्धांगिनी और मिथिला नरेश राजा जनक की पुत्री माता सीता के जन्म उत्सव को, जानकी जयंती के रूप में मनाया जाता है। यह एक धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं है बल्कि नारी शक्ति के त्याग और पवित्रता तथा सम्मान का दिन है। ऐसी मान्यता है कि जो महिलाएं इस दिन व्रत रखती हैं और भगवान श्री राम और सीता माता की पूजा अर्चना करती हैं, उनके घर में सुख शांति और समृद्धि बनी रहती है। वही कुंवारी कन्याओं द्वारा इस दिन व्रत रखने से मन चाहा वर मिलता है। हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन शुक्ल पक्ष की नवमी को ही, जानकी माता,

धरती से प्रकट हुई थीं और यही कारण है कि माता सीता के प्राकाट्य दिवस यानी अवतरण दिवस के रूप में यह दिवस विशेष रूप से महिलाओं द्वारा बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक तरीके से मनाया जाता है।

माँ सीता का यह अवतरण दिवस, वास्तव में हमारी आस्था और विश्वास के साथ जुड़ा हुआ एक पावन पर्व है और यह पावन त्योहार पवित्रता, त्याग और नारी शक्ति के सम्मान के प्रतीक के रूप में देश भर में मनाया जाता है। सीता नवमी मनाने का जहाँ तक मैं समझती हूँ , इसका मुख्य कारण यह है कि वह नारी शक्ति के त्याग, सहयोग और सौहार्द की एक अनूठी मिसाल है। जिसने असंख्य कष्टों को सहते हुए और अपने धर्म पर अडिग रहते हुए उसका पालन किया और भगवान श्री राम के दुःख-सुख में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करके नारी शक्ति के लिए एक ऐसा अनूठा और अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिसका नाम हमारी जुबान पर आते ही, हमारा सिर श्रद्धापूर्वक झुक जाता है। इस दिन आदर्शों का सम्मान, माता-पिता के धैर्य, त्याग, और धर्मपरायणता को याद करने का अवसर है। जब हम माँ सीता के अनन्य त्याग और संयम तथा स्वामी भक्ति को देखते हैं तब आज की पतिव्रता और धर्मपरायण नारी शक्ति को भी अपने आप पर गर्व महसूस होता है, क्योंकि वह एक ऐसी नारी को अपना आदर्श मानती हैं, जो कदम- कदम पर हमें जीवन की हर कठिनाई से लड़ना सिखलाती है।

भगवान श्री राम, जिस समय ऋषि विश्वामित्र के साथ, सीता स्वयंवर मे भाग लेने जनकपुर गए थे तब स्वयंवर के पहले, सुबह - सुबह, भगवान श्री राम और लक्ष्मण, गुरु देव की पूजा के लिए, उद्यान से फूल तोड़ने गए तब सीता ने भगवान श्री राम को देखा और वह भगवान श्री राम को देखकर, माँ गौरी से प्रार्थना की, कि मुझे श्री राम जैसा ही जीवन साथी मिले। माता जानकी ने, भगवान श्री राम से सीधा अप्रोच नहीं किया, जैसे कि आजकल की लड़कियां शादी से पहले करती हैं, बल्कि जानकी माता (सीता) ने, माँ गौरी पर अगाध विश्वास करते हुए, भगवान श्री राम को पाने के लिए माँ गौरी से प्रार्थना की।

आपको मालूम है कि धनुष को उठाकर उस पर प्रत्यंचा चढाने मे जब बड़े - बड़े राजा, महाराजा और यहां तक कि रावण ने भी हार मान ली तब राजा जनक निराश हो गए, लेकिन जानकी माता को अगाध विश्वास था कि भगवान श्री राम ही उनको जीवन साथी के रूप में वरण करेंगे। भगवान श्री राम ने न केवल भगवान शिव के धनुष को उठाया बल्कि जैसे ही उठाकर उस पर प्रत्यंचा (डोरी) चढ़ाने लगे, धनुष बहुत तेज ध्वनी के साथ खंड - खंड होकर जमीन पर गिर गया। भगवान श्री राम ने राजा जनक के वचन की लाज रखी और सीता का वरण किया।

इसके बाद भी भाग्य की विडंबना देखिए कि भगवान श्री राम वन में अपने साथ सीता को ले नहीं जाना चाहते थे , लेकिन राजा जनक और माता-पिता द्वारा दिए गए उदात्त संस्कारों और माता सीता मे परिव्याप्त नारी के असीम गुण, शालीनता, श्रद्धा विनम्रता और सौम्यता तथा पतिव्रता नारी के व्यवहार और गुणों के कारण ही , भगवान श्री राम को सीता को अपने साथ जाने के लिए विवश कर दिया। माँ सीता ने भगवान श्री राम के साथ, वन में नारी शक्ति की समर्पण भावना और महान उदात्त संस्कारों का पालन करते हुए समय बिताया और नारी के सम्मान पर कभी भी आंच नहीं आने दी। इतना ही नहीं रावण जिस समय, माँ सीता का अपहरण करके ले गया तब माँ सीता ने महलों की अपेक्षा अशोक वाटिका में रहना पसंद किया।

माँ सीता ने भगवान श्री राम के साथ मिलकर समाज को, माता - पिता की आज्ञा का पालन, भाई का भाई के प्रति असीम स्नेह, अपनी प्रजा के साथ सम व्यवहार और साधू - संतो को सम्मान और गरीब मल्हाओं के प्रति स्नेह का पाठ पढ़ाया। भगवान श्री राम के साथ शबरी के झूठे बेर खाकर यह सिद्ध करना कि, भगवान केवल भाव के भूखे हैं। रामायण में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जो नारी शक्ति को अपने अधिकारों के प्रति समर्पण और सेवा भावना का पाठ पढ़ते है। भगवान श्री राम ने मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए उदात्त आचरण और उच्च मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं के माध्यम से इस भ्रमित समाज को अमर संदेश दिया।

मेरा तो स्पष्ट रूप से यह मानना है कि, रामायण और रामचरितमानस में भगवान श्री राम और सीता के जिन उदात्त गुणों का समावेश किया गया है अगर, उनमें से कुछ ही सिद्धान्तों को अपनाकर, हम जीवन मे उच्च नैतिकता और आचरण का पालन करने का संकल्प ले, तो हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा और माँ जानकी (सीता) जयंती मनाना भी तभी सफल और सार्थक होगा, जब हम भगवान श्री राम और माँ सीता के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करते जीवन यापन करेंगे।

विपुल धन्यवाद.....

*****

संघर्ष से सफ़लता तक का सफर :-
बाड़मेर जिले के सुरेश जांगिड बने राजस्थान प्रशासनिक अधिकारी

हाल ही में घोषित हुए RAS 2024, के परीक्षा परिणाम में बाड़मेर के होनहार युवा सुरेश जांगिड ने पूरे राजस्थान में 253वीं रैंक प्राप्त कर, अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। उनकी यह सफलता केवल एक परीक्षा उत्तीर्ण करने की नहीं है, बल्कि यह लगातार मिलने वाले मानसिक तनाव, असफलताओं और विपरीत परिस्थितियों को हराकर आगे बढ़ने की एक सच्ची प्रेरणा है।

सुरेश की बुनियादी शिक्षा, बाड़मेर जिले की सेड़वा तहसील के पैतृक गाँव केकड़ के एक सरकारी स्कूल से हुई। 10वीं कक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने पर सहपाठियों और परिवेश के अनुसार उन्हें इंजीनियरिंग की सलाह मिली। जिसके बाद उन्होंने उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिय विज्ञान विषय चुना। 12 वीं कक्षा मे बहुत ही अच्छे अंकों से परीक्षा पास कर उन्होंने B.Tech. की प्रवेश परीक्षा में भी अच्छी रैंक अर्जित की, लेकिन ग्रामीण परिवेश के कारण ऑनलाइन काउंसलिंग की, सही प्रक्रिया की जानकारी नही होने से इंजीनियरिंग मे दाखिला नहीं मिल सका। इसके बाद उन्होंने B.Sc. की राह चुनी। स्नातक परीक्षा पास करने के बाद सुरेश जब आगे की तैयारी के लिए जयपुर आए, तो उनके मन में एक गंभीर दुविधा थी कि IIT JAM की परीक्षा पास कर M.Sc. के अकादमिक क्षेत्र में जाएं या फिर RAS के जरिए प्रशासनिक सेवा में कदम रखें। इस मोड़ पर उन्होंने अपने गुरुजनों और प्रबुद्ध मित्रों से गंभीर विचार विमर्श किया, जिससे उनके विचारों में स्पष्टता आई और उन्होंने RAS परीक्षा की तैयारी का दृढ़ संकल्प लिया और तैयारी के लिए कोचिंग हेतु जयपुर आ गए।

अभी जयपुर में कोचिंग शुरू हुए मात्र 2 महीने ही हुए थे, कि कोरोना काल के दौरान अचानक देश भर में लॉकडाउन लग गया। सब कुछ थम जाने के कारण उन्हें वापस गाँव लौटने पर विवश होना पड़ा और लगभग 2 वर्ष का एक लंबा कालखंड गाँव में ही बीता, जिससे पढ़ाई की निरंतरता पूरी तरह टूट गई। स्थितियां सामान्य होने पर पुनः जयपुर लौटकर और दुगने उत्साह से तैयारी में जुट गए। उनकी मेहनत का परिणाम यह रहा कि RAS- 2021 की परीक्षा में उन्होंने 572वीं रैंक हासिल की। सफलता बेहद करीब थी, परंतु बहुत ही मामूली अंतर की वजह से इनका नाम अंतिम चयन की सूची मे शामिल नहीं किया गया। इस निराशा को संभालते हुए वर्ष 2023 की राजस्थान प्रशानिक सेवा परीक्षा की तैयारी उन्होंने पूरी ऊर्जा के साथ की। उन्होंने प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, पूरी लग्न और उत्साह के साथ मुख्य परीक्षा में भाग लिया, लेकिन परिणाम उम्मीद के विपरीत आया और वे मुख्य परीक्षा में असफल हो गए। लगातार इतनी ऊंचाई तक पहुंचकर असफल होने से उनके मन में गहरा आत्म-संदेह पैदा होने लगा कि क्या वे वास्तव में इस परीक्षा के योग्य हैं भी या नही?

इस घोर मानसिक संताप के समय उनके सच्चे और निश्छल मित्रों ने उनके गिरते हौसले को थामा। मित्रों के साथ हुई आत्मीय बातचीत और उनके अटूट विश्वास ने सुरेश के भीतर के आत्मविश्वास को पुनः जगाया। समय की चुनौती अत्यंत विकट थी, क्योंकि RAS 2023, मुख्य परीक्षा की विफलता के ठीक 1 महीने बाद ही RAS -2024 की प्रारंभिक परीक्षा की तिथी निर्धारित थी। सुरेश ने अपने सारे दुख और डर को अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाया और पुनः RAS -2024 परीक्षा की तैयारी में जुट गए। इसी साहस का सुखद परिणाम आज सबके सामने है। सुरेश ने 253वीं रैंक हासिल कर ना केवल अपने माता पिता का नाम रोशन किया बल्कि जांगिड समाज के गौरवको भी बढ़ाया है।

सुरेश की इस पूरी संघर्षमयी यात्रा के पीछे, उनके माता-पिता और परिवार का अद्वितीय त्याग रहा है। उनके पिता अनोपा राम, महाराष्ट्र में एक कारपेंटर के रूप में मजदूरी करते हैं, जबकि उनकी माता श्रीमती पपू देवी एक कुशल गृहिणी हैं। आर्थिक संसाधन इतने सीमित थे, कि तीन बच्चों की उच्च शिक्षा का भारी खर्च उठाना उनके लिए मुमकिन नहीं था। उन्हे बच्चो की शिक्षा के लिए कई बार कर्ज लेना पड़ा। परंतु शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण और दृढ विश्वास इतना मज़बूत था कि उन्होंने तंगहाली को कभी बच्चों की पढ़ाई के आड़े नहीं आने दिया।

पिता के इस असीम संघर्ष को देखते हुए सुरेश ने भी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को बखूबी समझा। उन्होंने परिवार को

आर्थिक संबल देने के लिए RAS- 2021 मुख्य परीक्षा और RAS -2023 मुख्य परीक्षाओं के बाद प्राइवेट क्षेत्र में पूर्णकालिक नौकरी भी की। एक तरफ प्राइवेट नौकरी की व्यस्तता और दूसरी तरफ प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी को जारी रखना, सुरेश के इसी जुझारूपन को दर्शाता है।

पिता के त्याग और खुद सुरेश के कड़े संघर्ष का ही प्रतिफल है कि आज सुरेश, आर. ए. एस. अधिकारी बन चुके हैं। उनका छोटा भाई सरकारी मेडिकल कॉलेज, सूरत से MBBS पढ़ाई पूर्ण कर, अपनी इंटर्नशिप कर रहा है, तथा उनकी सबसे छोटी बहिन जयपुर के प्रतिष्ठित महारानी कॉलेज से उच्च शिक्षा ग्रहण कर रही है। सुरेश कुमार का यह सफर हमारे जांगिड-सुथार समाज के हर उस युवा के लिए एक जीवंत संदेश है, जो कठिन परिस्थितियों या असफलताओं के आगे घुटने टेक देते हैं। यह कहानी सिखाती है कि यदि आपके पास अपनों का नि:स्वार्थ साथ हो, गुरुजनों का आशीर्वाद हो और खुद पर अडिग विश्वास हो, तो हर असफलता केवल आपकी अंतिम सफलता की एक सीढ़ी मात्र बनकर रह जाती है। संपूर्ण समाज को अपने इस होनहार लाड़ले और उनके संघर्षशील परिवार पर परम गर्व है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राहमण महासभा प्रधान, रामपाल शर्मा ने सुरेश जांगिड को उनकी इस गौरव पूर्ण उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हुए और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि आप हमेशा ईमानदारी की राह पर चलते हुए और आखरी पंक्ति पर खड़े व्यक्ति तक पहुँच कर सेवा भावना से अपना कर्तव्य और दायित्व निभाते हुए, अपने माता - पिता और समाज का नाम रोशन करे। समस्त जांगिड समाज का आशीर्वाद आपके साथ है।

सांवरमल जांगिड – महासभा महामंत्री

जिला सभा जयपुर की त्रैमासिक मीटिंग एवं शाखा सभा झोटवाड़ा की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह

जिला सभा जयपुर की त्रैमासिक मीटिंग एवं शाखा सभा झोटवाड़ा की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह, प्रदेश सभा भवन जयपुर में 16 मई को आयोजित किया गया । इस समारोह की मुख्य अतिथि, उपमुख्यमंत्री राजस्थान सरकार श्रीमति दीया कुमारी को दीप विश्वकर्मा के सम्पादक, हरिराम जांगिड द्वारा इस पत्रिका की एक प्रति भेंट की गई। साथ में खड़े हैं-- महासभा के पूर्व प्रधान रवि शंकर शर्मा, राजस्थान प्रदेश सभा अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पवार, पार्षद सुरेश जांगिड, पूर्व राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष संजय हर्षवाल और लखन शर्मा, जयपुर के पूर्व जिलाध्यक्ष नवल किशोर जांगिड ***

मानेसर नगर निगम गुड़गांव के संयुक्त आयुक्त, पुनीत जांगिड से मिलकर समाज के लोगों ने स्वागत किया

दिनांक 6 मई 2026 को, लक्ष्मी नारायण शर्मा की अध्यक्षता में, जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक जन सेवा ट्रस्ट के एक प्रतिनिधि मंडल ने, मानेसर नगर निगम के नव नियुक्त संयुक्त आयुक्त, पुनीत जांगिड से उनके कार्यालय में, मुलाकात कर, गुरुग्राम और मानेसर के जांगिड समाज के लोगों की तरफ से उनका हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत करते हुए उनको सफल कार्यकाल के लिए हार्दिक शुभकामना दी। उल्लेखनीय है कि पुनीत जांगिड की पिछले महीने ही मानेसर नगर निगम में संयुक्त आयुक्त के पद पर नियुक्ति हुई है, इससे पहले वह अम्बाला शहर नगर निगम में संयुक्त आयुक्त के पद पर कार्यरत थे।

ट्रस्ट के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण शर्मा ने पुनीत जांगिड का हार्दिक अभिनन्दन और भावभीना स्वागत करते हुए कहा, कि गुरुग्राम जैसे मिलेनियम सीटी में आपकी नियुक्ति होना अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यहां पर रहकर काम करने के साथ ही, एक अधिकारी का जो एक्सपोजर होता है, वह जीवन पर्यन्त उसके लिए उपयोगी बना रहता है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से पुनीत जांगिड का व्यवहार और विनम्र स्वभाव तथा आचरण है, वह लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के साथ ही, मानेसर में अपनी प्रतिभा का परचम लहराने का स्तुत्य प्रयास करेंगे।

हरियाणा प्रदेश सभा के पूर्व अध्यक्ष और जांगिड ब्राह्मण सामुदायिक जन सेवा ट्रस्ट के संरक्षक, डॉ. शेर सिंह जांगिड ने पुनीत जांगिड को ट्रस्ट के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि, इस ट्रस्ट को, हरियाणा के मुख्य मंत्री नायब सिंह सैनी के सौजन्य से, गुरुग्राम के प्राईम लोकेशन, राजीव चौक के पास 800 गज का एक प्लाट हरियाणा सरकार के सौजन्य से मिला है। इस पर भवन बनाने का नक्शा भी पास हो चुका है और अब इस पर निर्माण कार्य शुरू किया जाना है। इस भवन के बनने से युवाओं के सपनों को साकार करने में मदद मिलेगी और यहां पर रहकर विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी कर, वह अपने उज्ज्वल भविष्य की बुनियाद पर सपनों का महल खड़ा कर सकेंगे।

पुनीत जांगिड ने, इस प्रतिनिधि मंडल को आश्वासन दिया कि, निगम या जिला प्रशासन के स्तर पर, मेरे लिए कोई भी कार्य हो तो मुझे इसके बारे में अवश्य ही अवगत करवाएं, ताकि जहां तक संभव हो सके आप लोगों की और समाज की यथासंभव सहायता और सेवा करके, समाज का ऋण उतार सकूं। अगर समाज मुझे, सेवा का अवसर देता है तो, मैं अपने आपको बड़ा ही सौभाग्यशाली समझूंगा।

पुनीत जांगिड का जन्म 24 अगस्त 1991 को पिता सुमेरचंद जांगिड और माता श्रीमती सुषमारानी जांगिड के घर हुआ। इनके पिता गांव में खेती बाड़ी का कार्य करते थे, लेकिन अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाने की सोच से अभिप्रेरित होकर वह कुरुक्षेत्र शिफ्ट हो गए। कुरुक्षेत्र में एक छोटी सी, लकड़ी और हार्डवेयर की दुकान खोल कर, पुनीत की पढ़ाई-लिखाई को धार देने काम किया। भगवान की अनुकम्पा, अपने परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर पुनीत जांगिड सन् 2023 में एच.सी. एस. बन पाए है तथा भविष्य मे वह आई.ए.एस. बनने की इच्छा रखते है।

पुनीत जांगिड ने सन् 2009-13 के दौरान **"राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान"** कुरुक्षेत्र से **"इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन इंजीनियरिंग"** में बी टेक की उपाधि हासिल की। उसके पश्चात केन्द्रीय लोक सेवा आयोग की परीक्षा देने की तैयारी शुरू की और परमात्मा की अनुकम्पा से तीन बार आई. ए. एस. की परीक्षा के लिए साक्षात्कार तक पहुंचें, लेकिन भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया। इसके बावजूद वह एक कर्मयोगी की तरह, भगवान श्री कृष्ण के द्वारा दिए गए कर्मयोग के उपदेश को आत्मसात करते हुए और भगवान पर भरोसा और विश्वास रखते हुए, पुरुषार्थ के साथ परिश्रम करते रहे और अन्त में सन् 2023, में सफलता हासिल हो ही गई। इससे पहले भी उन्होंने सन् 2019 में हरियाणा सिविल सर्विस की परीक्षा पास की थी उसमे सहायक आबकारी एवं कराधान अधिकारी के रूप में चयन हो गया था, लेकिन इन्होंने इसे ज्वाइन नहीं किया, क्योंकि उनका लक्ष्य तो हरियाणा सिविल सर्विसेज का अधिकारी बनना था। आखिर में वह परमात्मा की अनुकम्पा और माता-पिता के आशीर्वाद से सन् 2023 में एच.सी.एस. अधिकारी बन गए।

पुनीत जांगिड का जीवन ,ऐसे युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं, जो असफल होने के बाद भी हिम्मत नहीं हारते हैं। उन्होंने संकल्प लिया था कि वह एक दिन अपने लक्ष्य हासिल करके रहेंगे और दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य को हासिल किया। हमें भरोसा है कि भविष्य में एक दिन वह भारतीय प्रशासनिक सेवा का अधिकारी बन कर समाज का नाम गौरवान्वित करेगा।

इस प्रतिनिधि मंडल में, जो लोग शामिल थे, उनमें जांगिड ब्राह्मण जन सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष लक्ष्मी नारायण शर्मा, जांगिड ब्राह्मण जन सेवा ट्रस्ट के संरक्षक और हरियाणा प्रदेश सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. शेर सिंह जांगिड, गुरुग्राम जिला अध्यक्ष सत्यनारायण शर्मा, जिला सभा के महासचिव भगवत प्रसाद जांगिड, जिला सभा कार्यकारिणी के सदस्य राम रतन जांगिड, ट्रस्ट के सदस्य राजेन्द्र जांगिड, झाड़सा शाखा सभा अध्यक्ष जगदीश शर्मा, शाखा सभा झाड़सा के महासचिव ब्रह्मदत्त जांगिड, झाड़सा के भारतीय जनता पार्टी के युवा नेता सोनू जांगिड, जांगिड समाज के युवा नेता विशाल शर्मा, रमेश जांगिड और सुल्तान जांगिड शामिल हैं। **डॉ. शेरसिंह जांगड़ा – पूर्व प्रदेशाध्यक्ष हरियाणा**

सीकर की बेटी दिव्या जांगिड ने चार्टर्ड अकाउंटेन्ट (C.A.) बनकर सीकर जिले मे जांगिड समाज का परचम लहराया

दिव्या जांगिड ने अपने अथक प्रयत्न से भारत मे भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा के बाद सबसे कठिन मानी जाने वाली चार्टर्ड अकाउंटेन्ट परीक्षा के ईन्टर एवम फाइनल ग्रुप के सभी पेपर प्रथम कोशिश मे ही पास कर एक मिशाल पेश करते हुये अपने अभिभावकों और समाज का नाम रोशन किया है।

दिव्या, राणी सती रोड़ सीकर के रहने वाले सोहनलाल जांगिड एवम श्रीमति सीतादेवी की सुपौत्री है। पिता जितेन्द्र कुमार फेब्रीकेशन का काम करते है और माता श्रीमति संतोष सफल गृहणी है। दिव्या की माँ सन्तोष नागपुर से महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष जीवणराम जांगिड की भाणजी है। जीवण राम की बहिन बिमला और बहनोई महावीर प्रसाद दिव्या के नानीजी- नानाजी हैं। घर मे पढाई का परिवेश ना होते हुये भी दिव्या शिक्षा के मामले मे शुरू से ही होनहार रही है। **उसने वर्ष 2016 मे विद्याश्रम पब्लिक स्कूल मे पढ़ते हुये 10वीं बोर्ड की परीक्षा 86.87 प्रतिशत अंको के साथ पास की है ।** इसी स्कूल से **वर्ष 2018 मे वाणिज्य संकाय मे 12वीं बोर्ड परीक्षा मे जिले मे तीसरा स्थान प्राप्त करते हुये 93.40 प्रतिशत अंको के साथ उतीर्ण की है।** यह दर्शाता है कि दिव्या शुरू से ही मेधावी छात्रा रही है। जिसमे आगे बढने का हौसला हो उसको कोई भी अवरोध नही रोक सकता है। भाग्य से दिव्या को अपने दादाजी - दादाजी, माता - पिता और परिवार मे सभी का स्नेह और प्यार मिला जिसकी वजह से उसके इरादों को और ज्यादा धार मिली।

दिनांक 23 मई, 2026 को इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा जयपुर मे आयोजित दिक्षांत समारोह मे दिव्या को सी.ए. की डिग्री प्रदान की गयी।

वर्ष 2021 मे पण्डित दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय सीकर से B.Com. (वाणिज्य स्नाताक) की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उतीर्ण करने के पश्चात दिव्या ने चार्टर्ड अकाउंटेन्ट (Chartered Accountant) परीक्षा पास करने का सपना संजोया । मई 2023 मे सी.ए. इंटर के दोनो ग्रुप प्रथम प्रयास मे पास करने से 2 विषय मे छूट मिली। **फाइनल परीक्षा के द्वितीय ग्रुप के पेपर सितम्बर, 2025 और बचे हुये पेपर मई, 2025 मे पास कर सी. ए. बनकर सफलता का परचम लहराया। दिनांक 23 मई 2026 को इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा जयपुर मे आयोजित दिक्षांत समारोह मे दिव्या को सी. ए. की डिग्री प्रदान की गयी।**

दिव्या ने बताया कि इस सफलता मे उसका आत्म विश्वास और लक्ष्य प्राप्ति की अटूट इच्छाशक्ति का मुख्य योगदान रहा साथ ही मेरे माता - पिता एवम परिवार के सभी सदस्यों ने मेरा मनोबल बनाये रखने मे हमेशा साथ दिया। उसने कहा कि सी.ए. का पेशा एक ऐसा पेशा है जिसका सीधा सम्बन्ध देश की आर्थिक प्रगति और विकास से जुड़ा है। पूरे औधोगिक और व्यावसायिक जगत तथा लाखों करदाताओं के खातों का ईमानदारी और देश के कानून के तहत ऑडिट कर, आय व्यय का सही आकलन कर, उसकी रिपोर्ट बनाकर, उसे सत्यापित करना एक चार्टर्ड अकाउंटेन्ट की नैतिक जवाबदारी होती है। मैं अपने पेशे और देश के प्रति मेरा दायित्व ईमानदारी से निभाउंगी।

जिला सभा सीकर के जिला अध्यक्ष बनवारीलाल खण्डेलसर ने दिव्या जांगिड को उसकी सफलता पर हार्दिक बधाई देते हुये कहा कि दिव्या ने इस परीक्षा मे सफलता हासिल कर ना केवल अपने परिवार बल्कि सीकर जिले के समस्त जांगिड समाज का नाम गौरान्वित किया है।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने दिव्या को उसकी सफलता पर अपनी ओर से व्यक्तिगत और महासभा की समस्त कार्यकारिणी की ओर से हार्दिक शुभकामना प्रेषित करते हुये उसके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होनें कहा आज समाज की बेटियां जिस मुकाम को हासिल कर रही है उससे पूरा जांगिड समाज गौरान्वित हो रहा है।

एक बार पुन: दिव्या को हार्दिक बधाई के साथ उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

सांवरमल जांगिड -
जिला मंत्री - जिलासभा, सीकर

IISc से पेटेंट, Gold Medal और विश्वस्तरीय कंपनी में चयन - भूमिका शर्मा ने रोशन किया जांगिड समाज का नाम

मेहनत, लगन और माता-पिता के संस्कारों की त्रिवेणी जब किसी बेटी के जीवन में प्रवाहित होती है, तो वह न केवल अपना भविष्य गढ़ती है, बल्कि पूरे समाज का मस्तक गर्व से ऊँचा कर देती है। ऐसी ही एक प्रेरणादायी कहानी है इंदौर निवासी, जांगिड ब्राह्मण समाज की बेटी भूमिका शर्मा की, जिन्होंने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से एक के बाद एक ऐसी उपलब्धियाँ अर्जित की हैं, जो हम सभी के लिए गर्व का विषय है। भूमिका, भंवरलाल शर्मा (बरनेला) और श्रीमती कमला शर्मा की सुपौत्री है और गिरधारीलाल जांगिड एवं श्रीमती सुमित्रा देवी जांगिड नागपुर की नाती तथा मनीष शर्मा और श्रीमती सुनीता शर्मा की सुपुत्री है।

इंदौर की धरती पर पली-बढ़ी इस बेटी ने बचपन से ही यह सिद्ध कर दिया था कि प्रतिभा किसी परिचय की मोहताज नहीं होती। भूमिका शर्मा — IISc बैंगलोर से Ph.D. की उपाधि प्राप्त की है और Lam Research Corporation में चयनित हुयी है । शैक्षणिक एवं व्यावसायिक उपलब्धियों की श्रृंखला SICA School, इंदौर मे अध्ययन करते हुये भूमिका स्कूल मे कक्षा 10वीं एवं 12वीं में टॉपर रहीं है। इस स्कूल का नाम इंदौर के उत्कृष्ट विद्यालयों मे गिना जाता है। Maulana Azad NIT, भोपाल से तकनिकी शिक्षा की B.Tech. डिग्री मे स्वर्ण पदक (Gold Medal) प्राप्त कर अपनी मेधा का परिचय दिया।

भूमिका ने IISc, बैंगलोर (भारत का सर्वोच्च संस्थान) से PH. D. की डिग्री के लिये Perovskite Solar Cell विषय पर शोध किया। और इस शोध के लिये भारत सरकार द्वारा **PEROVSKITE INK, SOLAR CELL, AND METHODS THEREOF** नामक आविष्कार के लिये पेटेंट सं 587567 प्रदान किया गया। और इस शोध के लिये भारत सरकार द्वारा पेटेंट सं **587567** प्रदान किया गया। हाल मे भूमिका का चयन **Lam Research Corporation,** बैंगलोर मे हुआ है। यह कम्पनी **Semiconductor** क्षेत्र की विश्व की द्वितीय श्रेणी की कम्पनी है। इस अमेरिकी कंपनी की भारत मे एकमात्र शाखा है।

INTELLECTUAL PROPERTY INDIA

पेटेंट कार्यालय,भारत सरकार | The Patent Office, Government Of India
पेटेंट प्रमाण पत्र | Patent Certificate
(पेटेंट नियमावली का नियम 74) | (Rule 74 of The Patents Rules)

पेटेंट सं. / Patent No.	587567
आवेदन सं. / Application No.	202541091682
फाइल करने की तारीख / Date of Filing	24/09/2025
पेटेंटी / Patentee	INDIAN INSTITUTE OF SCIENCE
आविष्कारकों का नाम /Name of Inventor(s)	1.SHARMA, Bhumika 2.AVASTHI, Sushobhan

It is hereby certified that a patent has been granted to the patentee for an invention entitled *PEROVSKITE INK, SOLAR CELL, AND METHODS THEREOF* as disclosed in the above mentioned application for the term of 20 years from the 24th day of September 2025 in accordance with the provisions of the Patents Act,1970.

अनुदान की तारीख / Date of Grant : 24/04/2026

Controller of Patents

Note. - The fees for renewal of this patent, if it is to be maintained, will fall / has fallen due on 24th day of September 2027 and on the same day in every year thereafter.

इन्दौर के सिरमौर और महासभा के पूर्व प्रधान कैलाशचन्द्र बरनेला ने भूमिका की सफलता मे उसके माता - पिता के त्याग, समर्पण और बेटी को प्रोत्साहित करने तथा अच्छे संस्कार देने के लिये उनका धन्यवाद करने के साथ ही बधाई प्रेषित की है। भूमिका को उसकी सफलता पर हार्दिक बधाई देते हुये अपने कर्तव्य का नि:स्वार्थ भाव से पालन तथा देश भक्ति को हमेशा सर्वोपरि रखते हुये जीवन मे आगे बढने की सलाह दी।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने भूमिका की सफलता के लिए उसके माता पिता और भूमिका को हार्दिक बधाई देते हुये कहा कि ऐसी सफलता सभी को नही मिलती है बल्कि स्वयं के धैर्य, आत्मविश्वास, आगे बढने की अटूट इच्छा शक्ति और माता - पिता, परिवार तथा गुरूजनों के मार्ग दर्शन से ही सभंव हो पाता है। उन्होने भूमिका को समाज के लिये एक प्रेरणास्रोत बताते हुये ईश्वर से उसके उज्ज्वल भविष्य और जीवन मे आगे और उन्नति की मंगल कामना की। भूमिका समाज की युवा पीढी के लिये एक प्रेरणा है। समाज के बच्चो को इसकी अदम्य जिज्ञासा और पढाई के प्रति लगन को आत्मसात करना चाहिये।

मैं भूमिका को प्रदेश सभा मध्यप्रदेश की ओर से तथा व्यक्तिगत रूप से उसकी इस सफलता पर हार्दिक बधाई देता हूँ तथा उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

प्रभुदयाल बरनेला - अध्यक्ष - प्रदेश सभा मध्यप्रदेश

निकिता जांगिड ने विज्ञान संकाय में कक्षा 12वीं मे पूरे राज्य मे प्रथम स्थान प्राप्त कर सीकर जिले और राजस्थान के समस्त जांगिड समाज का नाम रोशन किया

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा वर्ष 2026 के विज्ञान संकाय के, कक्षा 12वीं के घोषित परिणाम में सीकर जिले के सिहोट छोटी गाँव की निकिता जांगिड ने मेरिट मे 99.80% अंक अर्जित कर पूरे राजस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त किया और जांगिड समाज तथा सीकर जिले का नाम रोशन किया है। निकिता ने कक्षा 7 वीं तक की शिक्षा गाँव के ही स्कूल से ग्रहण की, उसके बाद 8वीं कक्षा से लगातार सीकर के ब्राइट स्कूल की छात्रा है।

निकिता का जन्म 12 अप्रेल, 2010 को सिहोट छोटी गाँव मे एक शिक्षित परिवार मे हुआ। निकिता गोपाल जांगिड की सुपौत्री और हरफूल एवं श्रीमती रामकला जांगिड की सुपुत्री है। निकिता के माता - पिता दोनों ही एम.ए. / बी.एड. है। निकिता की माताजी ने बताया कि हमने निकिता को ही नहीं बल्कि परिवार मे पढ़ रहे सभी बच्चों को मोबाइल और टीवी से दूर रखा है, इनको देश दुनियाँ के समाचारों के लिए रोज आधा घंटा अखबार पढ़ने की छूट दे रखी है जिससे वे देश दुनिया की ताजा खबरों से अवगत रहे और अपने सामान्य ज्ञान को भी अध्यतन रख सकें, और यहीं इनकी सफलता का राज है।

निकिता ने 10 वीं कक्षा मे भी 5 विषय मे 100% अंक प्राप्त किए थे जिसके लिए राजस्थान की उप मुख्यमंत्री श्रीमती दिया कुमारी द्वारा सम्मानित किया गया था। निकिता ने रोज 7 से 8 घंटे की पढ़ाई, माता - पिता द्वारा प्रोत्साहन तथा गुरूजनों से मिले सहयोग को अपनी सफलता का राज बताया।

जिलासभा सीकर की टीम के साथ निकिता जांगिड

भविष्य के बारे मे बताया कि वह देश सेवा के लिए भारतीय प्रशासनिक सेवा मे जाना चाहती है। निकिता की सफलता एक अटूट विश्वास, अथक परिश्रम, लक्ष्य के प्रति लगन, परिवार द्वारा लगातार प्रोत्साहन और गुरूजनों द्वारा सहयोग का एक जीता जागता उदाहरण है। जिला सभा सीकर कार्यकरिणी के पदाधिकारी एवं समाज के अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा निकिता के गाँव छोटी सिहोट जाकर उसके घर पर सम्मान किया गया साथ ही उसके पूरे परिवार को भी बधाई दी गई।

जिलासभा सीकर, महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष द्वारा सम्मानित

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने निकिता को इस सफलता के लिए हार्दिक बधाई ज्ञापित की और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ साथ उसके भारतीय प्रशानिक सेवा का सपना पूरा हो, इसके लिए ईश्वर से मंगल कामना की।

निकिता के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ विपुल धन्यवाद।

प्रहलादराय शर्मा – सह संपादक

अदिति जांगिड ने उत्तराखंड संस्कृत शिक्षा परिषद, उत्तर मध्यमा द्वितीय (इन्टरमीडिएट) परीक्षा- 2026 मे 12वीं कक्षा में तृतीय स्थान हासिल कर जांगिड समाज का नाम रोशन किया

इस परीक्षा का परिणाम 18 अप्रैल, 2026 को घोषित किया गया है, जिसमें अदिति जांगिड ने 443 अंक हासिल करके उतराखंड प्रदेश में, तृतीय स्थान हासिल किया है। अदिति जांगिड कन्या गुरुकुल विद्यालय, देहरादून की छात्रा है। उसने कहा कि प्रारम्भ से ही उसका लक्ष्य कक्षा में प्रथम स्थान हासिल करना था, लेकिन पता नहीं क्यों तीसरे स्थान पर ही रह गई। उसे उम्मीद है कि भविष्य में वह इससे भी बेहतरीन और उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए समाज और प्रदेश का नाम रोशन करेगी।

अदिति का जन्म 17 जून, 2009 को हुआ था। अदिति के पिता प्रदीप जांगिड एक व्यवसायी है और माँ दीपमाला जांगिड एक गृहणी है। अदिति ने कहा कि इस सफलता में अपने माता - पिता द्वारा दी गई प्रेरणा और प्रोत्साहन तथा गुरुजनों के आशीर्वाद का बहुत बड़ा योगदान है, जिसने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है।

अपने लक्ष्य के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि वह भविष्य में संस्कृत में पी.एच.डी. करके प्रोफेसर बनकर कर देश की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृत भाषा के विकास के लिए कार्य करना चाहती है, क्योंकि संस्कृत ही हमारी मूल भाषा है जिसमें हमारे सभी वेद, ग्रंथ और पुराण लिखे गए हैं। इनके अध्ययन करने से ही मनुष्य का जीवन सफल और सार्थक होता है। मैं चाहती हूँ संस्कृत भाषा का प्रचार और प्रसार देश के कोने - कोने में हो और हमारी महान प्राचीन संस्कृति और इन ग्रंथो का वैभव और इनकी मर्यादा इसी प्रकार से बनी रहे।

महासभा के प्रधान रामपाल शर्मा ने अदिति जांगिड को उसकी उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि उन्होंने अथक परिश्रम और मेहनत के बल पर 12वीं कक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त करके समाज और अपने प्रदेश का नाम गौरवान्वित किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह भविष्य में भी अपने अथक परिश्रम और दूरदर्शिता से इसी प्रकार नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। मैं उसके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

अदिति जांगिड ने उत्तराखंड प्रदेश में जाकर, उत्तर प्रदेश के जांगिड समाज का नाम रोशन किया है और मैं, उत्तर प्रदेश में रहने वाले महासभा परिवार के सभी सदस्यों की तरफ से भी, उनको हृदय के अन्तःकरण से बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ और उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

विपुल धन्यवाद।

उत्तर प्रदेश, प्रदेश अध्यक्ष, अशोक शर्मा

जिलासभा सीकर ने समाज में जनजागृति के प्रयासों में तेजी लाने का संकल्प लिया

दिनांक 13 मई 2026 को जिला सभा कार्यालय, अंगिरा भवन, मानवसिटी कॉम्प्लेक्स, सीकर में अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, जिलासभा सीकर की कोर कमेटी की मीटिंग आयोजित हुई, जिसमें समाज में **"ज्वलंत मुद्दों"** पर गहन मंथन किया गया जिसमे निम्न प्रस्ताव पारित किये गये :-

- **जिलासभा की मीटिंगो में फोटो, साफा, माला व अनावश्यक दिखावे के खर्चो से दूरी।**
- **सामाजिक समरसता बढ़ाने के प्रयासों में तेजी।**
- **जिलासभा आपके द्वार मुहीम को बल एवं सकारात्मक क्रियान्वयन।**
- **मातृशक्ति व युवा शक्ति की सशक्त भागीदारी।**

सभी वक्ताओं द्वारा आज की मुख्य समस्या , लड़कियों का लवजिहाद में फंसकर दूसरे समाज में पलायन की घटनाओं में तेजी पर चिंता व्यक्त की गई। देश मे आए दिन लवजिहाद मे फँसकर दूसरे धर्म मे पलायन की गई लड़कियों के बारे मे समाचार प्रकाशित होते रहते है। यह एक बहुत बड़ा षडयंत्र देश मे पिछले कई सालों से चल रहा है लेकिन पिछले 1-2 वर्ष से इन घटनाओं मे तेजी देखने को मिली है। हमारे जिले में भी पिछले दो महीने में ही दो लड़कियों के पलायन ने पूरे समाज को झकझोर दिया है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति, जिसने भी इन घटनाओं को सुना वह व्यक्ति आक्रोषित और व्यथित है। पीड़ित परिवार कातर दृष्टि से सामाजिक संगठनों की तरफ ताकते रहते हैं और कानूनी दांव पेच के समक्ष अपनी औलाद को खोकर रह जाते हैं। पिछले दिनों में लवजिहाद से पलायन की खबर मिलते ही जिलासभा सीकर के पदाधिकारियों ने हर संभव प्रयास किये, लेकिन कानूनी लाचारी और राजनीतिक कमजोरी के कारण निरर्थक भागदौड़ एवं पीड़ित परिवारों को संवेदना प्रकट करने के अलावा और कोई मदद नहीं कर पाये।

जिलासभा सीकर ने इस मुद्दे पर त्वरित संज्ञान लेते हुये, कोर कमेटी की एक आकस्मिक मीटिंग बुलाई और इस पर मंथन कर आगे की रणनीति पर विचार विमर्श किया गया। मीटिंग की अध्यक्षता, जिलाध्यक्ष बनवारीलाल खण्डेलसर ने की एवं पूरी कोर कमेटी के अलावा विशेष रूप से आमंत्रित, चेतना मंच व समाज के बीजेपी नेता, भँवरलाल जांगिड (सुठोट) उपस्थित रहे। सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया गया कि लवजिहाद जैसी घटनाओं को कानूनी संरक्षण मिलने से इसे रोकने का केवल और केवल एक ही उपाय है कि अपने समाज को ही जागरूक किया जाये, जिससे लड़कियों को इससे बचाया जा सके। इसके क्रियान्वयन हेतु, जिलासभा सीकर के पदाधिकारी, प्रत्येक महीने की हर 10, 20 एवं 30 तारीख को एक-एक गांव जाकर समाज बन्धुओं को विशेषतौर पर मातृशक्ति को, जिलासभा की 10 सूत्रीय अपील के माध्यम से समझाते हुये सजग करने का अनवरत कार्य करेंगे।

इसके साथ - साथ कुछ बिंदु जो मंथन में निकल कर सामने आये, इनको भी प्रचारित करेंगे। जैसा कि हम सबको पता भी है और समझना भी होगा कि लवजिहाद के मुख्य कारण निम्न है, जिन पर सभी अभिभावकों को ध्यान रखना चाहिये।

लड़कियों को पढ़ाई की आड़ में मोबाइल की खुली छूट देना।

- लड़कियों का गैर समाज के बच्चों से दोस्त या धर्म भाई बनने की आड़ में नजदीकियां बढ़ने की अनदेखी करना।
- समय पर बेटियों की शादी न करना भी एक महत्वपूर्ण कारण है।
- लड़कियों का मॉडर्न दिखने के चक्कर में घर से बाहर जाने पर खुली छूट देना।
- गैर व्यक्ति से छोटी छोटी सुविधायें लेना ही लड़कियों के ब्रेनवाश की शुरुआत होती है।
- लड़कियों को महंगे गिफ्ट व होटल रेस्टोरेंट की चकाचौंध, गलत रास्तों पर जाने का अहम रास्ता होता है।

उपरोक्त बिंदुओं पर अभिभावकों की अनदेखी ही आगे इस परिणाम को अंजाम देती है कि अपनी औलाद ही माता पिता को पहचानने से भी मना कर देती है और लवजिहाद के दलदल में फंसकर अपनी जिंदगी तबाह कर लेती है।

अतः समाज को लव जिहाद को रोकने के लिए हर स्तर पर प्रयास करने चाहिए। विशेष रूप से अभिभावकों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वह अपनी संतान की शिक्षा के साथ - साथ इस बात का भी ध्यान रखे कि वह कहीं रास्ता तो नहीं भटक रही है जिसके कारण भविष्य में उसे पछताना पड़े। साथ ही समाज के प्रत्येक सामाजिक संगठनों की भी यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि हम हर स्तर पर अनवरत प्रयास करते हुये समाज को जागरूक करने का अभियान जारी रखें। **जागरूकता ही बचाव है।**

राधेश्याम मांडण प्रवक्ता- अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

पंजीकरण संख्या एस. – 27/1919

प्रदेश सभा उत्तर प्रदेश

कार्यालय : 40 ए, वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ0प्र0)–201005
Website: www.abjbmahasabha.com

अंगिराऊसि जांगिड़

अशोक कुमार शर्मा
प्रदेश अध्यक्ष
मो0: 99999457648

सुनील कुमार शर्मा
महामंत्री
मो0: 9810190386

रमेशचन्द्र जांगिड़
कोषाध्यक्ष
मो0: 9818332844

पत्रांक .... दिनांक ....

चुनाव अधिसूचना – जिलाध्यक्ष पद मेरठ

अधिसूचना क्रमांक यू.पी./01/2026 जारी दिनांक 18 मई 2026

(अध्यक्ष प्रदेश सभा उ.प्र. के पत्रांक ABJBUP/29-2026 dt. 27-04-2026 के अनुपालन में जारी)

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, जिला सभा-मेरठ के अध्यक्ष पद का चुनाव प्रस्तावित है। उक्त जिले के चुनाव हेतु प्रदेश सभा उत्तर प्रदेश द्वारा चुनाव अधिसूचना उपरोक्त पत्रांक अनुसार जारी की जा रही है।

उपरोक्त जिले के जिलाध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्यगण, महासभा - प्रदेश सभा कार्यकारिणी सदस्य, तहसील - शाखा, सभा अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्यगण सभी अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझते हुए चुनाव अधिसूचना का व्यापक प्रचार प्रसार पेम्पलेट, समाचार पत्र, सोशल मीडिया आदि के माध्यम से पूरे जिले में करावें व सभी सदस्यों तक सूचना पहुचाएं तथा अपने जिले में महासभा के अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य बनाने का प्रयास करें।

जारी अधिसूचना के अन्तर्गत मेरठ जिले का चुनाव कार्यक्रम निम्नानुसार रहेगा-

जिला	सदस्यता मान्य	नामांकन तिथि	नामांकन का स्थान	मतदान तिथि
मेरठ	18 जून 2026 तक	21 जून 2026	कार्यालय समाजसेवी संगठन स्टेट बैंक के सामने, खिर्वा रोड़, कंकरखेड़ा, मेरठ	28 जून 2026

उक्त चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराने हेतु श्री सत्यप्रकाश जागिड़, मोबाइल नंबर **8533957302** को चुनाव अधिकारी जिला मेरठ हेतु नियुक्त किया जाता है।

चुनाव अधिसूचना जारी तिथि	-	18 मई 2026 सोमवार।
नामांकन आवेदन	-	नामांकन तिथि को प्रात: 10:00 बजे मध्यान्ह 1:00 बजे तक।
नामांकन पत्रों की जांच	-	नामांकन तिथि को माध्यान्ह 1:00 बजे से 1:30 बजे तक।
नाम वापसी	-	नामांकन तिथि को मध्यान्ह 1:30 बजे से सांय 3:30 बजे तक।
(सर्वसम्मति व एक ही नामांकन प्राप्त होने पर जिलाध्यक्ष पद की घोषणा एवं शपथ समयानुसार की जावेगी)		
अंतिम प्रत्याशियों के नामों की घोषणा	-	नामांकन तिथि को सायं 3:45 बजे।
चुनाव चिन्ह आवंटन	-	नामांकन तिथि को सायं 4:00 बजे।
मतदान आवश्यक होने पर मतदान तिथि को प्रात: 10:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक।		
मतगणना	-	मतदान समाप्ति के पश्चात्।

मुख्य चुनाव प्रभारी

(धर्मपाल शर्मा)
अ.भा. जांगिड़ ब्राह्मण महासभा
प्रदेश सभा उत्तर प्रदेश

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा * प्रदेश सभा-उ0प्र0 * रजि0नं0 27-1919

धर्मपाल शर्मा
मुख्य चुनाव प्रभारी
प्रदेश सभा–उत्तर प्रदेश
मो०-9761077508

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला, (इन्दौर)

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली

श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर

श्री पी.एल.शास्त्री, गुड़गांव

श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली

श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली

श्री राजेन्द्र शर्मा, इन्दौर

श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर

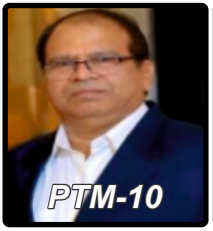

श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली

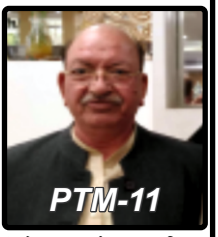

श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली

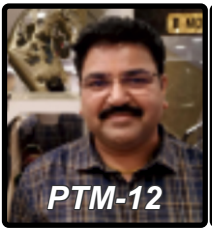

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली

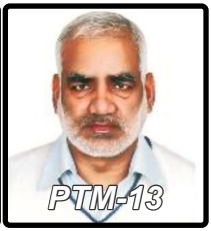

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

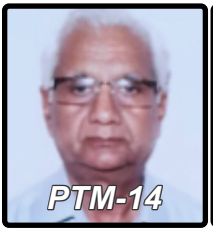

श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली

श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई

श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव

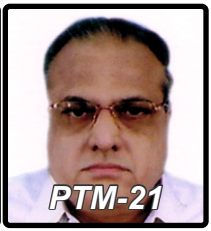

श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता

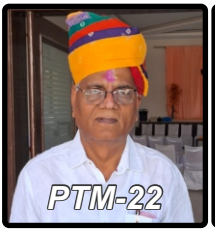

श्री सांवरमल जांगिड, सीकर

श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली

श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

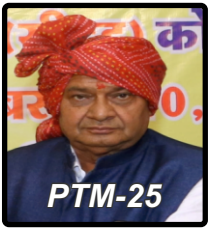

श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास

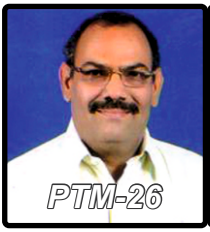

श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर

श्री ललित जड़वाल, अजमेर

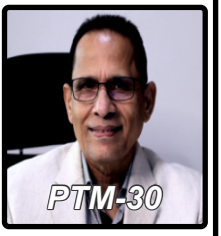

श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

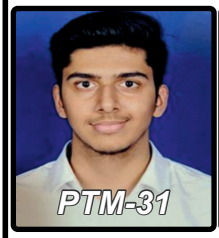

श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई

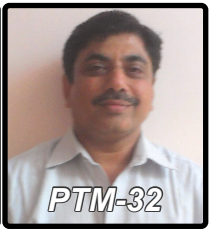

श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर

श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन

श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव

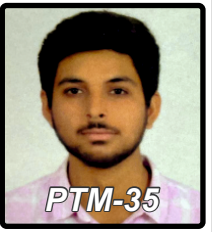

श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव

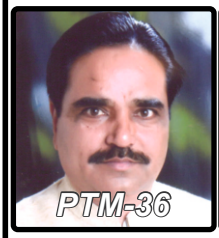

श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव

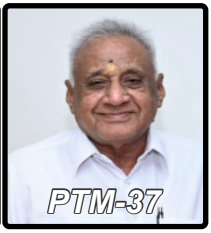

श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर

श्री किशोर जी मोखा, नागपुर

श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद

श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली

श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली

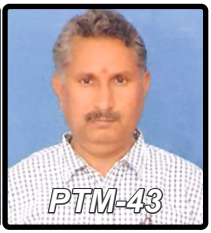

श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद

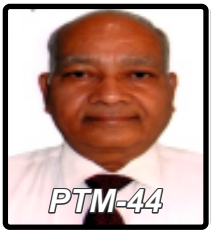

श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

श्री सत्यनारायण शर्मा, दिल्ली

श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली

श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर

श्री सुरेश शर्मा, नीमच

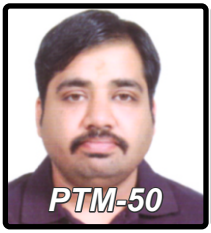

श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत

श्री हुकुमचन्द जांगिड, इन्दौर

श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर

श्री गजानन जांगिड, जालना

श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर

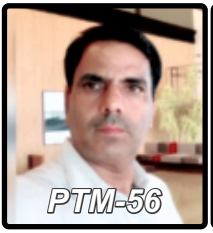

श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू

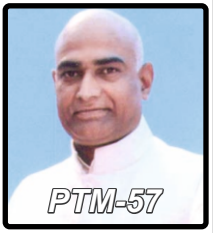

श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री फूलकुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली

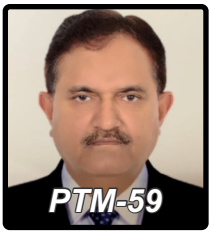

श्री अमराराम जांगिड, जोधपुर

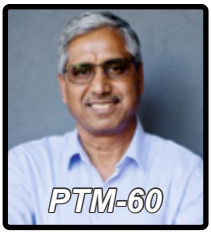

श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू

श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर

श्री यादराम जांगिड, दिल्ली

श्री बाबू लाल, बैंगलुरू

श्री अशोक दतु राम, अहमदाबाद

श्री दयानन्द शर्मा, दिल्ली

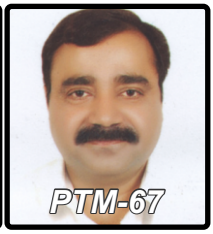

श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर

श्री राधेश्याम शर्मा, वापी

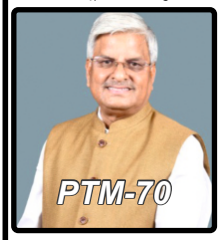

श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू

श्री गोपाल शर्मा, कोरबा

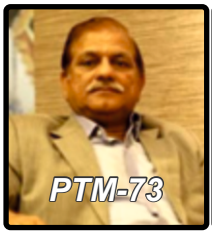

श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

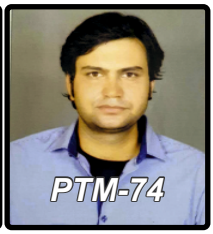

श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर

श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू

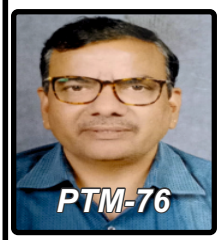

श्री भीमराज शर्मा, जयपुर

श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू

श्री भंवरलाल सुथार, गोवा

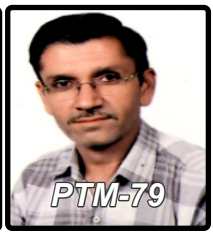

श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई

श्री शुभम शर्मा, कोरबा

श्री नानूराम जांगिड, धुलिया

श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर

श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.

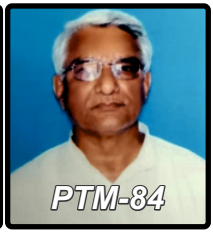

श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर

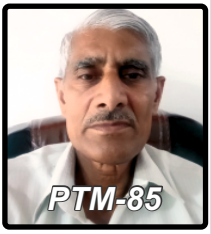

श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर

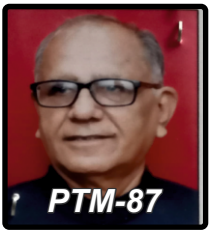

श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर

श्री अनिल शर्मा, इन्दौर

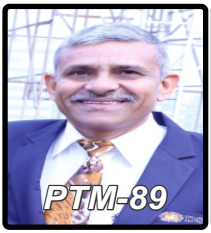

श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद

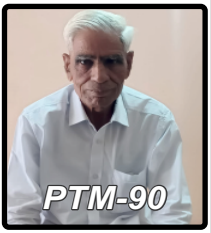

श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल

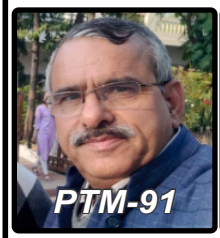

श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद

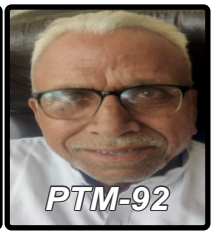

श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

श्री महावीर प्रसाद जांगिड, अहमदाबाद

श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर

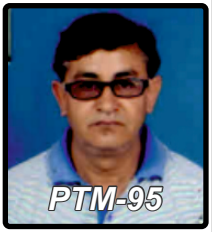

श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़

श्री जगतराम भद्रेचा, बैंगलुरु

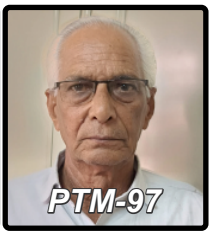

श्री पुरुषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर

श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़

श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम

श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत

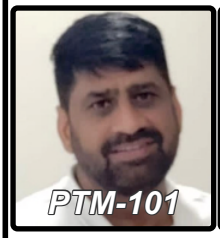

श्री चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर

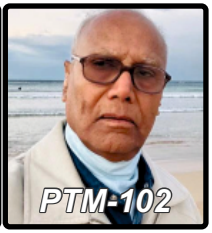

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत

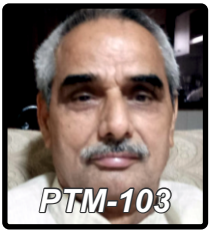

श्री सत्यपाल वत्स, बहादुरगढ़

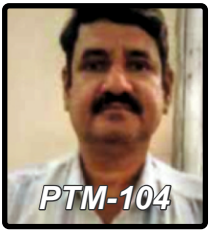

श्री सोमदत्त शर्मा, लखनऊ

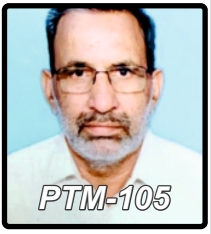

श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली

श्री अनिल शर्मा, तेलंगाना

श्री मुकेश जांगिड, तेलंगाना

श्री भंवरलाल जांगिड, सूरत

श्री जगदीश खण्डेलवाल, दिल्ली

श्री भंवरलाल शर्मा, पाली,राज0

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री प्रहलाद चन्द शर्मा, बैंगलुरू

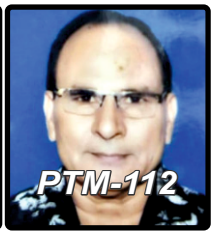

श्री नानूराम जांगिड, हिंगोली,

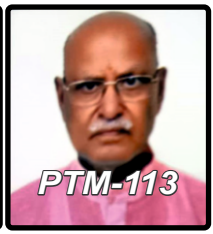

श्री रामानन्द शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

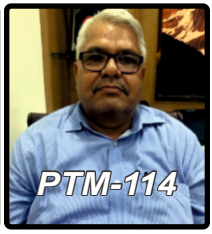

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

श्री कैलाश जांगिड, सूरत

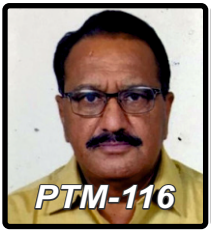

श्री मदन लाल शर्मा, वडोदरा

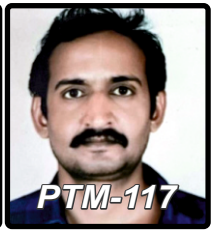

श्री गजानन्द जांगिड, सूरत

श्री हरिराम शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

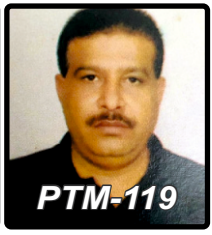

श्री सतवीर शर्मा, गुरूग्राम

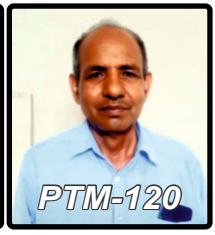

श्री किशोरी लाल शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

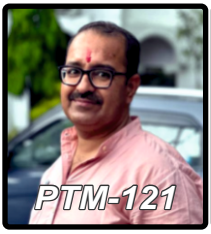

श्री सुनील सिद्धड़, चिड़ावा, झुंझुनू

श्री सुरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़

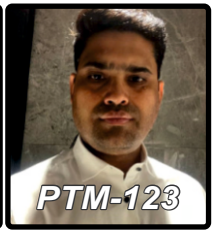

श्री मोहन पंवार, सागरपुर दिल्ली

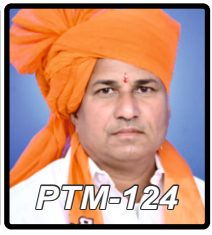

श्री रामावतार जांगिड, सरदारशहर, चूरू

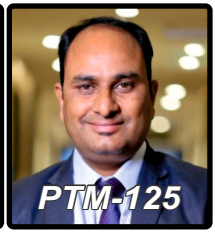

श्री राजील कुमार जांगिड, सूरत

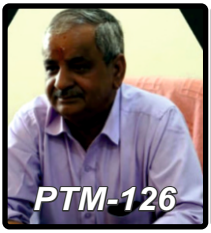

श्री सादीराम जांगिड, हनुमानगढ़,रा0

श्री मामराज मिस्त्री, सूरत

श्री सागरमल जांगिड, वडोदरा

श्री सुनील कुमार जांगिड, महाराष्ट्र

श्री महेश कुमार शर्मा, दिल्ली

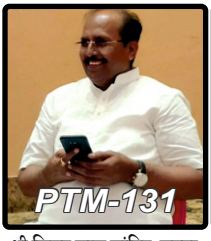

श्री किशन लाल जांगिड, जयपुर

श्री एकलिंग प्रसाद सुथार, सूरत

श्री राजेश जांगिड, हैदराबाद

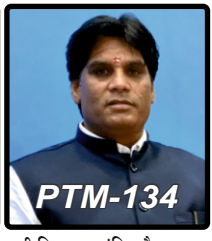

श्री सियाराम जांगिड, हैदराबाद

श्री रामवतार शर्मा, तिरूवल्लुर,तमिलनाडू

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री सतीश कुमार जांगिड,(किशनगढ़ बास) वलसाड

श्री शंकरलाल माकड़, हैदराबाद

श्री महेश चन्द शर्मा, साध नगर, दिल्ली

श्री राकेश जांगिड, सूरत

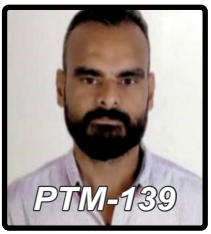

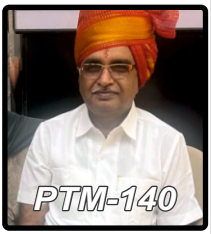

श्री देवकरण जांगिड, हैदराबाद

श्री सुभाष शर्मा, भरूच

श्री महेश शर्मा, बैंगलुरू

श्री चंद्र प्रकाश शर्मा, गांधीधाम,कच्छ

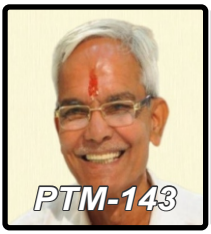

श्री सतवीर जांगिड, बैंगलुरू

श्री महेन्द्र सिंह जांगिड, धारूहेड़ा रेवाड़ी

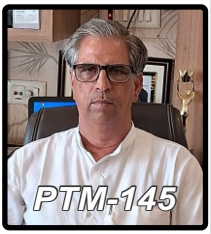

श्री पूरनमल जांगिड, सूरत

स्वर्गीय श्री नरेश शर्मा, भरूच

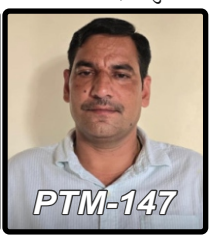

श्री बंशीधर जांगिड, भरूच

श्री मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर

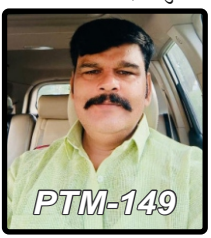

श्री गोपाल जांगिड, गांधी नगर

श्री राजेन्द्र कुमार डभाण, खेड़ा

श्री ओम प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

श्री अरूण कुमार डभाण, खेड़ा

श्री कैलाश चंद्र शर्मा, डभाण, खेड़ा

श्री मदन लाल सुथार, भरूच

श्री महेन्द्र जांगिड, भरूच

श्री कन्हैया लाल, (ओजटू वाले) बैंगलुरू

श्री शंकरलाल जांगिड, झुंझनूं

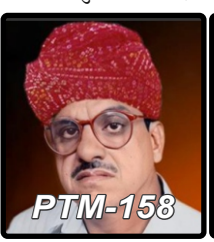

श्रीमती उषा बड़वा धर्मपत्नी श्री आनन्द बड़वा, कोटा राज0

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली
अंगिराऽसि जांगिड

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

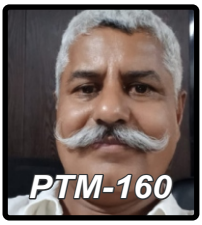

श्री देवेन्द्र शर्मा, उदयपुर, राजस्थान

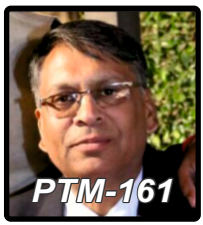

श्री नरोत्तम लाल जांगिड, फरीदाबाद, हरियाणा

श्री हजारी लाल शर्मा, जयपुर, राज0

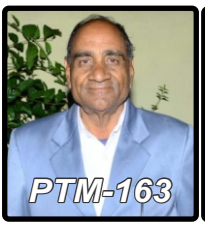

श्री भागीरथ मल जांगिड, जयपुर, राज0

श्री मदनलाल शर्मा, रायपुर छ0गढ़

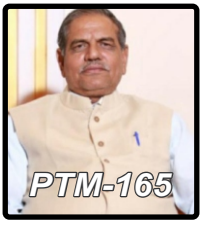

श्री पतराम शर्मा , गुरूग्राम, हरियाणा

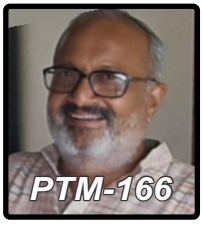

श्री बजरंग शर्मा , दुर्ग, छतीसगढ़

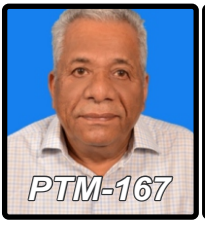

श्री विरदी चन्द शर्मा , रायपुर, छतीसगढ़

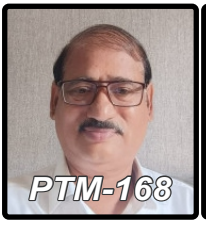

श्री ओमप्रकाश जांगिड, रायपुर, छतीसगढ़

श्री संतलाल शर्मा, बैंगलुरू, कर्नाटक

श्री जगन नाथ जांगिड, रेवाड़ी, हरियाणा

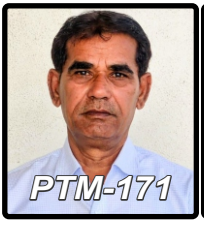

श्री राजकुमार चोयल,पोलो ग्राउंड, सीकर

श्री गोपालदास शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री विनोद कुमार शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर, राज0

श्री प्रहलाद राय जांगिड, दूजोद, सीकर, राज0

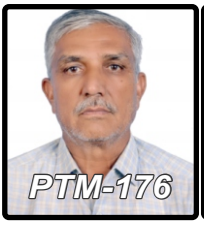

श्री भोलाराम शर्मा, दुर्ग, छतीसगढ़

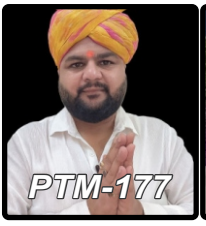

श्री रमेश शर्मा, रायपुर, छतीसगढ़

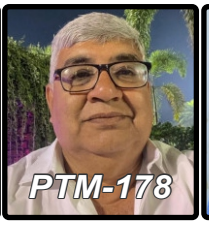

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री अनुराग नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री ओम प्रकाश जांगिड, वापी वलसाड, गुज0

श्री शिवपाल जांगिड, बेटमा, इन्दौर, मध्य प्रदेश

श्री उमेदराम जांगिड, वापी, वलसाड, गुजरात

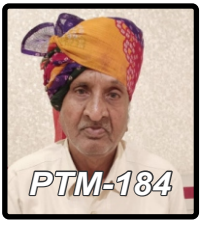

श्री द्वारका प्रसाद शर्मा, वापी, वलसाड, गुजरात

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

श्री अरुण कुमार, आया नगर,दिल्ली

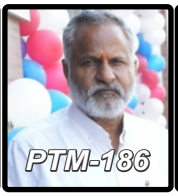

श्री सुरेश जांगिड, दक्षिणी दिल्ली

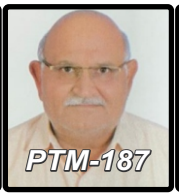

श्री श्रीराम जांगिड, बाजवा, वडोदरा, गुजरात

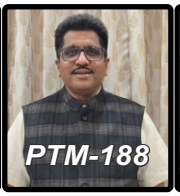

श्री जसाराम सुथार, पणजी, गॉवं गोवा

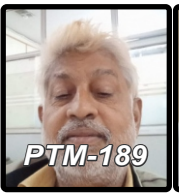

श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा, मेरठ,उत्तर प्रदेश

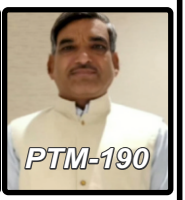

श्री रवि दत्त शर्मा, अहमदाबाद,गुजरात

वर चाहिए

1. Wanted a suitable match (PG Doctor preferably) for Jangid Brahmin girl **D.O.B-** 10.01.1997, Ht-5'4", **Permanent Residence:** Village - Kheri Saffa, PO - Kharak Bhura, Tehsil - Uchana Distt. - Jind (Haryana) – 126115, **Present address:** Noida (UP) **Educational Qualification:-**MD (2022-25) - Anaesthesiology & Critical care from SMS Medical College, Jaipur, Rajasthan, and MBBS (2015-20) from BPS Govt. Medical College, Khanpur Kalan (Sonipat), Haryana. **Job Details:** Senior Resident at Dr. Sampurnanand Medical College, Jodhpur (Raj) since February 2026. **Family Details:** Father's profession: Senior Manager - Quality, Chambal Fertilisers and Chemicals Ltd., Delhi Mother's profession: Home maker **Gotra Self**-Bhere, **Mother's Gotra:** Tyongrah, **Dadi's Gotra:** Jale, **Nani's Gotra:** Khandelwall **Contact Details:** Father: K.K. Jangra- 9411876458

2. Wanted a suitable match for healthy & pleasant personality J.B. girl, D.O.B.- 06/03/1996, Birth Time: 01:15 PM, Ht.- 5'1", Birth Place: Bikaner, residence in Jodhpur Rajasthan, Education- B.Tech(Electronics & Communication) **Shasan: Motiyar, Kalunia, Mandan, Jadwal**, **Contact-** Mr. Naresh Motiyar,(Retd. XEn RRVPNL)- 9214406908

वधु चाहिए

1. Wanted a suitable match for Jangid Brahmin boy **D.O.B-** 11.09.1999, Ht-6'0", **Permanent Residence:** Village - Kheri Saffa, PO - Kharak Bhura, Tehsil - Uchana Distt. - Jind (Haryana) – 126115, **Present address:** Noida (UP). **Educational Qualification:-**M Tech (2022-24) - Production & Industrial Engineering from National Institute of Technology, Kurukshetra (Gold Medalist) B Tech (2017-21) - Mechanical Engineering from JSS Academy of Technical Education, Noida, Uttar Pradesh **Job Details:**Profession: Senior Manufacturing Engineer in John Deere India Pvt. Ltd, Pune (Mah), **Family Details:** Father's profession: Senior Manager - Quality, Chambal Fertilisers and Chemicals Ltd., Delhi Mother's profession: Home maker **Gotra Self**-Bhere, **Mother's Gotra:** Tyongrah, **Dadi's Gotra:** Jale, **Nani's Gotra:** Khandelwall **Contact Details:** Father: K.K. Jangra- 9411876458

2. जांगिड ब्राह्मण परिवार में सुंदर सुशील गृह कार्य में दक्ष मध्यम परिवार से विवाह के लिए कन्या चाहिए। सूरत (गुजरात) में परिवार सेटल्ड है , लड़का (पुत्र) वर्तमान में इनफ़ोसिस पुणे में सॉफ्टवेर इन्जिनियेर है, उम्र- 27 वर्ष, जन्म -09.10.1997. दहेज़ बंधन नहीं। रुचिकर परिवार अन्य जानकारी और गौत्र के लिए कृपया संपर्क करें – आर. के. शर्मा (सीनियर इनकम टैक्स इंस्पेक्टर, सूरत) फ़ोन - 7778061060

3. Wanted a suitable match for Jangid Brahmin Boy in Ludhiana D.O.B: 09/08/1994, Height: 5'8", Permanent Residence: Ludhiana, Qualification: B.Sc. (IT), Job details: working as Personal Assistant at Punjab Agricultural University, Ludhiana (Government Employee), Salary: 8 LPA, Father: own business (Hosiery), Mother: Homemaker, **Gotra Self: Gautam, M-Jatukarna,** Contact Details: Father: Davinder Kumar 9216507196, 8146167685

श्रद्धांजलि सुमन

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि महासभा व हरदा जिले के सामाजिक कार्यकर्ता महेशचंद्र और खेमराज धामू की पूज्य माताजी **श्रीमती कमला देवी** धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री शिवराम धामू, ग्राम बिल्लौद, जिला हरदा का, स्वर्गवास दिनांक 3 अप्रैल, 2026 को हो गया है।

स्वर्गीय श्रीमती कमला देवी एक सरल स्वभाव, मिलनसार, हंसमुख एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व की धनी थी। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई है। अंचल के समाज बंधुओ ने पगड़ी रस्म, दिनांक 14 अप्रैल, 2026 को दिवंगत पुण्य आत्मा को मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

उनकी पुण्य स्मृति में परिवार की ओर से नेमावर, उज्जैन, देवास और इंदौर के प्रत्येक विश्वकर्मा मंदिर में 1100 ₹ की राशी स्मृति स्वरूप भेंट किए गये एवं अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली को भी 1100 ₹ भेंट किए गए। इसके अलावा निर्माणाधीन जांगिड समाज के छात्रावास हरदा को भी 1100 ₹ भेंट किए गए।

अखिल भारतीय जांगिड महासभा दिल्ली तथा समस्त कार्यकारिणी, परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान दे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

॥ ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति॥

उपप्रधान महासभा रमेश चंद्र बुडल उज्जैन एवं
नेमीचंद बरड़वा उज्जैन

श्रद्धांजलि सुमन

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि स्व. हरफूल सिंह जी, शामली, के पुत्र श्री ओमपाल जी का आकस्मिक स्वर्गवास दिनांक 23 अप्रैल, 2026 को हो गया है। जिनकी श्रद्धांजलि सभा 04 मई , 2026 को सूर्य प्लेस माजरा रोड, शामली, उत्तर प्रदेश में रखी गई, जहां समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने दिवंगत पुण्य आत्मा को मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

अखिल भारतीय जांगिड महासभा दिल्ली तथा समस्त कार्यकारिणी, परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान दे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

॥ ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति॥

चन्द्रपाल भारद्वाज ,
पूर्व महामंत्री महासभा

मन्दसौर में आयोजित प्रदेशसभा कार्यकारिणी की त्रैमासिक मीटिंग एवं जिला सभा कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह की चित्रावली

BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS

Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

SHARMA
Group of companies

25 YEARS OF DRIVEN EXCELLENCE
SHARMA HYUNDAI
SINCE 1998

LATE SHREE
KANHAIYALAL
SHARMA
(CHOYAL)
FOUNDER

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road
Call : 9099978327

Satellite
Call : 9099978334

Parimal Garden
Call : 9099978328

Naroda
Call : 9099938777

TOYOTA

Authorised Toyota Dealer : NARMADA TOYOTA
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MG

MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31

Posted at:L.P.C. DELHI
R.M.S., Delhi-06

Total Page-64

Registered With The Registrar of
News Papers For INDIA,
Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2024-26
of Post without prepayment of postage

Mahindra Rise.

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

भागीरथ मोटर्स (इं) प्रा.लि.

पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

Bhagirth & Brothers

Bus & Truck Body Manufacture Since 1960

Organization :

Audi Automobiles, Pithampur
Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore

Adm. Office
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax" 0731-2538841

Works:
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 May 2026
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

प्रेषक
अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006

Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)